य की उथल-पुथल और पति के प्रति
क मीमांसा करने के विचार से ही
'उपवन' उपन्यास की नायिका नीरजा
ण किया है । नीरू को प्रस्तुत करते
नारी की समस्त दुर्बलताओं को यथा
ी पूर्ण चेष्टा की है और वह उसमें
भी हुये हैं ।

ू का पति आदित्य और उसके मौसाजी
सरला दोनों बालकाल में साथ ही पढ़े,
र उनमें प्रेम के भाव भी अंकुरित हुये
का मार्ग ही बदल गया था, जब आदित्य
ीरू के साथ हो गया । नीरू की बिमारी
ी अपने व्यापार को चालू रखने और
देख भाल करने के हेतु आदित्य ने
ा से सरला को अपने घर बुला लिया था।
को अपने घर में देख और अपनी
के कारण नीरू का हृदय चंचल हो उठा
पने पति के चरित्र पर सन्देह करती हुई
ुद्ध हो गई; उसने अपने पति को भी
लिया । आदित्य के हृदय में सरला के
म की चिनगारी दबी पड़ी थी वह इस
उभर आई और उसने सरला को
ा निश्चय कर लिया ।

का प्राणान्त व्यथित अवस्था में ही हुआ ।
मानसिक उद्वेगों को लेकर रवीन्द्र बाबू
उपन्यास की रचना की है ।

उपवन

(उपन्यास)

लेखक :
रवीन्द्रनाथ टैगोर

प्रभात प्रकाशन

प्रथम बार : १९५५
मूल्य : दो रुपया

अनुवादक :-
विपिन बिहारी

प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन, मथुरा.
मुद्रक : न्यू रायल प्रेस, मथुरा.

उपवन
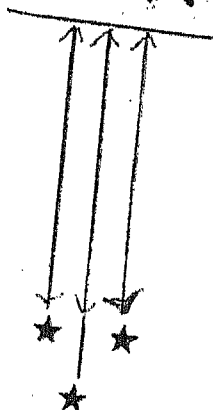
बहुत दिनों से बीमार रहने के कारण नीरजा दुर्बल हो गई है। उसके शरीर का रंग सफेद होगया है और कान्ति का नाम नहीं रहा है। मांस सूख गया है इस कारण शरीर के अंगों की हड्डियां निकल आयी हैं। इस कारण शरीर के आभूषण ढीले पड़ गये हैं। कमजोरी के कारण उसकी नसें चमकने लगी हैं और उसके नेत्रों के आसपास कालिमा छागयी है जिसके कारण उसकी दुर्बलता का पूर्ण आभास होता है। वह अपनी रोग शैय्या पर पांवों को श्वेत रंग की रेशमी चादर से ढाके पीठ के पीछे कई तकियों का सहारा लिये अधलेटी अवस्था में बैठी खिड़की के बाहर अपने उपवन को देख रही है।

उसका कमरा साफ सुथरा है। उसकी रोग शैय्या के पास दवा दारू रखने के लिये एक कोने में तिपायी है। आगन्तुकों को बैठने के लिये दो बैंत

की कुर्सियां हैं और कपड़े टांगने के लिये एक कोने में रस्सी की अरगनी बंधी हुयी है। सामने रामकृष्ण परमहंस की एक बड़ी तस्वीर टंगी हुयी है और एक ओर पीतल के फूलदान में रजनी गन्धा पुष्पों का गुच्छा रक्खा है जिसके कारण उसकी सुगन्ध कमरे को मन्द २ सुवासित कर रही है।

खुली हुई खिड़की से उपवन का दृश्य साफ दीख रहा है। नीरू अपने परिश्रम से बनाए हुए आरकिड के घर को देख रही है जिसके चारों ओर उसने अपराजिता लता लगाई थी। उसने घर को चारों तरफ से अच्छी तरह घेर लिया है और अब उसमें पुष्प खिलने के कारण वह और अधिक सुन्दर प्रतीत हो रही है। उपवन की झील जिसके पानी को पम्प द्वारा हर बयारियों में पहुंचाया जाता है स्पष्ट दिखाई दे रही है। इस समय भी पम्प चल रहा है और कलकल शब्द करता हुआ जल उपवन की नालियों से बहता हुआ क्यारियों को सींच रहा है। वृक्षों पर बौर लग चुके हैं और अमराईयों की मीठी सुगन्ध चारों ओर फैल रही है जिसके कारण कोयल प्रसन्नता में पागल हो नवीन उत्साह के साथ रह रह कर कूक उठती है।

यद्यपि नीरू उठने, चलने, फिरने की सामर्थ नहीं रखती मगर अपने उपवन की देख रेख इसी खिड़की से करती रहती है। यही उसका व्यसन है और यही उसका मनोरंजन है। इसी समय ड्योढ़ी पर बैठे हुये दरबान ने घंटा बजाकर मालियों को छुट्टी की याद दिलायी। यह मालियों की छुट्टी का समय है। दोपहर हो चुका है और अब वह तीन बजे तक विश्राम कर सकते हैं। घंटे की आवाज ने नीरू को भी चेता दिया और वह छुट्टी का समय सोच उदास हो गयी क्योंकि काम बन्द होते ही उपवन में सन्नाटा छाने लगा। उसने एक गहरी सांस ली कि उसकी आया ने उसके विश्राम का समय जान कर कमरे का दरवाजा बन्द करना चाहा मगर नीरू ने उसे ऐसा करने से मना कर दिया और स्वयम् पेड़ों के नीचे धूप छाया की आंख मिचौली देखती रही।

नीरजा के पति आदित्य ने फूलों के व्यापार में काफी ख्याति प्राप्ति की है। जबसे नीरजा और आदित्य का विवाह हुआ तबही से दोनों ने प्राणपण से इस उपवन को संवारा है। उन दोनों के दाम्पत्य जीवन का क्रीड़ा केन्द्र यही उपवन रहा है। उनके सम्मलित प्रयास और परिश्रम से इस उपवन के फूल खिले हैं और नित्य नई कलियां महकी हैं। फुलवारी के पुष्प जब २ खिले हैं तब २ उन्हें नई चेतना मिली है। विभिन्न ऋतुओं में विभिन्न प्रकार के पुष्पों के खिलने पर वह आनन्द से भर जाते और अपनी २ पसन्द के पुष्पों को देखकर उनकी बड़ाई करते न थकते। उपवन ही इस दम्पति को नवजीवन सर्वदा प्रदान करता है।

अतीत की स्मृतियां नीरजा के हृदय-पटल पर अंकित होकर उसको विस्मृति की याद दिला रही हैं। उसे आज भी अच्छी तरह याद है कि बगीचे के पश्चिमी भाग में जहां आज भी एक नीम का पेड़ लहलहा रहा है वह दूसरा नीम का पेड़ सूखकर गिर गया था। पेड़ काट डाला गया मगर उसके तने को मेज की तरह काट कर समतल बना लिया गया था। उसी मेज पर वह अपने पति आदित्य के साथ नित्य प्रति प्रातःकाल चाय पीती और अपना नाशता करती। उषा की किरणें जब लहलहाते हुये नीम की पत्तियों से छनकर उनके ऊपर आने लगतीं तो वह दोनों बगीचे में काम करने के लिये साथ २ जाते। धूप से बचने के लिये नीरजा अपनी रंग बिरंगी छतरी का व्यवहार करती और आदित्य टोप पहन लेता। फूल तोड़ कर इकट्ठा करने के लिये वह दोनों कमर पर टोकरियां लटका लेते और लताओं की कांट छांट के लिये हाथों में कैंची ले लेते। यह उनका नित्यक्रम था और अगर इसी बीच कोई महमान आ जाता तो वह उसे भी अपने साथ क्यारियों में घुमाते हुए काम करते रहते और उससे बातें भी करते जाते।

उपवन इतना सुन्दर था ही कि आने वाले जब उसे देखते तो दंग रह जाते। उनकी फूलों से भरी डालियां देख कर वह हैरान रह जाते। जिन्हें

फूलों की पहचान होती वह गैंदे को सूरजमुखी कह कर उनकी प्रशंसा शुरू कर देते तब नीरजा को ही उनकी भूल ठीक करके उन्हें फूलों का परिचय देना होता। जो समझदार होते वह उनके फूलों, उनकी महनत और अक्ल मन्दी की तारीफ करते। लालची अपना मतलब साधते और पुष्पों की तारीफों के पुल बांधकर नीरजा को प्रसन्न करते। लाचार होकर नीरू उन्हें पुष्पों के गुलदस्ते भेंट करती और अगर कोई पौधे मांगता तो वह पौधे देने में भी न चूकती। थोड़ी सी प्रसंशा पाकर ही नीरू प्रसन्न हो जाती। शायद यही कारण था कि आये दिन उनके घर मित्रों का आवागमन लगा ही रहता। वह स्वयम् उन्हें अपना उपवन घुमाती, उनके विदा होते समय उपवन के फल, फूल भेंट करती रहती। उनके उपवन के कैथ और डाब को लोग बहुत पसन्द करते। उपवन के फूलों और फलों की प्रशंसा को सुनकर नीरजा अपना और अपने आदित्य के परिश्रम को धन्य मानती।

गुजरे हुये दिनों की याद उसके हृदय में आज व्यथा बन गयी। अतीत की याद नीरजा को रह २ कर सताने लगी। वह अपने उन दिनों की याद करने लगी जब वह प्रातःचाय पीने के लिये अपने पति के साथ पेड़ के तने से बनायी हुयी मेज पर चाय पीने बैठती और सुबह की सुवासित वायु अपनी मीठी २ सुगंध लिये उसके चित्त को प्रफुल्लित करती। विभिन्न ऋतुओं में प्रगट होने वाले विभिन्न तरह के पुष्प अपनी विभिन्न सौन्दर्य छटाओं और महक से उन दोनों का चित्त हर लेते थे। ऐसा सुनहरा संसार उसके जीवन से एक दम उड़ गया और वह बार २ इसी बात को सोचती कि आखिर उसके इस सुनहरे संसार को हरण करने वाला कौन हो सकता है? इसके लिए वह किसे दोषी ठहराये? स्वयम् को, विधाता को या संसार चक्र को? ऐसी कौन सी दैवी शक्ति थी जिसके कारण उसका वह सुनहरा संसार उसके जीवन क्षेत्र से विलुप्त होगा?

जब से नीरजा का विवाह हुआ तब से ही उसका जीवन पूर्ण आनन्द से व्यतीत हुआ। उसके सुख शान्तिमय जीवन को देख कर उसके साथ की

सखी सहेलियाँ उससे ईर्षा करने लगी थीं जिसका केवल एक ही कारण था उनका सुखमय दाम्पत्य जीवन ! आदित्य के सुखमय जीवन को देख कर उसके दोस्त भी उसे भाग्यशाली कहते और जब कभी दाम्पत्य जीवन की बातें चलतीं तो सर्वदा उसे 'भाग्यशाली' कह कर सम्बोधित करने से न चूकते चाहे जो कुछ भी रहा हो मगर यह सत्य है कि उन दोनों के साथी उनके सुखमय जीवन को सराहते थे । असल बात यह भी ठीक ही थी कि उनका जीवन सत्य ही सुखमय प्रेममय था ।

आदित्य के पास एक कुतिया थी जिसे वह 'डाली' के नाम से सम्बोधित किया करता था । मालिक का प्रेम कुतिया में कूट कूट कर भरा था वह हर समय आदित्य के आगे पीछे ही घूमती रहती थी । जब से नीरजा ब्याह होकर आदित्य के घर आयी तब हां से कुतिया मालिक के बजाय नीरजा से अधिक प्रेम करने लगी इसका एक मात्र कारण यही था कि आदित्य को तो बाहर हाट का काम करने घर से बाहर जाना पड़ता मगर नीरू तो घर ही में रहती इस कारण डाली नीरजा से अधिक प्रेम करने लगी थी और नीरू को भी डाली का हर समय ख्याल रहता । डाली कुतिया ने ही उसके जीवन में वह आग लगाई थी जिसके कारण नीरू के दिल में एक ऐसी आग लगी जो आज भी एक टीस बनकर उसके मन को बेधती रहती है। स्वामिभक्ति कुत्तों की भांति वह घर की पूरी चौकसी रखती और आने जाने वालों को देख कर भौंकने लगती । कभी उनका कोई इष्ट मित्र मोटर या घोड़ा गाड़ी में बैठ कर आता तो वह शीघ्र ही भौंकने लगती और उस समय तक भौंकती रहती जब तक नीरू उसे उंगली दिखाकर शान्त रहने का इशारा न कर देती । जब कभी आदित्य और नीरजा घर से बाहर चले जाते तो वह चौकीदार की भांति बैठी रहती या दरवाजे के आस पास धीमी चाल से चहल कदमी करके पहरा देती रहती ।

विधाता की गति कुछ ऐसी ही थी कि यकायक एक दिन डाली बीमार हो गयी और फिर अचानक अपनी जीवन लीला समाप्त करके मृत्यु

की गोद में चली गयी। मरते समय उसका सिर नीरू की गोदी में ही डाली का सिर था। अतः इस कारण लाख भुलाने पर भी नीरजा डाली की मृत्यु के उस दृश्य को न भूल सकी। बचपन से ही नीरजा हठी थी अतःवह अपने जीवन क्षेत्र पर किसी भी भांति का हस्तक्षेप बर्दाश्त करने को तयार न थी और जब उसे डाली की मौत से यह भास होने लगा कि विधाता की गति को कोई नहीं जानता और उसकी गति में किसी का कोई चारा नहीं हो सकता। इसी विचार को लेकर वह सशंकित रहने लगी और हर समय हृदय में सोचने लगी कि इस नश्वर संसार के क्षणिक सुखों पर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता है। मृत्यु का भय पहली बार उसके हृदय में समाया और उसके हृदय पर अमिट छाप छोड़ गया था।

यद्यपि विवाह हुये बहुत दिन होगये थे मगर नीरजा के सन्तान न हो सकी इस कारण कभी २ वह सोचने लगती कि शायद सन्तान का सुख उसके भाग्य में है ही नहीं। सन्तान पाने की आशा मर चुकी थी। उसका मन गणेश की ओर आकर्षित हुआ। गणेश आदित्य के घर में आश्रित के रूप में रहता था। वात्सल्य प्रेम स्त्री में स्वाभाविक ही होता है अतः वह भी अपने प्राकृतिक प्रेम को रोक न सकी। यकायक वह गर्भवती हुयी। गर्भाधान के साथ ही उसका मन चंचल हो गया। वह अपने पेट से उत्पन्न होने वाली सन्तान के विषय में सोचने लगी। मातृत्व की भावना से उसका हृदय नाचने लगा और वह अपने फालतू समय में अब नव आगन्तुक के लिये कभी कपड़े बनाती, कभी खिलौने तयार करती और कभी कपड़ों पर बेल बूटे काढ़ती। बड़ी बेकली से शिशु के आगमन की प्रतीक्षा करने लगी।

आखिर प्रसव काल आया। दर्द बढ़े और आदित्य ने धाय को बुला लिया। वह बेहद घबरा गया! डाक्टर, नर्स आदि जब उसकी बेतुकी बातों के जवाब देते २ थक गये तो उन्होंने उसे डाटकर दूर रहने को कहा। बच्चा गर्भ में ही मर गया, लाचार होकर डाक्टर ने काट २ कर बच्चे को

निकाल लिया और बड़ी तत्परता से नीरजा के प्राण बचाये जैसे तैसे नीरजा तो बच गयी मगर उसका दिल बैठ गया। बच्चे की मृत्यु का सदमा उसके दिल पर बैठ गया और वह भूल न सकी और रोग ग्रस्त होकर उसने खाट पकड़ ली। उसके दिल की कली मुरझा गयी थी इस कारण वह पनप न सकी और दिन प्रति दिन रोग से गिरती ही गयी।

तब से अब तक लगातार वह रोग शैय्या पर ही रही। इस कमरे में लेटी २ वह खिड़की द्वारा ही अपने उपवन को देखती रहती और उसमें से आने वाली सुवासित मन्द वायु को सूंघ कर ही अपनी तबीयत हरी कर लेती। उसको उपवन की छटा देखने ही में चैन मिलता और वह अपना नाम भूलने की चेष्टा करती।

नीरजा को रोग ने भावुक अधीर कर दिया था। छोटी २ बातें उसके मन के भार को अधिक बढ़ा देतीं और वह उनको सोचकर बेहद परेशान हो जाती। अपने सुखी दाम्पत्य जीवन की याद करके वह परेशान हो उठती और वह आदित्य को देखकर हमेशा अपने अधिकारों की याद करने लगती और उसको सबसे अधिक दुःख तो उस समय हुआ जब आदित्य अपने उपवन के काम-काज में हाथ बटाने के लिये अपने रिश्ते में लगने वाली बहन सरला को अपने घर ले आया। सरला आदित्य का हाथ बटाने लगी। खुली हुई खिड़की से जब सरला को ताड़ की बूटेदार छत्री लगाये मालियों से काम लेती हुई नीरू देखती तो उसके हृदय पर साँप सा लोट जाता और वह अपनी कमजोरी की हालत में भी वह परेशान हो उठती और सोचने लगती कि उसके सुनहरे जीवन में इस तरह सरला क्यों आ बैठी ? क्षण २ वह यही कल्पना करती कि कहीं सरला आदित्य पर कहीं अधिकार न जमा ले।

नीरू कभी यह भी सोचने लगती कि जब वह तन्दुरुस्त थी तब कैसा अच्छा लगता था जब वह स्वयम् सरला को न्यौता देकर बुलाती थी।

स्वयम् उसके साथ नये नये पौधे लगाती, झील में नहाते, भाँति २ के फल खाये जाते, संगीत का कार्य-क्रम चलता और तब मालियों को भी दही, चिड़वा, बंगाली मिठाई आदि खाने को देते। इस तरह के शोर गुल में जब सारा दिन बीत जाता तो सन्ध्या को कहीं जाकर सारा काम समाप्त होता था। उन दिनों नीरू सरला से प्रेम करती मगर अब अपने को इस तरह रोग ग्रस्त देखकर वह अकसर सोचने लगती कि कहीं सरला उसके आदित्य पर अधिकार न करले, इसी कारण वह सरला से द्वेष करने लगी थी।

स्त्री का स्वभाव ही शक्की होता है और विशेष तौर पर अपने पति के प्रति। वही हाल नीरू का हुआ। जब से वह बीमार हुई तब ही से वह न जाने क्यों मन ही मन यही सोचने लगी कि कहीं आदित्य उसे छोड़कर किसी दूसरी स्त्री को न अपनाले। अब सरला के आ जाने से उसकी चिन्तायें और अधिक बढ़ गयीं थीं। उसे शक होने लगा था कि कहीं सरला ही उसका सर्वस्व न छीन ले। मगर वह आदित्य के स्वभाव को जानती भी थी और अपने भावों द्वारा उस पर इस शङ्का को प्रकट नहीं होने देना चाहती थी। उसे मन ही मन विश्वास तो न था कि आदित्य उसे रोगणी अवस्था में त्याग कर किसी दूसरी स्त्री का सहारा लेगा मगर शक उसका साथ नहीं छोड़ता था। यही उसके जीवन की कटु आहट हो चली थी। लज्जा भी यही थी और दीनता भी यही थी। यह एक राज था।

दोपहर की छुट्टी हो जाने के कारण माली घर लौट चुके थे। उपवन का वातावरण शान्त था और वह उसी शान्त वातावरण में शून्य दृष्टि से निहारती हुई अपने हृदय के राज पर सोचती रही।

२

"रोशनी" नीरजा ने आया का नाम लेकर आवाज दी।

दुर्बल शरीर वाली, अधपके बालों वाली रोशनी नाम की आया कमरे के अन्दर आयी। वह एक लहंगा पहने थी, सिर पर ओढ़नी पड़ी थी और हाथों में पीतल के मोटे कड़े पड़े हुये थे। शरीर बहुत दुर्बल होने के कारण उसकी हड्डियां नजर आने लगी थीं मगर उसके चेहरे पर के भाव कठोर थे। उसके दिल में वेदना थी जिसका एकमात्र कारण था नीरू की बीमारी। इसी रोशनी ने नीरू को बचपन ही से पाल पोषकर बड़ा किया था और विवाह होने पर वह नीरू के साथ ही आदित्य के यहाँ चली आई थी और सदा उसकी देखरेख करती रही थी। इन्हीं तमाम कारणों से उसकी ममता सिमिट कर नीरू पर केन्द्रित हो गई थी और वह परेशान थी। यद्यपि रोग को दूर करने का साधन उसके पास नहीं था मगर फिर भी वह यही चाहती थी कि जिस तरह भी हो उसकी नीरू शीघ्र ही स्वस्थ्य हो जाये। मगर जब बहुत दिनों तक नीरू ठीक न हो सकती तो वह खीज उठी थी। वह आदित्य, डाक्टर, नर्स और यहाँ तक स्वयम् अपने ऊपर भी क्रुद्ध हो उठती थी।

रोशनी ने कमरे में आकर नीरजा के माथे पर प्रेम से हाथ फेरते हुए पूछा—"क्या चाहिए बेटी रानो।"

"कुछ नहीं। तुम बैठ जाओ जरा बातें करने को जी चाहता है" नीरू ने उत्तर दिया।

रोशनी नीरू के पास बैठ गई।

"आज तो ऐसा ज्ञात होता है कि सब लोग बहुत तड़के ही उठे हैं ?" नीरजा ने उत्सुकतावश पूछा ।

रोशनी ने कुछ उत्तर नहीं दिया वह शान्त बैठी रही मगर उसकी भाव भंगिमा से यह स्पष्ट हो गया कि इस प्रश्न करने का अभिप्राय क्या है ? वह यह भी जानती थी कि नीरू कमरे में लेटी घर की सारी आहट लेती रहती है ।

आया का उत्तर न पाकर नीरजा ने फिर कहा—"मैंने द्वार खुलने की आहट ही से पता लगा लिया था कि अब बहुत तड़के ही वह सरला को लेकर बगीचे के काम को देखने गये होंगे ।"

नीरू और आया दोनों जानती थीं कि जब से घर में आयी है और आदित्य का हाथ बंटाने लगी है तब ही से सवेरे उठ कर उपवन में जाते हैं और वहां के काम काज का प्रोग्राम बनाते हैं । नित्य की इस परिपाटी के विषय में इस बेतुके प्रश्न को सुन कर भी आया कुछ उत्तर न दे सकी मगर उसका आशय और नीरजा के मन की व्यथा को सहज ही समझ गयी । नीरजा ने आया के उत्तर की परवाह न की और न उसने उसके चेहरे के भावों को पढ़ने की चेष्टा ही की । वह तो खिड़की के बाहर शून्य की ओर ताकती रहीं और स्वयम् बड़बड़ाती रहीं "अभी कुछ दिन पहले ही वह मुझे रोज सवेरे ही जगा लेते थे और अपने साथ बाग में काम करने ले जाते थे कितने सुन्दर दिन थे ।" इतना कह कर उसने एक ठंडी आह ली ।

कितनी वेदना थी उसकी आह में ?

आया उस कल्पना को करके सिहर उठी । ममत्व जाग पड़ा और उसने नीरजा को ढाढ़स बंधाने के लिये कहा "बिटिया रानी ! वही दिन शीघ्र लौटेंगे । तुम फिर उनके साथ बगीचे में काम करने जाओगी । इस

समय अगर वह सरला को बुलाकर काम की देख रेख करने को न कहते तो हो सकता था कि शीघ्र ही बगीचा सूख ही जाता। सरला बहुत महनत करती है और बाग का ख्याल रखती है।"

रोशनी ने क्या कहा ? इस बात को नीरजा ने सुनने की चेष्टा ही न की वह तो अपनी ही धुन में मस्त रही और कहती रही "रोशनी ! आज सुबह भी मैंने घोड़ा गाड़ी की आवाज सुनी थी। शायद आज भी फूल हमेशा की भांति बाजार गये हैं ? मैं भी तो नित्य फूल बाजार में भेजा करती थी मगर अब यह काम किस की देख रेख में होता है ?"

आया ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया क्योंकि वह जानती थी कि सरला का नाम लेने से नीरू की उद्विग्नता और अधिक बढ़ जायेगी और रोगावस्था में उद्विग्नता बढ़ने देना श्रेय कर नहीं था।

मगर फिर भी नीरजा ने अपना बड़बड़ाना बन्द नहीं किया। वह कहती ही रही—"इतना तो मैं निश्चय रूप से कह सकती हूँ कि मेरे सामने मालियों की हिम्मत न थी कि वह माल की चोरी करते !"

मन ही मन कटुता का अनुभव करके रोशनी शान्त रही। कुछ सोच कर उसने कहा—"बिटिया ! अब समय बदल गया। तुम चोरी की कहती हो ? आज कल तो वह दोनों हाथों से लूट कर रहे हैं।"

रोशनी की बात सुनते ही नीरू चौंकी। तड़प कर बोली "अच्छा।"

अपने शब्दों को स्पष्ट करने के लिये रोशनी ने कहा—"बाजार में बिकने के लिये अब कितने से फूल जा पाते हैं ? जैसे जमाई बाबू बाजार चले जाते हैं वैसे ही बगिया के पीछे की ओर माली भी चोरी किये हुये फूल टोकरियों में सजा कर रख लेते हैं। लोग वहीं जाकर उनसे खरीद कर ले जाते हैं। उनका चोर बाजार खासा लगने लगा है जहां हर तरह के फूल मिलते हैं।"

नीरजा सुनकर दुःखी हुयी और बोली—"क्यों री ? यह सब होता रहता है और कोई देखता तक नहीं।"

"इतनी चिन्ता किसे है जो यह सब देखता भालता फिरे"

"अगर यही बात है तो तूने उन्हें (आदित्य) क्यों नहीं बताई। तुझे तो कहना चाहिये था ?"

"तुम भी खूब कहती हो बिटिया रानी। मैं उनसे शिकायत करके अपनी रही सही इज्जत और मिट्टी में मिला डालूं। मैं अकेली और वह सब इतने सारे ? मेरा कहना वह कैसे सच मानेंगे ? तुम कहो न ? तुम मालकिन हो और तुम्हारी बात की और बात है।" रोशनी ने उत्तर दिया।

आया के इस उत्तर को सुन कर नीरजा खीज उठी। उसके हृदय में एक प्रकार टीस हुयी मगर दिल पर काबू करके स्वयम् वैराग्य भाव से बोली—"अरी मुझे क्या पड़ी : तू भी क्यों बुरी बनती है। होने दे जो कुछ भी हो रहा है। अपने आप आंख खुल जायेंगी जब सब कुछ साफ हो जायेगा ! वह दिन भी दूर अब नहीं है जब इस तरह बनी बनाई गृहस्थी उजड़ जाएगी। तब ही उन्हें मेरी कदर मालूम होगी। तब वह समझ सकेंगे कि अपने पराये में क्या फर्क होता है। अभी उन्हें कुछ भी कहना अपना निरादर कराना ही होगा।"

तब रोशनी ने अपनत्व जताते हुये कहा—"कुछ भी कहो बिटिया रानी। यह जरूर कहूँगी कि यह हरिया माली बिलकुल काम का आदमी नहीं ? मुझे उससे नफरत है।"

सच बात यह है कि हरिया काम चोर अवश्य है मगर रोशनी को उससे इसलिये ही केवल नफरत नहीं है ? वह काम से जी चुराता है सो ठीक है मगर आया को तो नफरत इस वास्ते है कि हरिया बेतरह नीरजा के मुंह लग गया है और उसकी अपनी नीरू हरिया पर विशेष

दयावान रहती है। असल कारण तो यही है आया का हरिया पर नाराजगी का इसी कारण उसने नीरजा से उसकी शिकायत कर ही दी।

इस तरह हरिया की शिकायत करने का कोई भी असर नीरू पर नहीं पड़ा। वह शान्त स्वर में आया से कहने लगी—"रोशनी! मालियों को क्या दोष दूँ? दोष तो उनका है जो उनसे काम लेते हैं। उनकी उम्र बीत गई है बगीचों में काम करते २ इस कारण वह ऊट-पटांग बातें बर्दाश्त नहीं कर सकते। तुम्हारी जीजी सरला को पुस्तकों का ज्ञान है इस कारण वह पुस्तकों के आधार पर ही इस फुलवारी का काम चलाना चाहती हैं। हरिया जरा तेज मिजाज है इस कारण उनकी उल्टी सीधी बातों पर अड़ जाता है और सारी बातों की शिकायतें मेरे पास आकर करता है। मैंने ही उसे कह रखा है कि वह सरला की ऊटपटांग बातों पर ध्यान न दे और सुनी अनसुनी कर जाया करे। उसे तो अपने काम और मतलब भर से ही वास्ता रखना चाहिये।"

"पिछले ही दिन की बात तो है जब जमाई बाबू हरिया को नौकरी से अलग कर रहे थे।" रोशनी ने अपनी बात साधने के लिये कहा।

नीरजा चौंक कर बोली—"क्यों? क्या कसूर किया था उसने?"

रोशनी ने विस्तार के साथ कहा—"बात ठीक ही थी। हरिया आराम से बैठा २ बीड़ी पी रहा था और गाय उसकी आँखों के सामने ही उपवन के हरे भरे पौधों को खा रही थी। जमाई बाबू से न रहा गया तो उन्होंने हरिया से कहा कि गाय को निकाल बाहर कर वरना फुलवारी उजाड़ डालेगी। तब हरिया तड़क कर बोला कि मैं गाय को क्यों निकालूँ? यह गाय कोई साधारण गाय नहीं! इतनी मरखनी है कि अगर मैंने इसके साथ जरा भी निकालने की हिम्मत की तो फौरन मुझे ही मार डालेगी। जान मुझे प्यारी है। आखिर वह हरिया की यह बात कैसे बरदाश्त करते? उन्हें

गुस्सा आ गया मगर तुम्हारा ही ख्याल करके चुप रहे क्योंकि वह भी जानते हैं कि हरिया पर तुम्हारी विशेष कृपा है।"

यह बात सुनते ही नीरजा हंस पड़ी। स्वामी को अब भी उसका इतना ख्याल है कि वह उसके मुंह लगे आदमी तक की बेहूदगी बर्दाश्त कर लेते हैं। यह सोचकर गर्व से उसकी छाती तन गई मगर पति के अपमान की बात का विचार करके उसने हरिया की ओर से सफाई देना ठीक समझा इसलिये मुस्करा कर बोली—"हरिया कम्बख्त है पक्का उजड्ड। उसे बात कहने की बिलकुल ही अक्ल नहीं है। पच्छांह का है इसी कारण उसकी बोली भी खड़ी है। वह जैसा भी है ठीक है। ठीक क्यों न हो आखिर मैंने ही तो सब कुछ सिखाया पढ़ाया है। अपने काम में चतुर है।"

नीरजा का यह सब कहना रोशनी को बिलकुल पसन्द नहीं आया। वह बोली---"बिटिया! तुम चाहे जो कुछ कहो मैं इतना जरूर कहूँगी कि हरिया को तुमने जितना सिर चढ़ा रखा है सो मुझे बिलकुल नहीं अच्छा लगता। वह तो जमाई बाबू की सज्जनता है कि उन्होंने केवल तुम्हारा इतना ख्याल किया जो हरिया की वह बातें सुन कर भी कुछ नहीं बोले। तुम्हारी ही खातिर उन्होंने फुलवारी के नुकसान और हरिया की बदतमीजी को भुला दिया।"

हरिया के विरुद्ध यह सब सुनकर नीरजा खीज उठी और बोली—"बस बहुत हो चुकी हरिया की बुराई रोशनी तू तो उससे जलती ही है। वह नौकरी चाहे जब खुद भी छोड़ सकता है मगर वह क्यों नहीं छोड़ता इसको तू नहीं जानती। मैं जानती हूँ? उसके दिल पर क्या गुजर रही है आज कल इसकी तुझे क्या खबर है!"

इतने ही में नीरजा ने देखा कि हरिया अपनी झोंपड़ी से निकल

रहा है अतः वह एक दम चौंक कर पुनः बोली—"रोशनी ! देख वह जा रहा है जरा बुला तो सही उसे मेरे पास।"

आया ने हरिया को बुलाने के लिये आवाज दी। हरिया ने मालिकिन के कमरे में आकर नीरजा को प्रणाम किया और चहरे पर दीनता के भाव प्रगट करते हुये कहा—"मालिकिन क्या आज्ञा है ?"

नीरजा मुस्करा पड़ी और बोली—"हरिया। कैसे हाल हैं ? नया हुक्म क्या मिला है ?"

हरिया ने उत्तर दिया—"मालकिन ! आज कल तो नित्य नये हुक्म मिलते ही रहते हैं। कहाँ तक बताऊं ! उन हुक्मों को सुन कर क्रोध भी आता है और जी भी जलता है।"

"साफ बात क्यों नहीं कहता ! पहेली मत बुझा" नीरजा ने कहा।

हरिया ने कहा—"आज की नयी आज्ञा सुनो। सामने वाला अपना वह मकान जो टूट कर गिर गया है उसके लिये मालिक ने सरला बाई की सलाह मान कर आज्ञा दी कि फूटे हुये मकान से ईंट और पत्थर लाकर पेड़ों के नीचे बिछा दिये जायें। मैंने उन्हें समझाया कि गरमी के समय पेड़ों को नुकसान होने का डर है। मगर मेरी कौन सुनता है।"

नीरजा ने भृकुटी सिकोड़ी। तब हरिया से कहा—"तू बाबू जी को समझा तो सही"

"जब मैंने समझाने की कोशिश की तो उन्होंने डाट बताई। सच पूछो तो भाभी जी अब काम करने को जी नहीं चाहता मगर आपके चरणों को छोड़ कर जाऊं भी तो कहां !" हरिया ने उत्तर दिया।

नीरजा एक क्षण शान्त रहकर बोली—"इसी से आज मैं देख रही थी कि दिन भर तुम लोग ईंट पत्थर ढोते रहे हो।"

नीरू की इस बात से हरिया की हिम्मत खुली और उसने अपना मतलब सीधा करने की गरज से कहा-"मामा जी ! आपके सामने हमें कभी ऐसे कष्ट नहीं झेलने पड़े और आपका ही लिहाज हमें मारे डालता है। वरना आप ही सोचो कि हम तो जाति के माली हैं हमारा काम है फुलवारी की देख भाल करना न कि पत्थर ढोना। यह काम तो हमारे यहां नीचा समझा जाता है। अगर हमारे देश का कोई आदमी हमें पत्थर ईंटें ढोते देख ले तो सच कहता हूँ भाभी साहब फौरन जाति से निकाल दिये जायें हम लोग।"

मन ही मन क्रुद्ध होकर नीरजा ने हरिया से कहा—"ठीक है। मैंने तेरी सब बातें सुनली हैं। इस समय तो तू अपने काम पर जा और हां अगर तुझे कोई ईंट पत्थर ढोने को कहे तो मेरा नाम लेकर मना कर देना।"

नीरजा के कहने पर भी हरिया गया नहीं। जहाँ का तहाँ ही खड़ा रहा। तब नीरू ने फिर पूछा—"क्या अभी कुछ और कहना है हरिया ? जाता क्यों नहीं ?"

हरिया ने सिर खुजलाते हुए कहा—"क्या कहूँ मालकिन विधाता ने हम पर कोप कर रखा है। दिन भर काम पर हाय २ उधर घर से भी जब समाचार आता है तब दिल और जलता है। कल ही कार्ड आया है कि हल की जोड़ी का एक बैल मर गया है। क्या करूँ ? कैसे करूँ ? समझ में नहीं आता ?"

उसकी इस बात पर नीरू मुस्करा उठी और सिराहने रखी डिबिया में से दो रुपये निकालकर हरिया को देती हुई बोली—"बैल को क्यों मारता है कुलच्छने ? मैं सब तेरी चालबाजी जानती हूँ। ज्यादा लम्बी चौड़ी बातें मत कर। यह ले दो रुपया और मरे हुए बैल को जिन्दा कर लेना।"

हरिया ने हाथ बढ़ाकर रुपये ले लिये और तब भी जाने का नाम न

लिया। तब फिर नीरजा ने कहा—"रुपये तो मिल गये मगर अब क्यों खड़ा है!"

"बहूजी एक धोती पुरानी धुरानी मिल जाती तो बड़ी कृपा होती। घरवाली के पास पहनने लायक कोई धोती नहीं रही है। इतनी कृपा हो जाये............" यह कहता हुआ वह खीसें काढ़ने लगा।

नीरजा ने बिना कुछ भी सोचे विचारे फौरन आया से कहा—रोशनी! सामने पड़ी वह साड़ी उठाकर हरिया को दे दे। बिना धोती लिये यह यहाँ से टलेगा थोड़े ही।"

रोशनी ने साड़ी को देखा तो वह ढाका की कीमती साड़ी थी जिसे नीरू ने हरिया को देदेना चाहा था इस कारण वह साड़ी हाथ में लिये बोली—"बिटिया! यह तो तुम्हारी ढाका वाली साड़ी है!"

"तो क्या हुआ? ढाका की है तो वही सही" लापरवाही से नीरू ने उत्तर दिया।

"वाह अच्छा हुक्म रहा। जो है सो ही सही। मगर मेरे देखते यह सब होने का नहीं? अगर देना ही है तो और कोई मिल की बनी धोती दी जा सकती है" आया ने दम्भ से कहा।

इस पर हरिया ने नीरजा से कहा——"आपने देखा मामी जी कि आया मौसी मुझसे कितनी नाराज रहती हैं? मेरी तकदीर ही का दोष है जो आज आपके बीमार होते ही सब लोग मेरे दुश्मन हो चले हैं।"

नीरजा ने कहा—"हरिया सो बात नहीं है। रोशनी तुझे बहुत चाहती है और अभी कुछ देर पहले मुझसे तेरी तारीफों के पुल बाँध रही थी।

तब नीरजा ने आया से कहा—"रोशनी! दे भी दे इसे यह साड़ी क्यों मेरे पीछे डालती है हरिया को? यह अब बिना इसी साड़ी को लिये टरेगा थोड़े ही।"

अनमने भाव से आया ने वह साड़ी हरिया के सामने फैंक दी। हरिया ने पास ही पड़ा तौलिया बिना माँगे जाने उठा लिया और उसमें साड़ी बाँधकर मालिकिन को प्रणाम कर साड़ी लिये कमरे से बाहर चला गया।

तब नीरू ने रोशनी से कहा—"रोशनी! क्या तेरे बाबू जी घर में नहीं हैं?"

रोशनी ने कहा—"वह बाहर चले गये हैं?"

"क्या तूने स्वयम् अपनी आँखों से उन्हें बाहर जाते देखा है?" नीरू ने उत्सुकता से प्रश्न किया।

आया ने दृढ़ता से उत्तर दिया—"हाँ बिटिया रानी! मेरे सामने ही वह घर से बाहर गये हैं। जाते समय वह इतनी उतावली में थे कि आज उन्हें अपनी टोपी तक की याद नहीं रही थी।"

नीरजा का हृदय टूक टूक हो गया अतः वह बोली—"आज पहली बार तेरे जमाई बाबू ने मेरी उपेक्षा की है रोशनी। मैं रोग शय्या पर आ पड़ी हूँ जो मेरी ओर से उदासीन हो चले हैं। अगर मैं इसी तरह कुछ और दिन बीमार रही तो दिन पर दिन उनकी मेरे प्रति लापरवाही बढ़ ही जायेगी और वह दिन भी दूर नहीं जब मैं उनकी सूरत तक को तरस जाऊँगी। मेरे ही घर में मेरा कोई नहीं रह जायगा।

कमरे का दरवाजा खुला और सरला अन्दर आती दिखाई दी अतः मुंह बनाती हुई आया कमरे से निकल कर घर में चली गई। नीरजा उत्सुकता से सरला को देखती रही।

सरला इकहरी देह की लम्बे कद वाली सांवले रंग की युवती है। उसकी बड़ी २ आंखों में करुणा रस ऐसा भरा रहता है कि देखते ही बनता है। उसके शरीर पर खद्दर की एक मोटी साड़ी है, बाल संवारे हुये हैं और चोटी को पीछे की ओर कस कर जूड़े के रूप में बांधा हुआ

है। जूड़ा ढ़ीला होकर उसके कन्धों का सहारा लिये नीचे की ओर खसक आया है। कमरे में सरला आते समय आरकिड का सुन्दर फूल लेती आई थी। फूल के रंगों का सम्मिश्रण इतना सुन्दर है कि वह एक तितली सदृश्य प्रतीत होता है।

नीरू ने सरला को देखा और उसके हाथ के फूल को भी। वह कमरे में आने का कारण समझ गई। अपने पति द्वारा नित्य दी जाने वाली वस्तु को आज पति की अनुपस्थिति में सरला से उपहार स्वरूप प्राप्त करने को तयार नहीं थी। इसी कारण वह शान्त होकर बिस्तरे पर लेटी रही। सरला ने सरल स्वभाव से वह आरकिड का फूल नीरजा के सिरहाने रख दिया और स्वयम् खड़ी रही।

कठोर मुद्रा चहरे पर लाते हुये नीरजा ने पूछा—"किस की आज्ञा से यह फूल लाई हो ?"

"भाई साहब का यही आदेश था" सरला ने उत्तर दिया।

"क्या वह स्वयम् मेरे पास तक नहीं आ सकते थे ?"

"बाजार जाने की उन्हें जल्दी थी इसी वजह से वह शीघ्र ही सुबह चाय पीकर ही चले गये हैं।"

"ऐसी भी क्या जल्दी थी जो उन्हें मेरे पास भी आने का समय नहीं था !"

"खबर मिली थी कि कल रात उनके दफ्तर का ताला टूट गया है, सामान चोरी हो गया है। इसी समाचार को पाकर उन्होंने शीघ्र ही बाजार जाना ठीक समझा।"

"मेरे पास तक आने के लिये पांच मिनिट का समय अगर वह चाहते तो निकाल सकते थे !"

"कल रात आपको बहुत बेचैनी रही थी। सबेरे जाकर कहीं

आपकी आंख लग सकी थी। वह तुम्हारे कमरे के दरवाजे तक आये थे मगर फिर यही सोच कर कि रात भर की तकलीफ के बाद तुम थोड़ी देर पहले ही सोई थीं उन्होंने हाल ही तुम्हें जगाना ठीक नहीं समझा। मुझे हिदायत देकर कि अगर दो पहर तक वह न लौट सकें तो मैं यह फूल उनकी ओर से तुम्हारे पास तक पहुंचा दूँ वह चले गये हैं।"

नीरजा जब से बीमार पड़ी थी तब ही से फुलवारी का निरीक्षण करते समय आदित्य अपने बाग का सर्व श्रेष्ठ फूल तोड़ता और स्वयम् नीरू को आकर अपने ही हाथों भेंट करता था। नीरू नित्य उसकी प्रतीक्षा करती रहती थी। आज ही एक ऐसा दिन था कि आदित्य अपने हाथों वह फूल नीरू तक न पहुंचा सका और अपनी अनुपस्थित में सरला को यह काम करने का आदेश देकर बाजार चला गया था। जल्दी में शायद वह यह सोच नहीं सका कि नीरू को आदित्य के हाथ का ही फूल चाहिये। वैसे तो बगिया में अनगिनती फूल भरे हैं वह चाहे जितने मंगा सकती हैं। मगर पति के हाथ का फूल का रस उनमें कहां? वह झल्ला उठी और अपनी उपेक्षा होती देख सरला से बोली—"क्या तुम जानती हो कि बाजार में इस फूल की अच्छी कीमत मिल सकती है? इस तरह इसे बरबाद करने की अपेक्षा तो यही बहतर है कि इसे बाजार भेज दो ताकि इसके पैसे उठाये जा सकें।"

इतना कहते २ उसका गला भर आया। मुंह से बोल न निकल सका।

सरला कोई नादान थोड़े ही थी। वह नीरू के दिल की मनो-दशा को सहज ही समझ गई और उसने इस समय कुछ भी उत्तर देन ठीक नहीं समझा क्योंकि वह जानती थी कि अधिक बात बढ़ाने का नतीजा अच्छा हरगिज नहीं निकलेगा। वह चुपचाप जाने लगी तब

नीरजा ने उसको रोका और बोली—"जानती हो इस फूल का नाम क्या है ?"

सहज स्वभाव से सरला ने उसका नाम बता दिया—"एमारिलिस।"

अच्छा तो यही होता कि सरला उसका नाम न बताती और केवल इतना ही कह देती कि वह नहीं जानती। मगर सरला को इतना ज्ञान कहां था जो वह नीरजा के मनो भावों को पढ़ सकती।

नीरू फूल का नाम सुनते ही भभक पड़ी और फिर डांट कर बोली—"तुम्हें कुछ मालूम भी है ? इसका नाम तो ग्रौविडफ्लौश है।"

गलत नाम नीरजा के मुख से सुनते ही सरला के चेहरे पर मन्द मुस्कान आ गई मगर वह बेकार नीरू से बहस नहीं किया चाहती इस कारण संक्षिप्त सा उत्तर देती हुई बोली—"ही नाम होगा"

इस सीधे साधे उत्तर को पाकर नीरजा और अधिक क्रुद्ध हो उठी। वह बड़ी तत्परता से बोली "होगा ! इसके क्या मतलब ? मैं तुम्हारा मतलब यही कि मैंने तुम्हें जो नाम बताया है वह ठीक नहीं है। इससे जाहिर होता है कि तुम फूलों के विषय में मुझे निरा गंवार ही समझती हो और इसी लिये मेरी बात पर विश्वास करने को तयार नहीं हो।"

सरला यह जानती थी नीरू ने जान बूझकर एक गलत नाम बताया है और उससे झगड़ा करने को पूरी तरह तयार भी है। वह इस क्रोध का कारण भी जानती थी मगर इतना सब कुछ जानते हुए भी वह कुछ कहना नहीं चाहती थी। अतः वह सिर नीचा किये कमरे बाहर इसीलिये जाने लगी कि शायद उसके जाते ही नीरजा का क्रोध कुछ कम हो जाये। मगर नीरू ने उसे रोककर फिर पूछा—"आज सुबह से फुलवारी में क्या कर रहीं थीं ?"

"आरकिड की कुंज को संजो रही थी"

आरकिड की कुंज का नाम सुनते ही नीरजा का पारा एकदम चढ़ गया। वह क्रोधित होकर बोली—"तुम्हें बार २ आरकिड की कुंज में जाने का क्या शौक है! तुम वहां क्यों जाती हो?"

सरला ने शान्त स्वर में ही उत्तर दिया—"आदित्य भैय्या का आदेश है कि पुराने आरकिड काट कर नये आरकिड उगाये जायें। इसी कारण आरकिड के कुंज में मुझे अक्सर जाना पड़ता है।"

नीरू आवेश में कांपने लगी और तब बड़ी मुशकिल से कह सकी—"तुम मेरी सारी महनत को चौपट कर डालोगी। तुम्हें आता जाता तो कुछ है नहीं मगर हर काम को करने के लिये तैयार हो जाती हो। वैसे ही वह हैं वह यह भी नहीं समझते कि कौनसा काम आदमी ढंग से कर सकता है। अगर उन्हें आरकिड कुंज में कुछ करवाना ही था तो हरिया माली को समझा जाते। उसे मैंने स्वयम् सारा काम सिखाया है और मुझे विश्वास है वह अधिक सावधानी से इस काम को पूरा कर सकता था।"

नीरू की इस बात का कोई उत्तर नहीं था। हरिया माली हो सकता है कि नीरजा के शासन में अच्छा काम करता हो मगर जब से सरला आयी है तब से उसने हरिया को काम चोर और उदण्ड पाया है। उसने अक्सर सरला का अपमान भी कर दिया है मगर तब भी सरला ने उससे कुछ नहीं कहा है। हरिया चतुर था उसने समय का लाभ उठाया। नीरजा की कमजोरी वह पहचान गया था और वह इधर तो सरला और आदित्य के आदेशों की परवाह न करता और उधर अपनी पुरानी मालिकिन नीरू को प्रसन्न करने के लिये उलटी सीधी बातें पहुँचाता रहता था।

नीरजा की इन मर्म भेदी बातों को सुनकर सरला नाराज हो सकती थी मगर उसने उसकी इन बातों का तनिक भी ख्याल नहीं किया। वह नीरू के हृदय की टीस समझती थी। वह जानती थी कि नीरजा को सन्तान

न होने का असीम दुःख था और बगिया पर उसे असीम स्नेह है इसी कारण वह इतनी व्यथित और उदास रहती है और हर समय उसे बगिया का ध्यान घेरे रहता है।

कहनी अनकहनी बातें नीरू सरला से कह गयी उसके हृदय में स्वयम ग्लानि पैदा हुयी। बगिया के उपर ही उसने अनेकों बातें सरला से कही थी इसी कारण उसने कहा—"सरला! सामने वाली खिड़की बन्द कर दे। मैं बगिया को देखना भी नहीं चाहती।"

सरला ने खिड़की बन्द करदी! तब शान्त भाव से उसने पूछा—"भाभी सन्तरे का रस ले आऊं?"

"नहीं मुझे कुछ नहीं चाहिये। मुझे तुम अकेला छोड़ दो" रुखाई से उत्तर दिया।

"क्या मकरध्वज भी नहीं खाओगी? इस समय तुम्हारा मकरध्वज खाने का समय हो गया है" सरला ने बहुत डरते हुये विनीत शब्दों में नीरजा से कहा।

"नहीं! मैं मकरध्वज भी नहीं खाउंगी। क्या धरा है मकरध्वज में? कुछ भी तो लाभ हुआ नहीं है। अब बगिया में तुम्हें और क्या काम करना शेष है? जरा मैं भी तो सुनूं?" नीरजा ने प्रश्न किया।

"भय्या की आज्ञा है कि गुलाब की कलियों में लगाई जायें" सरला ने उत्तर दिया।

"अच्छा तो अब उन्हें गुलाब की कलमें लगाने के विषय में भी कुछ ज्ञात नहीं रहा? किसने इस समय गुलाब लगाने की राय दी है। जरा मैं भी तो उस चतुर का नाम सुनूं" तड़प कर नीरजा ने कहा।

सरला शशोपंज में पड़ गई मगर फिर हिम्मत करके बोली—"विदेश से गुलाब की मांग आई है और इसी कारण भाई चाहते हैं कि

बरसात से पहले ही बहुत से गुलाब उनकी फुलवारी में लग आने चाहिये। मैंने उनसे मना भी किया था मगर तुम तो जानती हो कि उनके सामने किसी की चलती कहां है ?"

तुम्हारी बात भी नहीं मानी ? अच्छा जरा हरिया माली को तो मेरे पास भेज देना" नीरू ने कहा।

सरला ने जाकर हरिया को भेज दिया। हरिया के आने पर नीरजा ने कड़े स्वर में कहा—"मैं बीमार क्या पड़ गई हूँ कि तुम लोगों के दिमाग ही सातवें आसमान पर चले गये हैं। गुलाब की कलमें लगाने में तुम्हारे हाथों में कांटे लगते हैं ? सरला जीजी को तुम गिनते ही नहीं ? कुछ तो समझा करो वह हमारी महमान है और उस पर भी हमारी पूज्य हैं। मैं और कुछ सुनना नहीं चाहती केवल इतना बता देना चाहती हूँ कि झील के दाहिने किनारे गुलाब की क्यारियों के लिये जमीन तयार करलो बाबूजी के आने से पहले सारी कलमें लगा डालो समझ रखना कि अगर काम पूरा नहीं हुआ तो ठीक न होगा।"

नीरू ने मन ही मन इस बात का निश्चय कर लिया था कि वह बिस्तर पर पड़े पड़े ही शाम तक गुलाब की कलमें लगवा कर आदित्य को यह जता देगी कि वह अब भी फुलवारी की देख रेख उतनी ही खूब से कर सकने की क्षमता रखती है जितनी बीमार होने के पहले करती थी।

हरिया ने नीरजा के हुक्म को सिर झुकाकर सुना और बोला—"आपकी जो आज्ञा। भाभी जी मैं हर सुन्दर माइती के यहाँ से कटक की बनी हुई पीतल की फूलदानी आपके कमरे के लिये लाया हूँ। आपको ऐसी सुन्दर चीजों को सजाने का बहुत शौक है इस वास्ते जी न माना और मैं ले आया।"

नीरजा ने फूलदानी को लौट पलट कर देखा और पूछा—"कितने दामों की है रे।"

बड़ी नम्रता से हरिया ने हाथ जोड़कर कहा—"क्या आप मुझे गरीब के साथ ही कमीना भी समझती हैं भाभी जी। आपका अन्न पानी खाता हूँ। मैं गरीब हूँ मगर दिल मेरा छोटा नहीं है। क्या आप मुझे इतना कमीना समझती हैं कि इस छोटी सी चीज का सौदा मैं आपसे करूँगा! आप रख लें।"

हरिया ने पुरानी फूलदानी से फूलों का गुच्छा निकालकर नई फूलदानी में लगा दिया और तब नीरू से बोला—"भाभी जी! मैं समझता हूँ कि आप मेरी भानजी के ब्याह की बात शायद भूली नहीं है! "आपने बाजू-बन्द देने का वादा किया है। सो अब ब्याह के दिन भी निकट आरहे हैं। गिलट के गहने मैं भानजोकी शादी में देने नहीं चाहता। दूं भी तो कैसे दूं देश वाले तो यही जानते हैं कि मैं बड़े घरों में काम करता हूँ।"

नीरू से हरिया का मतलब छिपा नहीं रहा मगर वह इस समय हरिया की बातों पर विशेष ध्यान देने को तयार भी नहीं थी उसके सामने गुलाब का प्रश्न था इस कारण बोली—"ठीक है। मैं अपना वायदा न तो भूली हूँ और न अभी तेरी भानजी का ब्याह ही होरहा है। तू जा पहले काम देख?"

हरिया चला गया।

नीरजा ने रोशनी को पुकारा। बोल—"रोशनी! न जाने मेरे मन को क्या हो गया है! कितनी ओछी बातें मेरे मन में आती हैं! मैं अपने चित्त से बहुत दुःखी हूँ और मुझे अपने ऊपर ही बहुत खीज होती है।"

"क्यों इस तरह अपना जी हलका करती हो बिटिया" रोशनी ने ढाढ़स बंधाया।

बेचैनी से दुखी होकर नीरजा ने करवट बदली और तब आया से बोला—"मेरा भाग्य भी कैसा है! मेरे जीवन में कैसा भयानक उलट फेर हो गया है। मगर अब तो मेरा मन ही ठिकाने नहीं रहा। न जाने हरिया मेरे

विषय ही में क्या सोचता होगा ? जहां तक मैं सोचती हूँ कि वह मेरे मनो-भाव ताड़ गया है और इसी कारण हर क्षण मेरी कमजोरी से लाभ उठाना चाहता है। जरा बुला तो सही उस कमबख्त को आज जी भरकर डाटने को जी चाहता है। ताकि उसकी सारी हेकड़ी ठीक हो जाये।"

आया ने उठकर हरिया को बुलाना चाहा। तब नीरू ने उसे रोक दिया।

३

आदित्य के चाचा का लड़का रमेन थोड़ी देर बाद नीरजा के कमरे में आया और बोला—"भाभी! दफ्तर के कामों में भय्या आज बहुत व्यस्त हैं इस कारण उन्होंने कहलवाया है कि घर जल्दी न लौट सकेंगे। तुम लोग उनके खाने की चिन्ता न करना। वह होटल ही में खाना खलेंगे।"

नीरू ने रमेश को बैठने का इशारा किया और तब मुस्कुरा कर बोली—"लालाजी। इतनी छोटी सी बात कहने को तुम इतनी तकलीफ बर्दाश्त करके यहां तक आये हो? यह बात तो दफ्तर का चपरासी भी कह सकता था? मैं तुम्हारे मन की जानती हूँ और तुम्हारे आने का कारण भी!"

रमेन जानता था कि नीरजा ने यह व्यंग सरला को लेकर किया था। मगर उसने इस बात का भाव चहरे पर प्रगट नहीं होने दिया और मुस्कुरा कर ही कहा—"दफ्तर का चपरासी मेरे पद का नहीं है! तुम्हारे पास आने के लिये तो मैं सदा बहाना ही ढूढ़ता रहता हूँ। क्या करूं तुम्हारा आकर्षण ही कुछ ऐसा है!"

क्यों मुझे बनाने चले हो और फुसलाने की बातें कर रहे हो ? वह तो यह कहो कि रास्ता भूल कर मेरे पास आ निकले हो वरना तुम्हें तो सीधा बगिया ही में जाना था। वहीं हैं तुम्हारी वह... इस समय तो कुंजों में अकेली ही होंगी। जाओ न उन्हीं के पास और अपनी प्रेम चर्चायें प्रारम्भ करो न !"

"इस फुलवारी की वन देवी तो तुम्हीं हो। तुम्हारी कृपा होगी तो ही भला हो सकता है। तुम्हारा आशीर्वाद पाने के लिये ही तो यह ले आया हूँ" यह कह कर रमेन ने एक कहानियों की पुस्तक जेब से निकाली और तब दोनों हाथ मिलाकर नीरजा के सामने अर्पण की।

कहानी पढ़ने का नीरजा को बेहद शौक था अतः वह पुस्तक पाते ही खिल उठी। पुस्तक हाथ में लेकर नाम पढ़ा तब बोली—"अश्रु लड़ियां।" कुछ भी हो नाम तो सुन्दर है पुस्तक का। मेरा अशीर्वाद है कि तुम्हारी वह—हमेशा तुम्हारे दिल में समायी रहें और तुम दोनों एक दूसरे के प्रेम पाश में बंधे रहो। भगवान तुम्हारी दोनों की जोड़ी को हजारों वर्ष बनाये रखे।"

"भाभी, एक बात बताओगी !" रमेन ने नीरू से प्रश्न किया।

"अवश्य" दृढ़ता से नीरू ने कहा।

"क्या सरला से आज तुम्हारी कुछ कहा सुनी हो गयी है ?"

"क्यों ! बात क्या है ? साफ २ बताओ न ?"

"आते में मैंने देखा था कि सरला झील के किनारे अनमनासा मुंह बनाये बैठी थी। आज उसका चहरा अजीब उतरा २ था। तुम तो जानती ही हो कि औरतों का दिल ही कितना सा होता है ! क्षण में प्रसन्न और क्षण भर में दुःखी। मैंने जब दुख का कारण पूछा तो लगी पहेलियां बुझाने।" रमेन ने नीरू को बताया।

नीरजा ने कहा—"तुम्हारे भाई साहब ने ही कुछ कहा सुना होगा ? वरना और कौन कहता ?"

रमेन ने उत्तर दिया—"तुम भी क्या बात करती हो भाभी ! भाई साहब तो बस मालियों को डाट फटकार सकते हैं। तुम लोगों से कहने की उनकी हिम्मत कहां !"

"लाला जी ! यह बातें तो छोड़ो। अब मेरी बात अगर मानो तो एक बात कहूँ। तुम्हें मेरी कसम है कि तुम सरला से ब्याह करलो। यह बात तो तुम्हें मेरी खातिर माननी ही पड़ेगी। इससे उस कुमारी कन्या का भी उद्धार हो जायेगा और तुम्हारा घर बस जायेगा और मुझे मेरी देवरानी मिल जायेगी।" नीरू बोली।

"कुमारी कन्या का उद्धार हो या न हो ! इसकी मुझे चिन्ता नहीं ! पर इतनी बात तो अवश्य है कि मैं शादी विवाह के मामले में फिसड्डी रहने वाला जीव नहीं हूँ। शादी तो करूंगा ही।"

"तो फिर शुभ कार्य में देरी क्यों ? क्या वह तुम्हें नहीं चाहती ?

"इतना पूछने की मुझे आवश्यकता ही क्या है ? तुम तो जानती ही हो कि वह मेरी जीवन संगिनी अवश्य होगी मगर आदर्श के रूप में। दुनिया दारी के लिये थोड़े ही।"

नीरजा और अधिक बहस करना नहीं चाहती थी मगर यह भी चाहती थी कि रमेन उसकी बात से पूरी तरह सहमत भी हो जाये इस वजह से उसने उसका हाथ पकड़ लिया और जोर से दबाती हुयी बोली—"वह तुम्हारी जीवन संगिनी अवश्य होगी ! मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे जीते जी उससे शादी करलो। अगर तुमने उससे विवाह नहीं किया तो याद रखना कि मरने के बाद मैं भूत बन कर तुम्हारे पीछे २ फिरूंगी।"

नीरू के आवेश और इतने आग्रह को देख कर रमेन कुछ सोच

न सका कि माजरा क्या है ? वह सरला से विवाह करने को इतना अधिक जोर क्यों देरही है ? कुछ समझ न सका मगर उसने उत्तर ही दिया "उम्र में तुम मुझसे छोटी हो मगर रिश्ते में भाभी हो अतः बड़ी हो। तुम्हें यह तो समझ ही लेना चाहिये कि मैं अपने उसूलों को तुम से अधिक अच्छी तरह समझता हूँ और उन पर चलना ही अपना धर्म समझता हूँ। तुम्हारी बात का क्या जवाब दूँ ? यह तो तुम सहज ही जान सकती हो।"

नीरजा ने बड़प्पन दिखाते हुये कहा . मैं तुम्हारी बड़ी हूँ जो कुछ कहूँगी हित की ही कहूँगी। मेरी आज्ञा है कि तुम सरला से विवाह करलो। अभी सहालग हैं। फागुन तक विवाह हो ही सकता है। मुहूर्त निकलवाना तुम्हारा काम है।"

"तुम भी क्या बात करती हो भाभी ! मैं सहालग मानता ही कब हूँ। मेरे लिये तो हर दिन सहालग ही है। दिन मुहूर्त ठीक करवा कर ही करूँ मेरे जीवन में विवाह को स्थान ही कहां है। एक बार तो जेल काट ही आया हूँ और कौन जाने कब फिर जेल जाने की नौबत आ जाये ? जिसके भाग्य में जेल लिखी हो उसका व्याह करना कहां ठीक जंचता है ?"

"जेल तो आज कल कोई हौआ नहीं है ? तुम जेल की बात कहते हो मगर शायद यह नहीं जानते कि जेल के नाम से अब औरतें भी नहीं डरतीं ?"

मैं नहीं चाहता कि जो मेरे हृदय की देवी हो वह जेल का ही अनुसरण करे। मेरे दिल के सिंहासन पर जो भी विद्यमान् है वह मेरे हृदय में ही रहे यही मेरी कामना है। मैं नहीं चाहता कि वह भी मेरे साथ जेल जाये।"

इसी समय सरला नीरू के पीने के लिये हारलिक्स का कटोरा लाई और बिस्तर के पास पड़ी हुई तिपाई के ऊपर रख कर जाने लगी तब नीरू ने उसे रोक कर कहा—"सरला जरा ठहरो"

सरला रुक गई तब नीरू ने उसे फोटो दिखाकर पूछा—"पहचानती हो यह फोटो किसका है?"

फोटो देख कर सरला ने कहा—"यह तो मेरा ही है"

"हाँ तुमने ठीक ही बताया। यह तुम्हारी उन दिनों की फोटो है जब तुम ताऊजी की बगिया में काम करती थीं। तब तुम चौदह पन्द्रह साल की रही होगी। देखो न किस तरह लांग देकर तुमने मराठिनों की तरह अपनी धोती बांध रखी है।" नीरजा ने फोटो को हाथ में लेकर उसकी व्याख्या की।

"तुम्हें यह मिली कहां?" सरला ने प्रश्न किया।

"तुम्हारे भय्या की टेबिल के दराज में न जाने कब से पड़ी थी। आज मुझे ध्यान आ गया इससे निकलवा ली है।" तब रमेन को वही फोटो दिखाते हुये नीरजा ने कहा—"क्यों लालाजी! इस फोटो को देखते हुये अब सरला कितनी बदल गई है? अब अधिक सुन्दर लगती है न!"

"सरला तो एक ही है। तुलना किस की किससे करूं" रमेन ने कहा।

नीरजा को दिल्लगी सूझी वह बोली—"फर्क मैं बताती हूँ? उस समय सरला कोमल कली थी मगर अब यह विकसित पुष्प बन चुकी है। लालची भौरों की निगाहें इस पर पड़ चुकी हैं और वह भी अपने रस को किसी प्रेमी के चरणों पर उलट देना चाहती है। मेरा ख्याल है मेरी इस विचार धारा को ही तुम आजकल के छोकरे इसे रोमांस कहते हो! ठीक कहा है न मैंने लालाजी।"

सरला को यह सब ठीक न प्रतीत हुआ और वह जाने लगी तब नीरू ने उसे रोका और बैठने का आग्रह करते हुये कहा—"जरा रुको तो सरला ! मैं भी तो एक बार तुम्हें पुरुषों की निगाह से देखूं। अच्छा तुम बताओ रमेन सरला के किस अंग पर अधिक आकर्षण है ?"

"मेरे लिये तो स्वयम् एक आकर्षण है। कौनसी जगह विशेष महत्व की है मैं नहीं जानता।"

तुम भी निरे बुद्धू हो। सरला की आँखें सबसे अधिक आकर्षक हैं। एक बार आँखें चार हुई और पुरुष वहीं उलझ कर रह गया। कितनी मादकता है इन आँखों में जी चाहता है कि यह मेरे सामने बैठी रहे और मैं इसे देखा ही करूं।' बदन भी गोल है। गठन भी ठोस है। शरीर हलका और फुर्तीला है। त्वचा कितनी कोमल और चिकनी है।" नीरजा ने सरला के शरीर की पूर्ण व्याख्या कर कर डाली।

"तुम तो इस तरह सरला के अंग प्रत्यंगों पर प्रकाश डाल रही हो मानो उसके शरीर का सौदा कर रही हो।" रमेन ने मुस्कुराते हुये नीरू से कहा।

नीरू ने रमेन की बात को सुनी अनसुनी करके कहा—"तुम पारखी नहीं हो। देखते नहीं इसकी बाहें कितनी सुडौल हैं ? हाथ कैसे कोमल हैं, उंगलियां कितनी सुन्दर हैं ? तुम कवि नहीं हो और कवित्व के मर्म से सर्वदा अनभिज्ञ हो। अगर तुमने किसी काव्य में स्त्री के रूप का वर्णन पढ़ा हो तो मिलालो न ?"

रमेन ने मुस्कुरा कर कहा—"क्या कहूँ ? कुछ कहते नहीं बनता ? तुम्हारी परख की तारीफ क्या करूं ?।"

"तो क्या तुम इतना सुन कर भी इन हाथों को अपनाना नहीं चाहते ?"

हमेशा के लिये तो शायद अपनाने की बात मेरे मन आज तक

उठी नहीं है। हाँ, इतना अवश्य कह सकता हूँ कि जब भी मुझे इन कर कमलों द्वारा चाय अथवा नाशता परोसा गया है उन क्षणों के आनन्द को मैं कभी नहीं भुला सकता। उसके रस की कल्पना से ही मेरा चित्त विभोर हो उठता है। जो कुछ भी मुझे मिल चुका है उससे ही मैं तृप्त हूँ और सदा के लिये अपनाने की बात सोच भी नहीं सकता।"

सरला अब उठ चली तब दरवाजा रोककर रमेन खड़ा हो गया और बोला—"जा तभी सकोगी जब मुझे वचन दे जाओगी ?"

"तुम भी कहो मुझे करना होगा ?" सरला ने पूछा।

रमेन ने कहा—"आज मैं तुम्हारी बगिया में आऊँगा और चाहता हूँ कि तुम से हृदय की कुछ बातें कह कर अपने मन का भार हल्का कर लूं। क्या आशा करूं कि तुम मेरी साध पूरी कर सकोगी ?"

"आप आयें" सरला ने उसकी बात स्वीकार करली।

रास्ता छोड़कर रमेन नीरजा के पास चला आया। सरला चली गयी।

अच्छा तो अब आप आज्ञा दें" रमेन ने नीरू से कहा।

नीरजा ने मुस्कुरा कर कहा—"ठीक ही तो है। अब मेरी जरूरत तुम्हें कहां रही ? वचन जो दे गयी हैं। जाओ भैय्या जाओ रास्ता क्यों खोटा करते हो।"

रमेन चला गया।

४

जब कमरा सूना हो गया तब नीरजा ने अपनी आंखें बन्द करलीं। वह शान्त होकर बिस्तरे पर पड़ी रही। मन ही मन सोचने लगी कि एक समय था जब उसका जीवन भी इस प्रकार प्रेमोन्मत क्षणों में बीता करता था! बसन्त की अनेकों रातें उसने पति के प्यार भरे दिल पर सिर रख कर काटी हैं। उसे अपने पति से अनुपम प्रेम मिला है। अनेकों बार उसके पति आदित्य ने प्रेम से उसके मुख को देखते हुये और अलकों को सहलाते हुये कहा था—"मेरी प्रेमभरी मन मन्दिर की देवी! तुम भगवान की अनुपम देन हो। कालीदास ने कल्पना की मगर तुम साकार होकर प्रमाणित कर रही हो कि तुम्हारे हँसने से मेरे उपवन के फूल खिलते हैं। तुम्हारे ही इशारों पर मधुर समीर हृदय को शान्ति पहुंचाता है।"

अभी कुछ दिन पहले तक उसका जीवन प्याला पति के प्रेम से लबालब भरा था। दिन हंसते कट जाता था और रातें पति के आलिंगन में। दोनों प्रेम के नशे से झूमते रहते और इसी तरह उनके दाम्पत्य जीवन के दस वर्ष कब और कैसे समाप्त हो गये! वह पति के हृदय पर एक क्षत्र राज्य करती थी और उसका पति आदित्य उसके इशारे पर आकाश के तारे भी तोड़ कर लाने का दम भरता था।

नीरजा ने सोचा कि अब भी वही पति है, और नीरू भी वही है। रूप और यौवन भी निखार पर ही है मगर हायरी तकदीर, दिन वह न रहे। गुजरे हुये दिन कितने सुहाने थे, वह सुहाने दिन एक दम कैसे समाप्त

होगये ! उसके जीवन की चंचलता, चपलता सब एक दम कैसे विलुप्त होगयीं ? पति अपने काम में फंसा रहता है घर में वह अकेली रोग शैय्या पर पड़ी रहती है, रंग और जीवन में कितनी विषमता है उसके जीवन में ! इसकी टीस और कोई जाने या न जाने मगर नीरू अवश्य जानती है।

सरला, जब से नीरू के घर में आई है तब से ही नीरू के हृदय में एक खार बन कर रह गई है। उसे ऐसा लगने लगा मानो सरला का प्रवेश उसके लिये लाभकारी नहीं ! आदित्य का कहना है कि सरला फुलवारी की देख रेख करके उसे सुन्दर बनाने का काम बड़ी तत्परता से कर रही है मगर नीरू को लगता है कि सरला उसकी जीवन-बगिया पर तुषारपात कर रही है। उसने कभी नहीं सोचा था कि उसके जीवन की कटुता यह छोकरी सरला हो जायगी ! मगर अब वह करे तो क्या करे ! कुछ समझने सोचने की क्षमता उस में रही ही कहां है !

यही तमाम विचार नीरजा के दिमाग में चक्कर काटने लगे। इन विचारों से अधीर होकर नीरू ने अपनी आया को पुकारा—"रोशनी ! जरा मेरे पास तो आ"

"क्या कहती हो बिटिया रानी" आया ने आकर नीरू से पूछा।

"बैठ जा रोशनी, जरा बात करने को जी चाहता है"

रोशनी बैठ गई। नीरजा ने कहा—"रोशनी ! संसार की गति भी क्या विचित्र है। आज से दस साल पहले जब मैं इस घर में ब्याह कर आई थी तो तेरे जमाई बाबू हमेशा मुझे रंग महल की राजरानी' कह कर सम्बोधित किया करते थे। मैं भी वही हूँ, तेरे जमाई बाबू भी वही हैं घर भी वही है मगर वह नाम नहीं है"

"कैसी बातें करती हो बिटिया, तुम्हारी बीमारी के कारण जमाई बाबू परेशान रहते हैं वरना तुम क्या यह समझती हो कि वह तुम्हें उतना नहीं चाहते ! मैं जानती हूँ कि वह तुम्हारे लिये कितने परेशान रहते हैं।"

"रोशनी, मेरा मन न जाने कैसा होता जाता है। उन दिनों की याद करती हूँ तो परेशान हो जाती हूँ। एक तो वह दिन थे जब हम दोनों रातों इस बगिया में साथ २ घूमते रहते थे। उस समय उनके साथ जागते रहना कितना मधुर लगता था और एक आजकल का जागना है। कम्बख्त नींद ही नहीं आती अगर नींद ही आ जाये तो कुछ चैन तो मिले। मगर नींद ने न आने की कसम जो खा रखी है।"

"थोड़ी देर चुप होकर आँखें बन्द करलो नींद स्वयम् आ जायेगी" रोशनी ने सलाह दी।

"क्यों रोशनी क्या आजकल तेरे जमाई बाबू और सरला दोनों चांदनी रातों में बगिया में घूमते हैं!"

"मैंने तो उन दोनों को सुबह बाजार भेजने के लिये फूल तोड़ते में ही साथ २ देखा है। जमाई बाबू को इतनी फुरसत कहां है जो रात को बगिया में सरला के साथ घूमने जाया करें?"

"मालूम होता है कि माली आजकल खूब आराम करते हैं। वह जान बूझ कर मालियों को नहीं जगाते"

"तुम मालियों पर हुकूमत करती थीं अब कौन इतनी साज संवार करे।"

"रोशनी जरा सुन तो यह तेरे जमाई बाबू की ही गाड़ी की आवाज है न!"

"हाँ! बाबू की गाड़ी आ गई"

"अरे मैं भी कितनी पागल हूँ! कैसी रोनी सी सूरत बना रखी है! देखेंगे तो क्या कहेंगे! ला जरा शीशा तो दे और उस गुलदस्ते में से वह गुलाब का फूल तो निकाल दे। मेरे सेफ्टीपिन का डिब्बा भी तो उठा दे। तू जा यहाँ से वह आते होंगे।" नीरजा ने चटपट वेष भूषा बदल डाली।

रोशनी आवश्यक सामान नीरजा को सौंपकर चल दी। मगर तिपाई पर दूध और बार्ली देखकर रुकी और नीरू से बोली—"बिटिया! यह सब सामान ज्यों का त्यों ही पड़ा है जरा पीलो न"

"तू जा। मेरा पीने को जी नहीं चाहता"

"तुमने आज की दवा में से दो खुराक भी छोड़ दी हैं। ऐसे कैसे ठीक होओगी"

"बेकार मत बोल। सामने वाली खिड़की खोलकर अपना रास्ता देख"

रोशनी खिड़की खोलकर चली गयी।

दिन ढलने लगा! घड़ी ने तीन का घंटा बजाया। माली काम कर रहे थे और फुलवारी इस ढलती दोपहरी के समय खिल उठी थी। पूरब की हवा से झील का पानी लहरा रहा था और खिड़की में से इस सुन्दर दृश्य को देखकर नीरू का मन कुछ हलका हुआ। इतने ही में दौड़ता हुआ आदित्य उसके कमरे में चला आया उसके हाथों में पीले रंग के विलायती फूलों की कलियां थी वह उसने नीरजा के चरणों पर बिखेर दी और तब प्रेम पूर्वक नीरू का हाथ अपने हाथ में लेकर बोला—"आज बहुत देर तक तुम्हें देख भी न पाया! जानती हो तम्हें बिना देखे मेरी क्या दशा होने लगती है?"

पति के प्यार भरे वचनों को सुनकर नीरू उसके गले से लिपट गयी और उसके सीने में अपना मुंह छिपाये फफक २ कर रोने लगी। आदित्य ने नीरजा को अपने आलिंगन में कस लिया और उसकी अलकें हटाकर आसुओं से भीगे गालों को चूम कर बोला—"क्या बताऊं कितनी परेशानियों में फंस गया था?"

"मैं कुछ नहीं जानती ? तुम्ही बताओ कि तुम मेरी अब पहले जैसी परवाह करते हो ?"

"पागलों की सी बातें करती हो ! क्या तुम मेरी वही नीरू नहीं हो ! मैं तुम्हारी परवाह पहले से ज्यादा करता हूँ । अपना दिल क्यों छोटा करती हो । रोओ मत नीरू तुम्हें मेरी सौंगध है" उसने दिलासा दी

मेरा मन कच्चा हो गया है इसी कारण कभी २ सोचने लगती हूँ कि कहीं तुम मुझे ठुकरा न दो"

"तुम तो चतुर स्त्री हो । मुझे कड़ी बातें कहलेती हो और इसी बहने मेरे दिल की थाह ले लेती हो । मैं भी कोई कच्चा नहीं हूँ ! मैं तुम्हारा ही था और तुम्हारा ही रहूँगा यह बात दिल में हमेशा याद रखो"

"जो बात मुझे याद दिलाना चाहते हो वह तुम भूल जाते हो"

"इतना समय ही मेरे पास कहां है जो भूल भी सकूँ"

तुम्हें इतना अधिक समय भगवान ने दे तो दिया है । मैं तो बीमार हूँ मेरी तरफ से तुम्हें फुरसत ही है"

"विपरीत बात क्यों सोचती हो । सुख के समय ही कोई चीज भूली जा सकती है । मेरे भाग्य में इस समय चैन कहाँ ! मेरी सर्वस्व तो तुम्ही हो और तुम्हें रोग शैय्या पर देख कर मैं कितना दुःखी हूँ ! जानती हो !

"अच्छा तुम्ही बताओ कि सवेरे तुम मुझे भुलाकर नहीं चले गये थे !"

"तुमने भी खूब कहा ! तुम्हें भुला कर गया था या मजबूरी के सबब एकदम भागा और तुम्हें जगाना उचित नहीं समझा । इतनी देर तक मैं वहाँ कैसे रहा यह तुम नहीं जान सकती !"

"ठीक से बैठ जाओ न ! पैर उपर ही रख लो"

"क्यों मेरे पैरों में बेड़िया डालने का इरादा है क्या ! यही आज के कसूर की सजा है ।"

तुम्हारे चरण ही तो मेरे अपने हैं । इनके ही सहारे तो मैं इस जीवन और आने वाले अनेको जीवनों में पार हो जाऊँगी । मैं यही चाहती हूँ कि मरूं भी तो तुम्हारे चरणों में ।"

"तुम भी हो बड़ी शक्की । चलो अच्छा ही है कि कभी २ शक कर लेती हो । शक करने से भी तो प्यार ही बढ़ता है ।"

"तुम पर शक करूंगी ? कैसी बात करते हो ! तुम जैसा पति पाकर मैं अपने को धन्य मानती हूँ"

"अगर तुम मुझ पर शक नहीं करतीं तो चलो आज से मैं ही तुम पर शक किया करूंगा।"

"तुम जो कुछ करोगे वह मुझे शिरोधार्य है"

"चाहे कितनी भी सफाई दो मगर मैं जानता हूँ कि आज तुम्हें मुझ पर शक हो गया था"

"बार २ शक की बात कह कर मुझे और अधिक क्यों दुखी करते हो । मैं खुद अपने किये पर पछता रही हूँ"

"पछतावा किस बात का है ? यह तो प्रेम व्यवहार में चलता ही है ।"

"भगवान ही जानता है कि मुझे अपने ऊपर कितना क्रोध है । न जाने कौनसी वह मनहूस घड़ी थी जो मैंने ऐसा सोचा भी तुम्हारे प्रति"

इतने में द्वार खोलकर रोशनी कमरे मे आकर बोली—"जमाई बाबू ! सुबह ही से बिटिया ने न तो दवा खाई है और न दूध ही पिया है । शरीर की मालिश भी नहीं कराई तुम्हीं बताओ इस तरह कैसे काम चलेगा !"

यह सुन कर आदित्य नीरू से बोला—"मैं तुमसे बहुत नाराज हूँ"

"काम तो सच मुझसे ऐसा ही हुआ है। इस बात पर तुम्हारा नाराज होना गैर मुनासिब नहीं है। नाराज हो लो मगर एक प्रार्थना है कि जब जी भरकर नाराज हो चुको तो मुझे दुखी समझ कर क्षमा भी कर देना।"

आदित्य ने सरला को पुकारा। सरला का नाम सुनते ही नीरू का दिल बुरा हो गया। इतनी देर में वह जैसे तैसे हृदय को काबू में कर पाई थी मगर अब फिर ज्यों का त्यों होगया। उसका दिल खराब हो गया। इसी समय सरला भी आ पहुंची।

क्रुद्ध होकर आदित्य ने सरला से पूछा—"तुमने नीरू की तनिक भी पर्वाह नहीं की। न उसने दवा पी और न दूध ही पिया। यह सब तो ठीक नहीं हुआ"

नीरजा ने पति को बीच ही में टोकते हुये कहा—"उस बेचारी को क्यों बेकार डाटते हो। कसूर तो मेरा ही है। मैंने ही कुछ नहीं जान बूझ कर खाया पिया है। जाओ सरला तुम क्यों डाट खाती हो"

"अभी कैसे जायेगी। दवा लाकर देगी और दूध बनायेगी"

"तुम सरला पर बहुत अन्याय करते हो बेचारी दिन भर मालियों के साथ काम करती है और अब तुम यह भी चाहते हो कि वह मेरी तीमारदारी भी करे। आखिर वह भी आदमी है। थक जाती होगी। आया को बुला कर यह सब काम क्यों नहीं करा लेते? आराम करने दो न बेचारी को?"

"आया इन सब कामों को ठीक तरह से नहीं कर सकती"

"कितना भारी काम है यह जो आया नहीं कर सकती है। वह यह सब काम अच्छी तरह जानती है"

इतना कह कर नीरजा ने आया को बुलाने के लिये कई आवाजें लगाईं। उसकी उतावल देखकर आदित्य ने कहा—"इतने घबराने की क्या जरूरत है। देखो कहीं रोग न बढ़ जाये।"

सरला ने और कुछ न कहा केवल इतना कह "मैं उसे भेजे देती हूँ" वह कमरे से बाहर चली गयी। तब आदित्य ने मन ही मन सोचा कि शायद सरला से अधिक काम लिया जा रहा है। यह बेजा बात है। इतने में रोशनी आगयी और उसने आदित्य के आदेशानुसार नीरजा को दवा और पथ्य दे दिया। इस काम से फुर्सत पाकर आदित्य ने आया से कहा—"रोशनी जरा सरला को तो भेज दे।"

सरला का नाम पुनः सुनते ही नीरू चौंक पड़ी और बोली—"बार २ सरला को क्यों परेशान करते हो?"

"जरा काम काज की बातें पूछनी हैं" आदित्य ने उत्तर दिया।

"तुम्हें हर वक्त काम काज की ही चिन्ता रहती है। थोड़ी देर आराम भी किया करो।"

"थोड़ा सा पूछना ही है।"

"सरला अभी लड़की ही है वह काम काज की बात क्या समझे। इससे तो बहतर है तुम काम काज की सलाह हरिया से किया करो। आखिर वह माली है। फुलवारी का उसे पूरा तजुर्बा है।"

"क्या करूँ आदत से लाचार हो गया हूँ। तुमने ही मुझे इस बात का तजुर्बा कराया है कि औरतें मन लगाकर काम काज करती हैं। आदमी तो मजबूरी के कारण ही काम करता है। औरतों में उत्साह भी होता है और लगन भी।"

"विधाता का लेख ही कुछ ऐसा है कि मैं रोग से दुखी होकर शैय्या पर पड़ी हूँ और इस कारण तुम्हारा कोई हाथ नहीं बटा सकती। लाचारी सब कुछ करा लेती है वरना काम काज की तुम्हें चिन्ता करने की आवश्यकता ही क्या थी?"

इतने ही में सरला आगयी। आदित्य ने प्रश्न किया—"आरकिड की कुञ्ज में जो काम बताया था पूरा हो गया?"

"जी हाँ।"

"पूरा काम समाप्त होगया ? या कुछ बाकी है"

"बाकी कुछ भी नहीं है"

"और गुलाब की कलमें ?"

"उसके लिए क्यारियाँ त्यार हो रही हैं। हरिया जमीन ठीक कर रहा है।"

"हरिया के जिम्मे काम सौंपकर तुम यह समझती हो कि काम पूरा हो जायेगा ? वह काम क्या करता है और कैसा करेगा यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। खैर।"

नीरजा ने बात को यहीं रोकना चाहा इस कारण उसने सरला से कहा—"जरा सन्तरे का रस ले आओ। देखना थोड़ा अदरक का रस भी मिलाती लाना और थोड़ा शहद भी।"

सरला कमरे से चली गई। तब नीरजा ने बातों का रुख बदलते हुये कहा—"क्या आज भी सुबह उसी समय उठे थे जैसे हम रोज उठा करते थे ?"

हाँ।"

"घड़ी में अलार्म लगा दिया होगा !

हाँ।"

"उसी मेज पर नाश्ता और चाय नौकर ने ठीक समय पर लगा दिया था न।"

"अगर नौकर काम नहीं समय पर करता तो तुम्हारे सामने शिकायत न करता।"

"दोनों कुर्सियाँ डाली थीं या नहीं ?"

"डाली कैसे नहीं ? हिदायत जो कर रखी है। चाय का सब सामान ज्यों का त्यों था।"

"तब मेरी कुर्सी खाली क्यों रखी ?"

क्या करता ?"

"सरला को क्यों मेज पर नहीं बुला लिया।"

"सुबह वह पूजा पाठ जो करती है। हमारी तरह थोड़े ही है न पूजा न पाठ ?"

इस उत्तर से नीरू प्रसन्न न हुई थीं वह चाहती थी कि आदित्य कहता—"तुम्हारे आसन पर कैसे बिठाता।" मगर आदित्य ने साफ कह दिया और नीरू के हृदय के भावों को जाना नहीं। उसका दिल भारी हो गया।

नीरू ने फिर पूछा—"आरकिड की कुंज में गये थे ?"

"कहा कुछ काम जो था। फौरन समझा कर दुकान भागा"

"अच्छा एक बात बताओ ? रमेन का व्याह अगर सरला के साथ हो जाये तो कैसा रहे !"

"ठीक तो है"

"फिर करा क्यों नहीं देते"

"क्या विवाह कराने का ठेका ले रखा है मैंने ?"

"नहीं ! सो बात नहीं। मेरी राय में अगर दोनों का विवाह हो जाये तो ठीक रहे। सरला का व्याह भी करना ही है और फिर रमेन जैसा लड़का कहां मिलेगा उसके वास्ते !"

"जोड़ी तो बुरी नहीं। मगर उनके मन में क्या है ? यह जानने का मौका नहीं मिला। वैसे तो वह एक दूसरे को पसन्द करते हुये दिखते नहीं"

"सो बात तो नहीं है। वह दोनों एक दूसरे को चाहते भी हैं"

"फिर तुम्ही कोशिश क्यों नहीं करती ?"

"सरला को तुमने काम काज में इस बुरी तरह जकड रखा है कि बेचारी को पलक मारने की तो फुर्सत ही नहीं मिलती। वह प्रेम करे तो किस समय करे ? विवाह की सोचे तो कब सोचे ?"

"अगर वह सोचना चाहे तो क्या नहीं सोच सकती ?"

"क्यों बेकार की बात करते हो ? असल बात क्यों नहीं कहते ? तुम ही नहीं चाहते कि सरला का ब्याह हो जाये और तुम्हारा काम काज देखने वाली चली जाये ?"

"शायद तुम ठीक कहती हो।"

इस बात को सुनते ही नीरू के दिल को ठेस लगी और उसने दर्द महसूस किया। चेहरे का भाव दिल की पीडा करने लगा। उसकी गिरती दशा देखकर आदित्य ने पूछा—"क्या बात है ?"

"कुछ तो नहीं ! घबराने की आवश्यकता नहीं"

जब आदित्य जाने लगा तब नीरजा ने कहा—"तुम्हें याद होगा कि जब हमारा विवाह हुआ था तब ही हमने आरकिड का घर बनाया था तब ही से हम दोनों ने एक साथ मिलकर उसे बनाया था सवांरा है। आज तुम्हें उससे तनिक भी मोह नहीं रहा गया है जो उसको नष्ट कर रहे हो।"

आदित्य हक्का बक्का होकर बोला—"क्या कहती हो। मैं उसे नष्ट कर रहा हूँ। किसने कहा तुमसे।"

नीरजा क्रुद्ध हो कर बोली—"सरला उसके विषय में क्या जानती है। उसे तुमने उसकी देख रेख क्यों सौंपा ?"

"सरला को तुम अनाडी समझती हो ! शायद तुम नहीं जानती कि मुझे जिन मौसा जीने यह फुलवारी का काम सिखाया है वह इसी सरला के ताउजी थे। उनके साथ हर समय और फुलवारी के हर काम में सरला

रही है। वह इस काम में मुझ से भी अधिक चतुर ही नहीं दक्ष भी है"

"अच्छा तो तुम दोनों पुराने साथी हो ?"

"उस समय मैं कालिज की पढ़ाई करता था इस कारण मुझे कम समय मिलता था। मौसा जी सरला को स्वयम् ही घर पर पढ़ाते थे और फुलवारी का काम सिखाया करते थे।"

नीरजा ने बेढंगी शक्ल बनाकर व्यंग किया—"यह बात है ! तब ही उस फुलवारी के काम में तुम्हारे मौसा जी का नाश होगया। सरला के लक्षण ही ऐसे हैं। उसका माथा कैसा चौड़ा है, चाल कैसी उछलकर चलती है ? और औरतों में मर्दों की सी बुद्धि होना कोई अच्छा लक्षण थोड़े ही हैं।

आदित्य ने चौंक कर कहा—तुम्हें हो क्या गया है जो ऐसी बातें कर रही हो ? मौसा जी फुलवारी के काम में जितने दक्ष थे उतना मैंने किसी को नही देखा। यह मैं जानता हूँ कि उन्होंने नाम तो बहुत कमाया मगर पैसा नहीं कमा सके। उसके भी कई कारण थे। क्या तुम्हें याद नहीं कि इस फुलवारी को प्रारम्भ करने के लिये भी पैसा उन्ही ने दिया था। उस समय उनकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी मगर कितना विशाल हृदय था उनका ! भगवान का शुक्र है कि उनके जीवन ही में मैंने अपना ऋण चुका दिया"

इतने में सरला संतरे का रस तैयार कर लाई। नीरजा ने रस लेकर तिपाई पर रख दिया। तब सरला चली गई। उसको जाते ही नीरजा ने अपने पति से पूछा—"तब तुमने सरला से विवाह क्यों नहीं किया ?"

"उस समय विवाह की बात मेरे मन में कभी आई ही नहीं"

"यही तो तुम्हारे जीवन का सार है"

मेरे जीवन का सार तो तुम हो जबसे तुम्हें देखा तब ही से विवाह का विचार

भी आया। अगर तुम्हें न देखा होता तो शायद मैं अभी तक कुआंरा ही रहता। न जाने क्या जादू है तुम्हारे पास ?"

"मेरी समझ में तो सरला भी देखने में बुरी नहीं है"

"सरला कैसी है ! यह जानने की मैंने कभी चेष्टा ही नहीं की"

"सच बताना क्या तुमने उसे कभी नहीं चाहा है !"

"क्यों चाहा क्यों नहीं ? मैं मनुष्य हूँ और एक मनुष्य दूसरे को अवश्य चाहता है। मौसाजी का लड़का तो रंगून में वकालत करता है अतः उन्हें उसकी चिन्ता नहीं थी। उन्हें यही अभिलाषा थी कि उनका बगीचा फल फूलता रहे और सरला हमेशा प्रसन्न रहे। इसी कारण वह चाहते थे कि सरला बगीचे का काम सीख कर उनके बाद सारा काम सम्भाल ले तो ठीक रहे। मगर यह हो न सका। बगीचे का काम करते हुये सरला प्रसन्न चित्त रहती थी मगर जब महाजनों ने बगीचा नीलाम करा डाला तो उसका दिल टूट गया। देखती नहीं हो आजकल कितनी व्यथित और उदास दिखलाई देती है ! वह इसीलिये अपने को काम में व्यस्त रखती है ताकि अतीत की स्मृतियां उसे परेशान न करें"

आदित्य को बीच ही में टोक कर नीरजा ने कहा—"यह बात तो तुम कई बार कह चुके हो कि वह लड़की असाधारण योग्यता रखती है। अब और अधिक उसकी विशेषतायें जानने की मेरी इच्छा नहीं है। अगर मेरी राय मानों तो एक बात करो। उसे बारासत के गर्ल्स कालिज की प्रिंसीपल बन जाने दो। कितनी दफा वहां के लोग अपना प्रस्ताव भेज चुके हैं ?"

"क्यों बारासत से अधिक दूर कोई और जगह का नाम तुम्हें याद नहीं !"

"सुन लो ! मैं पहले से ही बताये देती हूँ कि तुम सरला को जो

चाहो बगिया का वही काम सौंप सकते हो मगर मैं नहीं चाहती कि आरकिड की कुंज का काम उसे बिलकुल सौंपा जाये। मैं ऐसा नहीं सहन कर सकती।"

"इस में बात क्या है ? सो मैं नहीं समझा"

"यह तुम अच्छी तरह समझलो तो ठीक ही है कि सरला आरकिड के बारे में कुछ नहीं जानती है"

तुम क्या नासमझी की बातें करती हो। मौसाजी को आरकिड का बहुत शौक था। वह जावा, चीन तक से आरकिड मंगाते थे और उन्हें अपने बगीचे में लगाते थे। सरला मुझसे भी अच्छा आरकिड का काम जानती है"

यह बात नहीं कि नीरू इस बात को जानती नहीं ? बात स्पष्ट है कि वह यह नहीं चाहती कि आरकिड का घर किसी तरह भी सरला की देख रेख में रहे। उस पर वह अपना ही आधिपत्य रखना चाहती थी। अपने मन की बात स्पष्ट करने के लिये उसने अपने पति को खुले शब्दों में बताया—"हो सकता है कि तुम्हारा ही कहना ठीक हो। मगर कुछ भी हो मैं नहीं चाहती कि उस आरकिड के घर पर जो हमारे दाम्पत्य जीवन की सुखद स्मृति है उस पर सरला की छाया भी पड़े। वह तो केवल मेरा और तुम्हारा ही है और हमेशा रहेगा भी। तुम चाहो तो सारी फुलवारी सरला को सौंप सकते हो मगर आरकिड का घर नहीं। वहीं तो मेरी एक मात्र निशानी शेष है। यह तो नर्स की गति है जो आज बिस्तरे से हिल भी नहीं पाती वरना......"

इतना कहते २ उसका गला भर आया और वह वह बिस्तर पर मुंह छिपा कर सुबकने लगी। उसकी सिसकियों से ही आदित्य उसके हृदय की पीड़ा का अनुभव कर सकता था।

आदित्य आश्चर्य चकित रह गया। उसने एक नजर नीरजा पर डाली

और फिर अतीत की सारी घटनायें सोचकर अपने ऊपर ही खीजने लगा। मन ही मन में सोचने लगा कि मैं भी कितना मूर्ख हूँ जो दस वर्ष तक प्रेम दाम्पत्य जीवन बिताने के बाद भी नीरू के हृदय की बातों को भी समझने में असमर्थ हूँ। मैं तो यही सोचता था कि सरला की सुन्दर देख रेख से फुलवारी की उन्नति देखकर नीरू को सुख मिलता होगा। मगर ऐसी कल्पना भी भ्रम थी। नीरू सरला के काम से भी अप्रसन्न है और उसके यहां रहने से भी। कभी उसने सरला की कार्य शैली और कठिन परिश्रम की तारीफ नहीं की है। हमेशा उसके हृदय में द्वेश की आग जलती रही है। जभी तो उसने कभी मेरी बातों की पुष्टि करके सरला को सराहने की चेष्टा नहीं की है बल्कि उल्टी भर्त्सना ही की है। कल की सी बात आज भी याद है कि जब मैंने कहा था कि सरला ने कामिनी लता लगाने में जो कुशलता दिखायी है वह काम उतनी कुशलता से मैं भी नहीं कर पाता। तब इस बात के उत्तर में नीरू ने अपने मन के द्वेषभाव के कारण ही कहा था 'किसी को अधिक ऊंचा उठाना तुम्हें शोभा नहीं देता। कामिनी लता लगाना कोई असाधारण काम तो है नहीं।'

विचार श्रृंखला में आदित्य उन घटनाओं को भी नहीं भुला सका जब अगर सरला किसी काम में जरा सी गलती करती थी तो तिल को ताड़ बनाकर नीरजा कई दिन उस गलती को लेकर ही शोर मचाती रहती थी। वह सरला को नीचा दिखाने के लिये पुस्तकों से अजीब २ फूलों के नाम रट डालती थी और जब वह नाम याद हो जाते तो उन फूलों के नाम सरला से पूछती। अगर सरला न बता पाती तो हमेशा यही कहती कि तुम्हारा फूलों के विषय में ज्ञान अधूरा है और अगर सही नाम बता देती तो कहती इस साधारण नाम को कौन नहीं जानता। हरिया भी इसे बता सकता है। इसको बता देना तो कोई तारीफ का काम नहीं।

बहुत देर तक पुरानी घटनाओं और नीरू के बर्ताव को लेकर

आदित्य सोचता रहा। तब उसने नीरू को सांत्वना देने की गरज से और झगड़ा समाप्त करने के लिये नीरजा के सिर पर प्रेम पूर्वक हाथ फेरते हुये बोला—"मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे हृदय को किसी तरह का जरा भी आघात लगे। जो तुम चाहती हो वही मैं करने को तयार हूँ ताकि तुम प्रसन्न रह सको। क्या तुम यह चाहती हो कि सरला को मैं बगिया के काम से दूर ही रखूँ ? अगर ऐसी ही इच्छा है तो मैं यही करने को तयार हूँ।"

नीरू ने पति का हाथ झटकते हुये कहा—"मुझे फुसलाने की जरूरत ही क्या है। मेरी चिन्ता करने की तुम्हें आवश्यकता ही क्या है! बगिया के मालिक तुम हो, मैं उसमें दखल देने वाली कौन होती हूँ।"

"क्या बात करती हो नीरू ? मेरे और तुम्हारे बीच बटवारे और हिस्से की बात मेरी समझ में नहीं आयी। हम दोनों के बीच बटवारे और हिस्से की बात शोभा नहीं देती। मैंने कब तुमसे कहा है कि बगिया मेरी है? तुम क्या मुझसे अलग हो। क्या तुम पर मेरा कोई अधिकार नहीं ?"

"अब मुझ पर बेकार क्यों अपना अधिकार दिखाते हो ? मेरे पास रह क्या गया है। मैं अपाहिज होकर जब से रोग शैय्या पर पड़ी हूँ और इस काबिल भी नहीं रही हूँ जो तुम्हारी कुछ भी सेवा कर सकूँ तो अब मुझ पर अधिकार जामने से तुम्हारी कुशल सरला की होड़ कैसे कर सकती हूँ। मुझ में रखा ही क्या है ?"

"नीरू मैं यह नहीं समझ सकता कि इस बार सरला के आने से तुम अप्रसन्न क्यों हो ! जब तुम बीमार नहीं हुयीं थीं उसके पहले तुमने कितनी ही बार सरला को बुलाकर बगीचे के बारे में उससे सलाह मशविरा किया था। क्या तुम्हें वह घटना याद नहीं जब तुमने बिजौरा के साथ सन्तरे की कलम लगाकर मुझे ताज्जुब में डाल दिया था ?"

"भूल जाओ उन बातों को। तब सरला को अपनी विद्वता का

इतना गर्व था ही कहां ? आज तुम भी उसके गुणों को बखूबी देख रहे हो और उनके विश्लेषण भी करने में नहीं चूकते हो। आज तुम यह कहते भी नहीं थकते कि फुलवारी के कामों को मुझ से अच्छा जानती है। आरकिड के बारे में उसका ज्ञान अद्वितीय है। यह तुलना पहले कभी तुमने नहीं की। अब मेरे साथ उसकी तुलना करने से लाभ ही क्या। मैं रोगी हूँ और किस बूते पर उससे होड़ लगाकर जीतने की इच्छा करूं ! सरला सच ही तुम्हारी निगाहों में जम गयी है। वह है भी इसी योग्य भी।"

"मैं नहीं जानता था कि मेरी नीरू का हृदय इतना विषाक्त भी हो सकता है ! तुमने यह सब कुछ कहा है इसकी मुझे स्वप्न में भी कल्पना नहीं थी"

मैं बदल गयी हूँ यही तो तुम्हारी कल्पना मुझे मारे डाल रही है। तुम विश्वास रखो कि मैं वही हूँ जो पहले थी। जिस दिन से मैं विवाह होकर इस घर में आयी और तुम्हारी इस बगिया को देखा उसी दिन से मैंने अपना अस्तित्व भुला दिया। वरना क्या तुम समझते हो कि इस उपवन के साथ मुझे द्वेष न होता ? मैंने अपने को पूरी तरह मिला कर उपवन ही में रखा और हर समय पूरी तरह उसकी साज संवार करती रही। मैंने साधना की और स्वयम को इस बगिया ही में मिला दिया। मैं अब दावे से कह सकती हूँ कि बगिया ही मेरी आत्मा है। मुझ में और बगिया में कोई भेद नहीं है। मगर तुमने सब कुछ जानते हुये भी यह बात एक दम भुला दी है।"

क्या कहती हो ? मैंने तुम को भुला दिया है ? अगर तुमको ही भुला दूं तो मेरे पास याद रखने को धरा ही क्या है ?"

"मुझे यही तो दुःख है कि तुमने मुझे याद रख कर भी भुला देने वाला काम किया है। तुम जानते हो कि यह फुलवारी मेरी प्राण है तब तुमने मेरे प्राणों को किसी दूसरे को सौंपने की हिम्मत कैसे की ! जो चीज

मेरी हो क्या तुम सहज ही उसे और स्त्री को दे सकते हो ? मैं नहीं जानती थी कि मेरी ही आखों के सामने मेरा सर्वस्व तुम इतनी आसानी से सरला को सौंप कर मुझे झूठे प्रलोभन देते रहोगे !''

"तुम बताओ क्या मैंने सरला को फुलवारी की देख रेख का काम सौंप कर गलती की है !"

"गलती ही नहीं तुमने मेरे प्राण निकाल लिये हैं"

"अगर तुम मेरी जगह होती तो क्या करतीं !''

मैं क्या करती ! जो कुछ मैं करती वह तुम कल्पना भी नहीं कर सकते। मैं कारबार, फुलवारी रोजगार सब की चिन्ता न करती। हरगिज कभी किसी स्त्री को बगिया का काम न सौंपती चाहे सब चौपट ही क्यों न हो जाता। मैं हरगिज ऐसी औरत को तुम्हारे पास भी न आने देती जिसे अपनी कार्य कुशलता और निपुणता पर गर्व होता। मैं ऐसा नहीं करती जैसा तुमने मेरा अपमान कराया है। यह सब क्यों तुमने किया इस बात को मैं बहुत अच्छी तरह जान गई हूँ। यद्यपि चलने फिरने की शक्ति मुझ में नहीं है मगर दिमाग से सब बातें भली प्रकार सोचने की क्षमता मेरे पास अभी है।''

"तुमने क्या सोचा है जरा मैं भी सुनूं !"

"तुमने सरला को हमेशा से चाहा है। उससे तुम्हें प्यार है और आज मेरी इस दशा का लाभ तुमने उठा कर अपने हृदय की दबी हुई प्रेम भावना को उभरने का पूरा मौका दिया है।"

सिर पर हाथ रखे आदित्य गहरी चिन्ता में बैठा रहा। उसके हृदय में द्वन्द हो रहा था। बड़ी कठिनता से मन को शान्त करके वह बोला—"मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं। दोष तो मेरा अपना ही है कि दस साल के विवाहित जीवन में तुम्हें अपना न बना सका। इतनी हिल मिल कर भी अगर तुम ऐसी भावनायें मेरे प्रति रख सकती हो तो मैं इनकी

सफाई देना उपयुक्त नहीं समझता। मैं अपनी इस कमजोरी के लिये आज ही से प्रायश्चित करूंगा। तुम्हारा घर त्यागे देता हूँ। सामने बगिया में जो काठ की बनी हुई कुटिया है अब वहीं रहूँगा। शायद मेरे तुम्हारे और सरला के पास से दूर रहने पर तुम्हारी धारणा बदल जाये और तुम समझ सको कि मैं विश्वास घाती हरगिज नहीं हूँ।"

५

चन्द्रमा जामुन के पेड़ों की कुंजों की ओट से धीरे २ निकलता हुआ आसमान में चमक रहा है। पेड़ों की छाया निर्मल चाँदनी से प्रतिबिम्बित होकर झील की लहरों पर अठखेलियां खेल रही हैं। वासन्ती के पत्ते चाँदनी में चमकने लगे और उसके लाल रंग के फूलों का सौन्दर्य और अधिक निखर आया है। हल्की २ ठण्ड होने के कारण पानी की सतह के ऊपर कोहरा छाने लगा है। वायु शान्त है और झाल के पास की झाड़ियों पर जुगनू टिमटिमा रहे हैं। ऐसी अनुपम छटा में झील के किनारे बने हुये पक्के घाट पर सरला बैठी किसी गम्भीर समस्या पर चिन्तन कर रही है।

ऐसे समय रमेन ने पीछे से दबे पांव आकर कहा—"क्या मैं कुछ बातें कर सकता हूँ।"

भर्राये हुये कण्ठ से सरला ने उत्तर दिया—"अवश्य"

रमेन घाट पर चला आया और सरला के पावों वाली सीढ़ी पर

बैठ गया। सरला ने चौंक कर पांव हटा लिये और आग्रह भरे हुये स्वर में अपने पास वाली सीढ़ी पर इशारा करते हुये कहा—"आओ! यहां बैठो। वहां बैठना शोभा नहीं देता। नाहक क्यों लज्जित करते हो?"

"देवी के चरणों में ही दास को सम्मान मिलता है। रही तुम्हारे बगल में बैठने की बात वह तो समय आयेगा तब देखा जायेगा। अपना हाथ तो बढ़ाओ ताकि विदेशी तरीके पर मैं तुम्हारे प्रति अपना प्रेम प्रदर्शन कर सकूं" मुस्करा कर रमैन ने कहा।

बिना किसी संकोच के सरला ने हाथ बढ़ा दिया। रमैन ने हाथ पकड़ा और प्रेम से चूम कर बोला—"सौंदर्य की देवी का अभिवादन करता हूँ आशा है स्वीकार करोगी।"

तब रमैन ने जेब से अबीर की पुड़िया निकाली और सरला के माथे पर लगा दिया। तब सरला ने चौंक कर कहा—"यह क्या है?"

"कैसी अनजान बन रही हो? क्या तुम्हें यह भी नहीं मालूम कि आज होली का दिन है। उपवन की हर डाल पर बहार आई हुई है। इस बहार भरे मौसम में तुम क्यों उदास बैठी हो? अपने भी मन को प्रफुलित करो। नवीन रंग भरलो अपने जीवन में। मैं जानता था कि तुम्हें अपनी चिन्ता ही कहां है? इसी कारण तो आज बेरक आना पड़ा है"

"बातें बनाना तो कोई तुमसे सीखे। मैं बातों में तुमसे नहीं जीत सकती। अपनी हार स्वयम् माने लेती हूँ।"

"मैं बातें कहां कर रहा हूँ? मैं तो कठोर सत्य कह रहा हूँ। पुरुष बकवादी होता है और जब वह किसी स्त्री के सामने अपनी प्रेम गाथा रोये और स्त्री कुछ भी उत्तर न दे तो उस मूक उत्तर को ही स्त्री की स्वीकृति समझ लेना चाहिये। हटो जरा बगल में तो बैठने दो।"

सरला खसक गयी और तब रमैन सरला की बगल में जा बैठा। थोड़ी

देर तक शान्ति रही। दोनों कुछ न बोले। तब सरला ने कहा—"रमेन! क्या तुम बता सकते हो कि जेल कैसे जाया जा सकता है?"

"क्या खूब सवाल है? जेल जाने के हजारों तरीके हैं और सब एक से एक आसान हैं। हां अगर तुम यह पूछती कि जेल से कैसे बचकर रहा जा सकता है तो शायद मैं उत्तर दे पाता। गोरी चमड़ी वालों ने जेल को भगवान का मन्दिर बनाकर हम भारत वासियों के लिये उसके द्वार चौपट खोल रखे हैं।"

"तुम मजाक मत समझो। मैं अपनी व्यथाओं से छुटकारा नहीं पा सकती हूँ"

"तब तुम अपने हृदय की बात साफ २ कहो। इस तरह पहेलियां मत बुझाओ।"

"क्या बताऊं? मन की व्यथा तो कहनी ही पड़ेगी। अगर तुम भैय्या का चेहरा देख लेते तो शायद तुम्हें मुझसे कुछ भी पूछना न पड़ता।"

"मुझे भी कुछ दाल में काला ही नजर आरहा है। आखिर बात क्या है?"

सरला ने व्यथित होकर कहना प्रारम्भ किया—"आज सन्ध्या समय मैं बैठी हुयी विदेशी पत्रिका के पन्ने पलट रही थी। नई सूझी थी वह फूलों के विषयों पर इसी समय भैया आ पहुंचे। वैसे तो हर रोज वह सन्ध्या की चाय के समय मुझे अपने पास बुला लेते थे और दिन भर का हाल पूछते थे। तब हम दोनों ही फुलवारी की विविध समस्याओं पर विचार करते और और अगले दिन के लिये विचार करते। आज उन्होंने मुझे नहीं बुलाया और सच पूछो तो मैं उनकी बुलाहट की प्रतीक्षा ही में थी कि वह स्वयम् आ पहुंचे। उनके चित्त की अशान्ति उनके चहरे से साफ मालूम हो रही थी और उनके भाव भी स्पष्ट बता रहे थे कि उनके हृदय में भयंकर उथल पुथल मची हुयी थी। वह बरामदे में कुछ देर सोचते हुये से चहलकदमी करते

रहे। उन्होंने फुलवारी पर नजर भी न डाली, मालियों को काम करते हुये देखकर भी नहीं टोका इससे मुझे स्पष्ट पता लगगया कि वह जीवन से उदासीन हो चुके थे। कुछ सोच विचार कर वह मेरे पासवाली कुर्सी पर आ बैठे। उन्होंने मेरे हाथ वाली सूची को देखा और फिर कुछ सोच विचार कर वापिस चले गये और जब मैंने पूछा भी क्या बाग नहीं चलेंगे तो केवल यह कह कर कि नहीं। कहीं और जाना है कह कर चले गये। उनके मन में बहुत व्यथा थी जिसका अन्दाजा मैं उनके शब्दों से पूरी तरह लगा सकी।"

"क्या तुम सोच सकती हो कि आदित्य भैय्या तुमसे क्या कहने आये थे ?" रमेन ने प्रश्न किया।

सरला ने विरक्त होकर कहा—"जहां तक मैं समझती हूँ कि उनका आशय यही था कि मैं उनके पथ में एक भयंकर शूल बनकर रह गयी हूँ। उनकी पवित्रता पर मेरा नाम लेकर कीचड़ उछाली गयी है।"

"सरला, अगर यह बात है तो मेरी एक और परेशानी बढ़ती नजर आरही है"

"वह क्या ?"

"मैं स्वाधीन न रह सकूंगा। तुम मेरे मार्ग का कण्टक बन जाओगी"

"मैं सदा से कण्टक रही हूँ। मां बाप की कंटक बनी तो उन्होंने अपने को छुड़ाकर स्वर्ग की राह ली। ताऊजी ने भी जब मुझे कंटक समझा तो उन्हीं के मार्ग को अपनाया। यहां कंटक बनी हूँ तो भैया पर संकट आगया और अभी तुम्हारी बारी भी नहीं आयी कि तुम तो घबराने ही लगे। विश्वास रखो मैं अब किसी का सहारा लेकर उसका कंटक बनने को तयार नहीं तुम अपनी स्वाधीनता कायम ही रखो। मैं तुम्हारे ऊपर भार स्वरूप होकर नहीं रहूँगी।"

"नहीं यह बात नहीं। मेरा मतलब यह है कि भैया का सहारा छिन जाने

के बाद तुम्हें मेरे सहारे की आवश्यकता होगी जिसके लिये मैं सदैव तयार हूँ। केवल मुझे यही दुःख होगा। कि तुम्हारे कारण मैं जेल जाने का स्वाधीनता खो बैठूंगा। तुम्हारे कारण मुझे मला बनना ही पड़ेगा।"

"तुम क्या करोगे मेरे लिये?"

"जैसा कि अभी तुमने कहा है कि तुम्हारे भाग्य ही में यंत्रणा। लिखी है। मैं तुम्हारे भाग्य के साथ लड़ाई लडूंगा और देखूंगा कि मेरे साथ रहने पर तुम्हारा भाग्य बदलता है या नहीं?"

"सो तो मैं जानती हूँ। मगर पहले मेरी एक बात का स्पष्ट उत्तर दो। एक बात कहे देती हूँ कि अगर तुम्हें मेरी बात बुरी लगे तो उसका मन में बुरा मत मानना।"

"मैं वचन देता हूँ।"

"मेरे अतीत का इतिहास तुम्हें बहुत कुछ मालूम ही है मगर फिर भी अपने मन की व्यथा का भार हलका करने के कारण मैं चाहती हूँ कि एक बार उसे फिर तुम्हारे सामने दोहरा दूं तो ठीक रहेगा।"

"मैं सुनकर प्रसन्न ही होऊँगा।"

"बात यह है कि बचपन ही से मैं आदित्य भैय्या के साथ रही हूँ। मेरे ताऊजी का हम दोनों पर समान स्नेह था और हम दोनों खेलने, खाने, काम में, सदा एक साथ ही दो मित्रों की भांति रहते थे। मेरे ताऊजी ने ही मुझे मेरे माता पिता की मृत्यु के बाद से पाला पोसा था और वह यही चाहते थे। कि मैं उनकी मृत्यु के बाद उनके बगीचे की देखा भाल करूं और उनके बागबानी के हुनर को जीवित रखूँ। वह सब का विश्वास करते थे और उनका जो विश्वास मेरे ऊपर था उससे मैं भी अपरिचित नहीं थी। उन्होंने अपने अनेकों मित्रों तथा रिश्तेदारों को अपना रुपया जरूरत के समय कर्ज भी दे दिया और जब स्वयम् उन पर कर्ज होगया तो वह यही समझते थे कि लोग उनका कर्ज लौटा देंगे तो वह अपना कर्ज आसानी से चुका

लेंगे। मगर उनकी मौत के बाद सिवाय आदित्य भैया के किसी ने भी कर्ज को वापिस नहीं लौटाया और महाजन ने कर्ज वसूल करने के लिये उनका बगीचा नीलाम करवा कर मुझे बे सहारा कर दिया।"

कुछ देर साँस लेकर मरे हुये दिल से सरला ने फिर कहा—"बे सहारा होकर मैं फिर आदित्य भैय्या के पास आ गई। हम दोनों उसी तरह व्यवहार करते रहे जैसा पहिले करते थे। मुझे यह कभी भी ध्यान नहीं आया कि हमारा हिलमिल कर पहले की भांति रहना अब मुश्किल है। मुझे ध्यान भी कभी नहीं आया कि हम दोनों की उम्रें बढ़ चुकी हैं और इस तरह हिल मिल कर रहना मेरे लिये घातक सिद्ध होगा। एक ही झटके में नीरजा भाभी ने मुझे चौकन्ना कर दिया तब मेरी समझ में आया कि मैं सयानी हो चुकी हूँ और मेरा हेल मेल अब कुछ और मतलब रखता है। तब मुझे स्वयम् ज्ञान हुआ अपने यौवन का और अपने सौन्दर्य का। हेल मेल प्रेम प्रतीत होगया है।"

"ठीक ही तो है। बचपन का हेल मेल ही जवानी में प्रेम हो जाता है"

"तुम्हीं बताओ रमेन इसमें मेरा क्या दोष है? मैं किस तरह अपने को धोखा दूं? मेरे पास अब क्या चारा है? आदित्य को........."
कहते २ वह अधीर हो उठी।

रमेन खामोश होकर सोचने लगा।

सरला कहती गयी—"जब तक मैं उनके सामने हूँ और वह मेरे सामने हैं तब तक हम दोनों मजबूर हैं। हां अब एक ही रास्ता है कि मैं उनके मार्ग से हट जाऊं। यह भी टेढ़ी खीर है। जब तक हम दोनों साथ हैं तब तक हम दोनों ही अपराधी हैं"

"किसके?"

"नीरजा भाभी के"

"क्या बात करती हो ? मैं यह सब नहीं मानता। तुम दोनों जब बालक ही थे तब कहां थीं तुम्हारी नीरू भाभी ? वह आकर उस समय ही तुमको विलग करतीं न ! तब तो उनका कहना ठीक था।"

"जरा सोचो तो......"

इसी समय पीछे से आदित्य ने पुकारा "रमेन"

"हां भैय्या"

आदित्य उन दोनों के पास आ पहुंचा। उसने रमेन से कहा—"तुम्हारी भाभी ने तुम्हें अपने कमरे में बुलाया है। अभी रोशनी ने मुझ से कहा है।"

रमेन नीरजा के कमरे की ओर चला गया।

सरला ने भी जाना चाहा तब आदित्य ने उसको हाथ पकड़ कर रोकते हुये कहा—"तुम ठहरो सरला। मैं तुमसे कुछ बातें करना चाहता हूँ।"

सरला ठहर गयी। उसने आदित्य के चेहरे के भावों को पढ़ कर सहज ही जान लिया कि वह मन ही मन अपने विचारों से द्वन्द कर रहा है। उसके चहरे की मुस्कान उड़ चुकी थी और वह पर कटे हुये पक्षी की भांति तड़फ रहा था। उसके जीवन में विष घोल दिया गया था और इसकी पीड़ा उसे असह्य हो रही थी।

मन कड़ा करके आदित्य ने कहा—'सरला! तुम तो जानती ही हो कि हम दोनों का जीवन सदा से एक रस होकर रहा है। हम विलग हो सकते हैं? यह सोचना भी भूल है।"

बात काटते हुये सरला ने कहा—"पेड़ की विभिन्न शाखाओं को एक दूसरे से बिलग होना ही पड़ता है।"

"वह विलग कहां हैं ? उनका तना तो एक ही है। खाना पानी तो उन्हें तने से ही प्राप्त होता है। जब उनका जीवन एक रस है तो विलगता

कैसी ? यह विलगता संसार की नजरों में है मगर वास्तव में विलगता है कहां ? खैर मूल बात यह है कि मुझे आज जो धक्का लगा है उसकी कल्पना मैंने कभी नहीं की थी और मैं इसे कदापि भूल भी नहीं सकता।"

"मैं जानती हूँ इसका असर तुम्हारे दिल पर क्या पड़ा है। अगर तुम ने भी कहते तो मैं इसका अनुमान लगा चुकी थी। मगर होनहार होकर रहती है।"

"क्या तुमने इस धक्के को सह लिया है ?"

"सहने के अलावा और चारा ही क्या है ?"

"लोग ठीक ही कहते हैं कि स्त्रियों में पुरुषों की अपेक्षा सहन सक्ति अधिक होती है।"

इसके सिवा स्त्रियों के पास रखा ही क्या है ? सदा से वह पुरुषों द्वारा सताई गई हैं और वह पुरुषों के अत्याचारों को सहती आयी हैं। धीरज उनका सहारा है और आंसू उनके अन्तिम अस्त्र हैं। जब सह नहीं सकतीं तो कुछ रो लेती हैं। रोने से शान्ति मिल जाना स्वाभाविक है।"

मुझे तुमसे कोई विलग अब कर सकेगा ? यह अब कदापि बर्दाश्त नहीं कर सकता। हम दोनों सदा से एक ही रहे हैं और अब सदा एक ही होकर रहेंगे "कहते २ वह उत्तेजित हो उठा।

सरला ने उसके कन्धे पर हाथ फेरते हुये सांत्वना दी और तब समझाते हुये कहने लगी—"जरा शान्त होकर सोचो। संसार ने कब और किस को शान्ति से रहने दिया है। व्यथा और संघर्षों का नाम ही तो जीवन है। अतः इन बातों के लिये अगर दोष दूं तो किसे दूं ?"

"क्या तुम संसार का यह निन्दनीय व्यवहार सहन कर सकोगी ? मेरी राय से तुम्हें यह सब सहन नहीं हो सकेगा ?"

सरला मौन रही। अपने भावावेश को आदित्य रोक न सका। वह कहता ही चला गया।

"कल की सी बात की तरह आज भी मुझे अच्छी तरह याद है कि तुम्हारे बाल सदा से ही सुन्दर रहे हैं और तुम्हें अपनी वेणी पर सदा से गर्व रहा है। बचपन में एक दिन जब मैं तुमसे खीज उठा था तो मैंने दोपहर में सोते समय तुम्हारी वेणी काट डाली थी! केवल इस वास्ते कि तुम खीजकर रो उठो। सोकर जब तुम उठीं और अपने बालों को कटा पाया तो क्या तुम्हें याद है कि तुम कितनी नाराज हुयी थीं! मगर न जाने तुम्हें मेरे ऊपर गुस्सा क्यों नहीं आया। मौसी जी ने जब तुम्हारे कटे हुये बाल देखे तो प्रश्न किया मगर तुमने मेरी शिकायत न की वरन यही कह कर टाल दिया कि गर्मी बहुत लगती थी इस कारण तुमने बाल काट फेंके। तुम्हीं बताओ कि सरला क्या मैं उन सुख दिनों की स्मृतियां केवल इसलिये भुला दूं कि तुम मेरी न हो सकीं! मैं तुम्हें न तो कभी भूल ही सका हूँ और न भूल सकने की क्षमता ही रखता हूँ।"

सरला ने मुस्कुरा कर कहा—"तुम भी खूब हो आदित्य। तो क्या इस घटना से तुमने यह नतीजा लगाया था कि क्षमाशील हूँ? नहीं यह बात नहीं। मैंने तुम्हें अपनी इस युक्ति से और अधिक परेशान कर दिया था। अगर मैं तुम्हारी शिकायत कर देती तो तुम शायद उतने परेशान न होते जितने कि मेरे चुप रहने के कारण हुये!"

"तुम्हारा कहना यथार्थ है सरला। उस समय सच ही तुमसे अधिक मुझे तुम्हारे बालों का दुःख था। मैं अपनी मूर्खता पर इतना लज्जित हो गया था कि अपना मुंह कई दिनों तक छिपाये फिरता रहा और हमेशा यही चाहता था कि उस समय तक मेरा तुम्हारा सामना न हो जब तक तुम्हारे बाल ज्यों के त्यों ही न बढ़ आयें। मगर तुम थीं कि मेरे कमरे में आयीं मुझे उल्टा मनाया और मेरे लाख मना करने पर भी

जबरदस्ती हाथ पकड़कर खीचती हुयी अपने साथ बगीचे में काम करने को लिवा ले गयीं और मेरे साथ उतनी ही आत्मीयता का बर्ताव करती रहीं जैसे कुछ हुआ ही नहीं था। क्या तुम उस विकट आंधी वाले दिन को भूल गयी हो जिसमें मेरी झोंपड़ी का छप्पर उड़ गया था?"

"गुजरी हुयी बातों की याद अब ताजा करने का लाभ ही क्या है? जो हो चुका है वह लौट नहीं सकता" इतना कहकर एक सांस लेकर सरलाने उठना चाहा।

आदित्य सरला से विलग होना नहीं चाहता था अतः उसके हाथ को पकड़कर रोकते हुये बोला—"सरला! कुछ देर और ठहरो। तुम्हें मेरे पास ही रहना होगा। तुम जाओगी नही? गृहस्थ जीवन के दस साल तुम जानती हो मैंने कितनी यातना से भुलाये हैं! हमेशा ईर्षा और डाह? यह सब क्यों हैं? किस बात पर तमसे नीरू को इतनी ईर्षा है? क्या वह अपनी दस साल के दम्पति जीवन को हम दोनों के तेईस साल के प्रेम से अधिक मान देती है? जब से हम दोनों साथ रहे हैं तब से ही हमारे मन मिल रहे हैं? वह क्यों अलग करना चाहती है?"

"पिछली बातें तो मुझे इतने महत्व की दिखाई देती नहीं। मगर एक बात मेरी समझ में नहीं आती है कि अब इस समय की ऐसी कौनसी बात है जो इस ईर्षा और डाह का कारण हुई? हम तुम हमेशा अच्छा बर्ताव करते रहे हैं और इसी वास्ते मैं चाहती हूँ कि हमारे सम्मुख सारी बातें स्पष्ट ही होनी चाहिये।"

कुछ देर तक शान्त रहने के बाद आदित्य ने उत्तर दिया—"हर चीज स्पष्ट है। मैं मन में अच्छी तरह से जान रहा हूँ कि तुम्हारे बिना मेरा जीवन मेरा जीवन नीरस और बेकार है। जबसे मैंने यौवन में पदार्पण किया है तब से तुम्हें सदा अपनी नजरों के सम्मुख ही पाया है और अब

मैं नहीं चाहता कि जीवन के इन क्षणों में तुम मुझसे विलग होकर रहो। ऐसी मेरी धारणा है और धीरे २ विश्वास हो चली है।"

जो कुछ तुमने कहा है उससे मुझे दुःख ही हुआ है इसलिये मैं चाहती हूँ कि अधिक इस बात पर जोर देकर तुम मेरे दुःख को और अधिक न बढ़ाओ तो अच्छा है। कुछ सोचने समझने का मौका तो दो।"

"तुम्हारी बात से मैं सहमत नहीं। पछतावा करने से स्थिति में सुधार नहीं हुआ करता। जब से हम दोनों ने जीवन क्षेत्र में पदार्पण किया उस समय हम अंजाम से वाकिफ नहीं थे। प्रतीत के स्नेह बन्धनों को जड़ से उखाड़ फेंकने की क्षमता मुझमें तो है नहीं ? हो सकता है तुम यह काम आसानी से कर सकती हो।"

सरला ने विनीत स्वर में कहा—"मुझे अब और अधिक कमजोर मत बनाओ। मैं इस परिस्थिति से उद्धार किया किया चाहती हूँ मगर तुम्हारी यह बातें मेरा मार्ग और अधिक संकीर्ण कर रही हैं।"

आवेश में भर कर आदित्य ने सरला के दोनों हाथ अपने हाथों में लेलिये और बोला—"सरला ! तुमको मैंने सदा से प्रेम किया है और आज तक करता रहा हूँ। मैं नहीं चाहता कि तुम उद्धार का रास्ता तलाश करती हुयी मेरे पास से अलग चली जाओ। तुम्हारा वह प्रेम जो एक अंकुर की भांति मेरे हृदय में फूटा था आज वह पौधा बनकर मेरे हृदय में झूम रहा है। मैं तुम्हें अपने पास से कभी विलग न होने दूंगा।"

"बस अब और अधिक कह कर मेरे हृदय को ठेस पहुँचाने की चेष्टा मत करो। आज रात मुझे सोचने भर का मोका तो दो। मैं तुम्हारी बातों को सुनकर परेशान हो चुकी हूँ।"

"मेरी अच्छी सरो ! मैं किन शब्दों में तुमसे क्षमा की प्रार्थना करूं ? मैंने तुम्हारे प्रेम को पहचानने में गलती की और उस गलती ही में स्वयम्

को विवाह सूत्र में बांध डाला। पर तुमने प्रेम को अन्त तक निवाहा और अभी तक विवाह नहीं किया। क्या मैं यह नहीं जानता कि अनेकों वर तुमसे विवाह करने को लालायित रहे। मगर तुम वह प्रेम जो एक बार मुझे दे चुकी थीं किसी और को न सौंप सकी और आज तक कुमारी ही रहीं।"

सयंम धारण करके सरला ने कहा—"नहीं यह बात नहीं। ताऊजी ने मुझे बगीचे को सौंपा था इस कारण ही मैंने विवाह करना ठीक नहीं समझा। वरना मैं......।"

"क्यों मुझे भुलावा देना चाहती हो? मैं जानता हूँ कि इस सब की जड़ में था तुम्हारे हृदय में मेरे प्रति प्रेम की भावना। मैं पति हो गया अगर तुमने अपने प्रेम की आन को आज तक निभाया है। मुझे इस का खेद है कि तुमने मुझे पहले ही क्यों नहीं चेता दिया? वरना यह नौबत आज नहीं आती।"

"बेकार अपना दिमाग खराब करने से लाभ क्या है? जो कुछ हो गया है वह लौटाया नहीं जा सकता। बेकार इतना परेशान होने से लाभ ही क्या है? अच्छा कल जैसा होगा वैसा तय करेंगे।" सरला ने कहा।

"अच्छा। जैसी तुम्हारी इच्छा। मगर मैं चाहता हूँ कि अपनी निशानी तुम्हारे पास छोड़ता जाऊँ।"

आदित्य ने अपने पास से नाग केशर फूलों का एक गुलदस्ता निकाला। यह छोटा सा गुच्छा बहुत ही सुन्दर था। हाथ में लेकर आदित्य बोला— "मुझसे यह बात छिपी नहीं है कि नाग केसर तुम्हें बहुत अच्छा लगता है अगर बुरा न मानो तो तुम्हारी साड़ी के पल्ले पर इसे लगाने का साहस करूँ?"

सरला ने मौन स्वीकृति दे दी। तब आदित्य ने प्रेम पूर्वक वह फूलों

का गुच्छा सेफ्टीपिन की सहायता से उसके कंधे के पास साड़ी में लगा दिया और हसरत भरी निगाह से उसे ताका। सरला उठ कर जाने को तयार होगई तब उसने उसके दोनों हाथ पकड़ कर प्रेम से उसके चेहरे को देखना प्रारम्भ किया।

सरला के हृदय में तूफान उठा और जब वह उसे दबा न पाई तो आदित्य के हाथों से छूट कर अपने कमरे की ओर भाग खड़ी हुयी। आदित्य शान्त खड़ा रहा और एकटक उसे देखता रहा और जब वह उसकी आँखों से ओझल होगई तब वहीं धार पर बैठ कर शून्य की ओर ताकता रहा और सोचता रहा।

नौकर ने आकर रसोई तयार होने की सूचना दी।

"मुझे आज भूख नहीं है" इतना कह कर वह पुनः विचारों में पड़ गया।

६

नीरू के कमरे के द्वार में से झांक कर रमेन ने कहा—"भाभी! मुझे बुलाया था?"

आंसुओं को पीकर रूंधे हुये गले को साफ करती हुयी नीरूने कहा—"आओ लालाजी"

वातावरण पूर्ण रूपेण शान्त था। कमरे में अंधकार छाया हुआ था नीरजा अपने तकियों के सहारे अधलेटी पड़ी थी। उसके तकिये के पास वही गुलदस्ता पड़ा था जो आदित्य उसे दे गया था। खुली हुयी खिड़की

में से चान्दनी कमरे में आकर उसके पलंग के सिरहाने पड़ रही थी और सामने के दृश्य को स्पष्ट कर रही थी। बगिया में दूर आरकिड का घर दीख रहा था। मन्द समीरक झकोरों से पेड़ों के पत्ते झूम रहे थे और अमराईयों के बौरों की मन्द सुगंधि वायु को सुवासित कर रही थी। दूर लोगों के गाने की आवाज सुनायी पड़ रही थी और कभी २ कोयल की मीठी तान भी सुनयी दे जाती थी। पलंग नीचे के एक थाली में कुछ मिठाई और अबीर रखा था। वातावरण की शान्ति से यह प्रगट होता था कि रोगी के आराम में विघ्न न पड़े इस कारण सब लोग शान्त ही थे।

पलंग के पास ही रमेन ने कुर्सी खींचली और बैठ गया। नीरजा अधिर थी। अभी रोकर चुकी ही थी मगर रमेन के सामने अपनी यह कमजोरी प्रगठ नहीं करना चाहती थी इस कारण कुछ देर तक बोली नहीं और अपने मन को स्थिर करने की चेष्टा करने लगी। अर्न्तद्वन्द को दबाने की चेष्टा में वह अपनी मुठिया बांधने लगी और उसकी मुठियों में लेबरनम के जो फूल थे वह सब पिसकर रह गये थे।

अपनी मनोदशा को संभालने के बाद नीरजा ने एक पत्र निकाल कर रमेन के हांथ में दिया। पत्र आदित्य का लिखा हुआ था। उसमें लिखा था

"दस साल के दाम्पत्य जीवन में हम दोनों एक दूसरे के इतने सन्निकट रहे है कि जीवन का कोई भी क्षेत्र हम लोगों के लिये अनिभिज्ञ नहीं रह पाया है। हम दोनों एक दूसरे के हर राज से परिचित हैं और शायद ही ऐसी कोई बात रही हो जिसे हम दोनों न जानते हों। हमारे बीच कोई राज नहीं है। इस बात को समझते हुये भी तुमने मेरे चरित्र पर जो सन्देह किया है वह मेरी बर्दाश्त के बाहर है! तुम्हारे द्वारा लगाये हुये लाञ्छनों की अगर सफाई दूं तो वह भी मेरे लिये कम लज्जकी बात नहीं। तुम्हारे मन में चोर घुस गया है और उसके ही कारण तुम मेरी हर हरकत को अपनी इसी शक की निगाह से देखती हो और उद्विग्न हो उठती हो।

मैं नहीं चाहता कि तुम्हारी इस रोगावस्था में मैं और अधिक तुम मेरे कारण उद्विग्न हो जाओ अतः इस सकंट को टालने के लिये मैंने यही उचित समझा है कि तुम्हारे सामने आने की चेष्टा ही न करूं। रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी। मैंने तुम्हारी हार्दिक मनोइच्छा को भी समझ लिया है कि तुम यही चाहती हो कि सरला को अपने घर से विदा कर दिया जावे। बहुत कुछ सोचने के बाद मैं इसी परिणाम पर पहुंचा हूँ। सरला को घर से दूर करने का मैंने इसीलिये फैसला कर लिया है कि तुम्हें चैन आ जाये। मगर मौसाजी के अहसानों का बदला चुकाना भी मेरे लिये उचित है क्योंकि उनकी ही सहायता से मैं आज जैसा भी हूँ वैसा तुम्हारे सम्मुख हूँ। वर्ना कहीं तीस रुपये मासिक पर क्लर्की करके जीवन यापन करता होता। ऐसी अवस्था में सरला को बेसहारा छोड़ना मेरे लिये उचित नहीं। मैं यह अधर्म नहीं कर सकूंगा।

बहुत सोच विचारने के बाद ही मैंने तय किया है कि मैं फूल और सब्जियों के बीज बेचने का कारबार और प्रारम्भ कर दूं। इस कार्य के लिये मानिकतल्ला में बगीचा और मकान मिल सकता है। यह काम मैं सरला के सुपुर्द कर देना चाहता हूँ। समस्या केवल यह है कि काम प्रारम्भ करने के लिये धन की आवश्यकता पड़ेगी सो नकद रुपया मेरे पास इस समय तो है नहीं इसलिये तुम्हारे सामने प्रस्ताव रखने का साहस कर रहा रहा हूँ कि अगर तुम्हारी सम्मति हो तो मैं अपना मकान और बगीचा गिरवी रखकर धन का इन्तजाम कर लूं। तुम्हें शायद मालूम है कि जब मैंने काम प्रारम्भ किया तो सरला के ताऊजी ने इस बगीचे के लिये कई हजार रुपये बिना ब्याज उधार दिये थे और यह भी मैं जानता हूँ कि कुल रुपया उनके पास नहीं था अतः उन्हें मेरे लिये कुछ रुपया कर्ज भी लेना पड़ा था। बीज, पौधे, औजार, घास काटने की मशीन आदि चीजें तो उन्होंने बिना किसी मूल्य के मुझे देदी थीं। अगर

वह मेरी इतनी सहायता न करते तो तुम क्या समझती हो कि मैं इस योग्य हो पाता ? मेरी शादी भी तुमसे न हो पाती। कौन अपनी बेटी मुझ जैसे गरीब से ब्याहने का साहस करता ? तुमने एक झपेटे में मुझे चेता दिया है और यह बात सोचने को मजबूर कर दिया है कि सरला को मैंने आश्रय दिया है ? या मैं स्वयम् उसके आश्रय में रहकर आज सुखी सम्पन्न हो सका हूँ ? जिस बात को मैं लगभग भूल ही बैठा था उसको तुमने याद दिला दिया है उसके लिये मैं आभारी हूँ और सदा तुम्हारा उपकार मानता रहूँगा।

तुमने मुझे हमेशा कुछ न कुछ दिया ही है। तुम्हारी यह देन मेरे लिये वरदान बनकर सदा मेरे दिल में घर किये रहेगी। सरला को मैं जंजाल समझ स्वयम् ही उससे छुटकारा पाने की चेष्टा कर रहा था मगर शायद अब ऐसा न कर सकूंगा। उनका ऋण मुझे मजबूर कर रहा है कि मैं उनके किये हुये ऐहसानों को अच्छी तरह चुका दूं। आज यही वेदना मुझे व्यथित कर रही है और सदा से करती रही है और अगर मैं उचित रूप से चुका न सका तो शायद जीवन पर्यन्त करती ही रहेगी।"

रमेन ने आदित्य के पत्र को बार २ पढ़ा और शान्त होकर सोचने लगा।

नीरजा ने व्यथित होकर पूछा—"तुम अब क्या कहते हो लालाजी ?"

वह अब भी शान्त रहकर सोचता ही रहा।

नीरजा का आवेश बढ़ा अतः वह अधिक दुखी होकर बिस्तरे पर कटे हुए पेड़ की तरह लुढ़क गई और अपना सिर धुनकर इस तरह विलाप करने लगी—"मुझसे बहुत अन्याय हुआ है ! हाय राम मैं अपनी गलती को कैसे सुधारूँ मगर मुझे दुःख तो इस बात का है कि तुम लोगों में से कोई भी यह न समझ सका कि किस कारण मेरे दिमाग में यह बातें उपजी हैं !

तुम लोग मुझे सुधारने की चेष्टा करते या उन बातों का सुधार भी कर रहे हो ?"

"इतना दु:ख करने से भाभी तुम्हारी तबीयत और अधिक खराब हो जाने का डर है। जरा होश से काम लो नाहक इतनी व्यथित मत होओ भाभी" रमैन ने ढाढ़स देते हुये कहा।

"इस रोग ने ही तो मुझे चौपट कर दिया है मेरी जीवन नैया को इस तरह रोक दिया है। अब किस कारण अपने जीवन की ममता करके रोग से सावधान रहूँ ? हाय ! मैंने पति पर ही अविश्वास किया यह सब करने की क्षमता आई तो कैसे आई मुझमें ? मुझे सबसे अधिक खीज है तो यही है कि इस रोग ने मुझे चौपट कर डाला है। स्वस्थ अवस्था में वह कभी मुझे 'मालिनी' कभी 'वन लक्ष्मी' कभी नीरू कहते आगे पीछे फिरते रहते थे। मगर आज मेरा सुखद जीवन मुझसे कोसों दूर भाग निकला है। उनके हृदय का सारा प्रेम हर समय मेरे ऊपर ही रहता था। कभी सन्ध्या को घर देरी से लौटकर जब मुझे भोजन लिये बैठी प्रतीक्षा में पाते तो 'अन्नपूर्णा' कहते। सन्ध्या समय जब भोजन के उपरान्त वह झील के किनारे टहलते और मैं रकाबी में पान लेकर उन्हें देने जाती तो 'ताम्बूल विहारिणी' कहते। गृहस्थी की सलाह करते समय वह बात २ पर मुझे 'गृहमन्त्री' और कभी कभी प्रेम के आवेश में आकर अँग्रेजी नाम "होम सैक्रेटरी' कहते। वह जीवन मेरा कितना सुखद था। हर समय उनके प्रेम स्रोत मेरे लिए फूट निकलता था और मैं उनके प्रेम उपवन की देवी थी। उस समय उनका मुझ पर जो स्नेह और प्रेम था वह बसन्त के समान यौवन से परिपूर्ण था। आज मैं देखती हूँ कि अनायास उनके प्रेम में पतझड़ आगया है। मैं उनके जीवन की उलझन बन कर रह गई हूँ। यह सब क्यों ? कैसे ?"

इतनी उदास क्यों होती हो भाभी। शीघ्र ही तुम स्वस्थ हो जाओगी। रोग शय्या से उठकर शक्ति तो प्राप्त कर लो। फिर देखना कि तुम्हारी लौटी

हुई सत्ता वापिस लौटती है या नहीं ! तुम पुनः इस रंग महल की रानी बनोगी और अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा अवश्य ही प्राप्त कर लोगी।"

"तुम भी मुझे झूठी दिलासा दे रहे हो लाला जी। मैं डाक्टरों का मत अनेकों बार अपने कानों से सुन चुकी हूँ। उनकी राय जान लेने के बाद भी अगर मैं पुनः अपना खोया हुआ स्थान पाने की लालसा करूँ तो वह मेरी निरी मूर्खता ही होगी। मैं रोगी हूँ मगर मूर्ख नहीं हूँ।"

"क्या कहती हो भाभी ?"

ठीक ही तो कहती हूँ लालाजी। अब मेरे पास रहा ही क्या है ? शरीर था सो भी नहीं रहा।"

क्या मैं यह नहीं जानता कि तुम जिस दिन से इस घर में ब्याह कर आई हो तब ही से तुमने तन-मन से इस छोटी सी गृहस्थी को सँवारने के लिए प्राण-पण से चेष्टा की है। तुमने सदा से सबको कुछ न कुछ दिया है। भय्या को प्रेम दिया, उपवन को नई जिन्दगी दी, गृहस्थी को चेतना दी। हमेशा से तुम कुछ न कुछ देती हो रही हो अब इस समय इतनी संकुचित बनती हो। तुम उदार रही हो अब भी उदार ही रहो। मेरी तो यही इच्छा है। तुमने दाता बनकर गौरव पाया है अब उससे विमुख क्यों होना चाहती हो ? देना ही हमेशा तुम्हारा गौरव रहा है अब उससे हाथ क्यों सकोड़ती हो। उदार रहो और सदैव के लिये अपना यश बढ़ा जाओ !"

"लालाजी। जब तक मैं दाता थी ठीक थी। जिन लोगों को जो कुछ भी मैंने दिया हंसते २ दिया और जो भी गौरव मुझे प्राप्त हुआ है वह मेरे लिये यथेष्ट है। अब मेरे पास जो मेरी अन्तिम निधि है वह मैं स्वयम अपने हाथों से देना नहीं चाहती। मेरे मन में यही एक चिन्ता व्याप्त है। सरला, वही सरला अब मेरी सुरक्षित की हुयी पूंजी को हथियाना

चाहती है। जो मैंने सब कुछ देकर अपने लिये रखी थी उसकी हो जाना चाहती है। क्या यही विधि का विधान था। यही न्याय है विधाता का ?"

अगर मेरी बात का बुरा न मानो तो एक बात कहूँ भाभी! बात कुछ ऐसी ही है कि बिना कहे रहा भी नहीं जाता। और कहने को जी भी नहीं चाहता इसी कारण कहने को मजबूर हो गया हूँ। तुम ही बताओ कि यह तुम्हारा कहां का न्याय है कि जिस वस्तु को अब तुम स्वयम भोग भी नहीं सकती उसे दान करना नहीं चाहती ? तुम सदा देती रही हो इसीलिये तो तुमसे कहता हूँ प्रसन्नचित्त इसे भी दे डालो। वरना तुम्हारे प्रेम पर सदैव के लिये यह एक कलंक बनकर छा जायेगा। त्याग ही तो प्रेम का मूल मंत्र है। तुम स्वयम क्या यह चाहती हो कि तुम्हारी फली फूली गृहस्थी तुम्हारी कँजूसी के कारण बरबाद होकर रह जाये ? तुम अपने जीवन के इन अन्तिम क्षणों में अपनी उदारता को कँजूसी में मत बदलो। मेरी तो यही राय है।"

रमेन की बात सुनकर नीरू बिलख २ कर रोने लगी और रमेन शान्त बैठा उसके हृदय के उठते हुये तूफानों को देखता रहा। आंसुओं से नीरू ने अपने जी का मैल धो डाला और फिर कुछ स्वस्थ होकर वह बिस्तर पर बैठ गयी। कुछ सोच विचार कर नीरजा ने रमेन से फिर कहा—"लालाजी! मैं तुमसे एक भिक्षा मांगती हूँ। ठुकराना मत!"

"कैसी बातें करती हो भाभी। मैं तुम्हारी हर आज्ञा सिर पर धारण करने को तयार हूँ।"

"लालाजी! उलझनों में फँसकर जब मन व्यथा से भर जाता है तो रोने को जी चाहता है। आखों से जो आंसू निकलते हैं वह मन की व्यथा को कुछ देर के लिये अवश्य शान्त कर देते हैं मगर उलझनें ज्यों की त्यों बनी रहती हैं। इसी कारण मैं परमहंस देव के चित्र को टकटकी बांध कर देखती हूँ ताकि उनके ज्ञान की कोई किरण मुझे प्राप्त हो जाये और मेरा

मार्ग सरल हो जाये। गुरु से ज्ञान मिलता है और ज्ञान से मोक्ष। समस्त बन्धनों के कटने के बाद ही मोक्ष प्राप्त होती है। इसलिये ही तो मैं चाहती हूँ कि मुझे मुक्ति का ऐसा मार्ग दिखाओ जिससे मैं अपने इन बन्धनों को काट सकूँ और अपना उद्धार कर सकूँ।"

"यह भी तुमने अच्छा सवाल उठाया ? वह भी मेरे जैसे नास्तिक के सामने। मैं और इन बातों में विश्वास करूं। मैं गुरु, मोक्ष धार्मिक ढकोसलों को एक पाखंड मानता हूँ और मेरा तो अटल विश्वास है कि यह सब बन्धन इतने विकट हैं कि सहज ही इनसे छुटकारा पाना मुश्किल है।"

"तुम्हारा मन तो सागर है मगर मैं इतनी जबर्दस्त हिम्मत कहां से लाऊँ। तुम मेरे मन में उठते हुये तूफानों को इसी कारण नहीं समझ रहे हो। जितनी मैं व्यथित हूँ उतनी कभी नहीं हुयी थी और जितना इस व्यथा सागर से निकलने की चेष्टायें करती हूँ उतनी और गहरी फंसती जा रही हूँ ! मैं कुछ नहीं कर पा रही हूँ।"

"भाभी ! यह स्वाभाविक है। तुम छोटी सी बात लेकर क्यों नहीं विचारतीं। उदाहरणार्थ जब तुम यह सोचती हो कि कोई चोर तुम्हारी निधि को चुरा कर लिये जारहा है तब तुम्हारे हृदय में टीस होती है। क्रोध आता है तुम्हें। मगर इस बात को अगर तुम इस तरह सोचो कि चोर को तुमने यह वस्तु स्वयम ही दी है जिसे वह ले जारहा है तो तुम्हें कुछ भी व्यथा न होगी। तुम्हें उलटी प्रसन्नता होगी कि तुमने चोर पर अहसान किया है। तुम्हारा मन हल्का हो जायेगा। तुम प्रसन्न हो उठोगी और तुम्हारे सामने क्रोध, व्यथा, चोर आदि की कोई उलझन न रह सकेगी और जब उलझन रहेगी तो व्यथा कैसी ? इतना सोच लेने से न तुम्हें गुरु की आवश्यकता ही रह जायेगी और न ज्ञान की। केवल मन में इतना कह लेने से कि 'मेरा अपना है ही क्या ? केवल मेरी आत्मा मेरी अपनी है' तुम्हारे मन को शान्ति आ जायेगी और तुम प्रसन्न हो उठोगी।"

प्रसन्नता से नाचने लगा नीरू का मन और आवेश में आकर वह रमेन से बोली " वाह लालाजी ! तुमने तो मेरे मन को तृप्त करने वाली बात कह डाली। मैं अब तक देती रही हूँ इसी कारण अब तक आनन्द भोगती रही थी और आज जो कष्ट पारही हूँ वह केवल इस वास्ते कि मैं मोह में पड़कर यह दे न सकी। तुमने मेरी आंखे खोल दी हैं। मैं यह भी दे डालूंगी। अब देर कैसी ? तुम उन्हें अभी बुलाओ ?"

"इतनी उतावली क्यों करती हो। अच्छी तरह मन को स्थिर करलो"

"नहीं अब तनिक देर ठहरना भी मेरे लिये असह्य है ! जब से तुम्हारे भैय्या मुझसे यह कह कर गये हैं कि वह इस घर को छोड़कर फुलवारी वाली कुटिया में रहेंगे तब ही से मैं व्यथाओं की चिता में जली जा रही हूँ ! मगर आज मेरे मन का यह भार न हटा तो मैं रात भर चैन न पा सकूँगी। मेरी छाती फट जायेगी। हाँ देखो उनके साथ सरला को भी बुलाते लाना ताकि मैं एक साथ ही अपने मन के चोर को निकाल फेंकूं। तुम देखना मैं कितनी पक्की हूँ। तनिक भी नहीं डरूँगी जो कुछ कहा है पूरा कर दिखाऊँगी।"

"अभी समय नहीं है भाभी तनिक सब्र करो"

"तुम कह रहे हो कि अभी समय नहीं है ! और मैं सोचती हूँ कि कहीं गफलत में समय हाथ से न निकल जाये। तुम अभी बुला लाओ।"

विह्वल होकर नीरू ने सामने टंगी परमहंस देव की तस्वीर की ओर हाथ जोड़े और प्रार्थना की। तब फिर कुछ स्वस्थ होकर रमेन से बोली—
"तुम मेरी एक अभिलाषा और पूरी कर दो लालाजी"

"वह क्या ?" रमेन ने विस्मित होकर पूछा।

"लालाजी ! केवल दस मिनिट के लिये मैं मन्दिर में जाना चाहती हूँ। मुझे वहां जाने से बल मिलेगा हृदय में दृढ़ता आ जायेगी और इसमें नुकसान भी तो कुछ नहीं ?"

"वहां जाने से मैं तुम्हें नहीं रोकूंगा"

नीरू ने आवाज दी "रोशनी"

"क्या है बिटिया रानी" आया ने कमरे में प्रवेश कर प्रश्न किया।

"मुझे तनिक मन्दिर में तो ले चल" नीरू ने उठते हुये कहा।

"तुम्हारे उठने को तो डाक्टर साहब ने मना..."

नीरू ने दृढ़ता से कहा—"तेरे डाक्टर क्या मौत को आने से रोक सकते हैं? अगर मौत को नहीं रोक सकते तो देवता के घर जाने से कैसे रोक सकते हैं?"

रमेन ने आया को समझाया—"आया! तू भाभी को मन्दिर तक लेजा। इसमें कोई बुराई नहीं"

तब आया ने नीरू को सहारा देकर उठाया और फिर सहारा देती हुयी धीरे २ उसे मन्दिर की ओर ले चली। नीरू के जाने के कुछ ही देर बाद आदित्य कमरे में आया और नीरू को कमरे में न पाकर रमेन से बोला— "क्यों? रमेन नीरू कहां है? कहां गयी है वह?"

"कहीं तो नहीं! जरा मन्दिर तक गयी हैं भाभी"

"इतनी दूर? डाक्टर ने तो चलने फिरने को मना ही कर रखी है" व्यग्र होकर आदित्य ने कहा।

"दवा से अधिक गुणकारी होगा उनका मन्दिर जाना। चिन्ता मत करो पूजा करके अभी लौट आयेंगी भाभी"

आदित्य भी आज व्यथित था। जिस समय से उसने नीरजा को पत्र लिखा था वह स्वयम् उलझन में पड़ गया था। वह कुछ भी सोच समझ न पारहा था। वह सरला को अपने पास से हटा देना चाहता था और यही बात उससे कहने भी गया था मगर जब कहने लगा तो उलटी बात कह

गया। झील के किनारे अकेला बैठा सोचता रहा कि वह सरला और नीरू दोनों के प्रति अपराधी है। नीरू से उसने विवाह किया है अतः उसका विश्वास तोड़ना किसी तरह भी उचित नहीं? सरला से वह बचपन ही से प्रेम करता है और इस सत्य को वह बहुत दिन तक छिपाता रहा मगर अब वह इसे अधिक दिन तक छिपाना नहीं चाहता। इन्हीं दो उलझनों के बीच पड़कर वह ऐसा चकरा गया कि दोनों सत्य ऐसे कठोर हैं कि उनमें से किसी भी एक को ठुकराना उसके बस से बाहर की बात है। नीरू को ठुकराकर वह पति के कर्तव्यों के साथ विश्वासघात करना नहीं चाहता था। सरला को ठुकराकर वह स्वयम् को अकेला और असहाय महसूस करता और टूटे हुये दिल को लेकर वह नहीं चाहता था कि और अधिक जीवन यापन करे। दोनों में से एक को प्राप्त करने में उसका हित था मगर किसी भी एक को प्राप्त करने में उसका मतलब हल न होता था। उलझन ज्यों की त्यों बनी रहती थी।"

आदित्य ने रमेन से पूछा—मैं समझता हूँ कि तुम सब बातें जानते हो?"

"हां "रमेन ने उत्तर दिया।"

"आज मैं इन सब विषम परिस्थितियों को हल कर लेना चाहता हूँ। मैं सब उलझनें साफ कर लूंगा।"

"कैसी बातें करते हो। समझदार होकर तुम्हें यह बातें शोभा नहीं देतीं। तुम यह क्यों भूल जाते हो कि तुम किसी के पति भी हो? संसार में रहकर तुम्हें संसार के साथ चलना है। भाभी का खयाल नहीं करोगे?"

"वही तो मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी भाभी और मेरे बीच जो गलत फहमी पैदा हुई है उसे मैं आज साफ कर देना चाहता हूँ। सरला और

में बचपन ही से साथ २ रहे हैं और हम दोनों का क्या सम्बन्ध है ? इसको तुम भी जानते हो ! इसमें हम दोनों का अपराध है ही कहां ?"

"अपराध की बात तो कुछ नहीं।"

"मुझे तो केवल इतना ही कहना कि हम दोनों के सम्बन्ध के मध्य अब तक जो प्रेम छिपा था सो मैं पहले नहीं जान पाया था। उस प्रेम का स्वरूप अब मेरे सामने प्रगट हुआ है। इसमें मेरा कोई दोष नहीं !"

"कौन इसमें दोष बताता है ?"

'आज मैं यही बात स्पष्ट रूप से स्वयम् अपने ही मुंह से कहना चाहता हूँ। मैं छिपाना नहीं चाहता।"

"छिपाने की सलाह तुम्हें किसने दी है ! मगर मैं यह भी उचित नहीं समझता कि तुम उसे इस प्रकार गाते फिरो। रही भाभी से कहने की बात उसके विषय में उतावली करना समझदारी का काम नहीं ! वह जितना जानती है उतना ही उनके लिये काफी है। अधिक उन्हें इस विषय को बताना ठीक नहीं। भाभी इस विषय को लेकर तुमसे क्या कहना चाहती हैं उसे सुनो ताकि उनके कहने के बाद अगर मुनासिब हो तो तुम भी कह सको।"

इसी समय नीरजा कमरे के द्वार पर आ पहुंची। उन्हें अन्दर आता देख रमेन कमरे से बाहर चला गया ताकि पति पत्नि आपस ही में निपट लें।

रमेन के जाने के बाद नीरू कमरे में घुसी और पति के चरणों में आकर लेटने लगी। वह उसके चरणों से लिपट कर दुःख से कातर होकर बिलखने लगी। रूंधे हुए कंठ से बोली—"मैं तुम्हारे प्रति अपराधिनी हूँ ? सच ही मैंने अपराध किया है मगर फिर भी दया की पात्र हूँ। इतने समय तक तुमने मुझे इन्ही चरणों में स्थान दिया है और अब मुझे

इन चरणों से दूर मत करो। पड़ा रहने दो इन्हीं चरणों में।"

आदित्य का हृदय मोम होगया। उसने उसे उठाकर सीने से चिपटाकर सान्त्वना दी और फिर आराम से बिस्तर पर लिटाकर कहा—"नीरू! क्या मैं तुम्हारी व्यथा नहीं समझता!"

नीरू रोती रही। उसके आँसू न थमे तब आदित्य ने प्रेम से उसके माथे पर हाथ फेरकर उसे शान्त करने की चेष्टा की। आवेश में नीरू ने उसका हाथ अपनी छाती पर रखा और पूछा—"तुमने मुझे क्षमा कर दिया या नहीं? अगर तुमने क्षमा नहीं किया है तो मुझे कदापि चैन नहीं मिलेगी। मरने के बाद भी मेरी आत्मा को शान्ति न मिल सकेगी।"

"कैसी बातें करती हो नीरू! क्या हम लोगों में कभी मन मुटाव नहीं हुआ है? मगर इसका यह तो मतलब कभी नहीं हुआ कि हम में मेल हुआ ही न हो। तुम मेरी ही सदा रहोगी।"

"मन मुटाव तो हुये मगर तुम कभी घर छोड़कर नहीं गये। आज तुमने मुझसे रूठकर घर छोड़ने की बात तुमने पहले बार कही है। तुम इतने निर्मोही क्यों हो गये! मेरा तुम्हें बिलकुल मोह न रहा?"

"भूल होगई नीरू। इसके लिए तुम्हें मुझे क्षमा करना ही पड़ेगा।"

तुम भी न जाने क्या कहते हो! तुम ही तो मेरे सर्वस्व हो। जो कुछ भी मेरे पास है वह सब तुम्हारा ही तो है। मेरी ही गलती थी जो मैंने शक किया और उसकी जो सजा थी वही तो मैं पा चुकी हूँ और उसके कारण जो कुछ होना था सो हो चुका। लाला जी, कहाँ गये! मैंने उन्हें सरला को बुलाने को कहा था? न जाने अब तक बुलाकर क्यों नहीं लाये?"

सरला का नाम सुनते ही आदित्य चौंका। वह यह चाहता था कि

इस समय जो कुछ उसे मिल चुका है वह दिल का भार हटाने को पर्याप्त है मगर सरला को चैन कहां ! तब भी उसने सरला को समझाने की चेष्टा की "रात बहुत हो चुकी है सरला को बुलाने की आवश्यकता नहीं ।"

नीरू ने तब कहा—"मुझे ऐसा लगता है कि वह दोनों दरवाजे के बाहर ही खड़े हैं ।"

इतना कहकर उसने तनिक जोर से कहा—"लालाजी ! बाहर ही क्यों खड़े हो ? आजाओ न भीतर ।"

सरला और रमेन कमरे के भीतर चले आये । सरला के पास आने पर नीरू ने बिस्तर पर से उतर कर सरला को प्रेम से लिपटाना चाहा मगर सरला ने पहले नीरू के पांव छू लिये तब नीरू ने सरला को अपने पास बिठा लिया और अपने तकिये के नीचे रखा हुआ मोती का कण्ठहार निकाल कर उसके गले में पहना दिया । आदित्य और रमेन भौंचक्के होकर देखते रहे । हार पहनाकर नीरू ने सरला से कहा—"बहन ! एक दिन मैंने सोचा था कि मेरे साथ यह हार भी मेरी चिता तक जाये मगर अब यही अच्छा है कि मेरी तरफ से तुम यह हार पहने रहो । तुम्हारे भाई साहब जानते हैं कि मैं किन खास अवसरों पर इस हार को पहनती थी सो अब तुम्हारे गले में देख कर वह उन गुजरे हुये दिनों को कम से कम याद तो कर लिया करेंगे ।"

सरला दुःखी होकर बोली जीजी ! मैं इस हार के योग्य नहीं ? मुझे और अधिक शर्मिन्दा मत करो ।"

नीरू समझे हुये थी कि आज पहली बार उसने अपने जीवन की सर्व श्रेष्ठतम् वस्तु को दान करने का जो निश्चय किया है उसकी मुख्य पात्रा सरला ही है अतः उस हार को देकर वह अपने मन की ज्वाला

को शान्त करने की बात सोचती थी मगर इस हार को नीरू के हाथों अपने गले पड़ते देख सरला व्यथित होगयी। पवित्र प्रेम पर अब लांछन लगाया जारहा था अपने सुहाग की वस्तु नीरू सरला को समर्पित कर रही थी जिसका आशय था कि वह अपने पति आदित्य और सरला का गठबन्धन कराने को त्यार थी। सरला नीरू के इस कृत्य से विह्वल हो उठी।

आदित्य ने सरला की व्यथा को समझा अतः वह बोला—"यह हार सरला तुम मुझे वापिस दे दो। मेरे सिवा इसके महत्व को कोई नहीं जानता। मेरे लिये यह अमूल्य है और मैं अब इसे किसी को नहीं दे सकता।"

नीरजा दुखी होगई अत: बोली "मेरी इतनी किस्मत कहां जो सुख की सांस भी ले सकूं। मैं अपना सर्वस्व तुम्हें देकर शान्ति के साथ मरने की कामना करती थी। जब से मैंने यह सुना है कि तुम हम लोगों को छोड़कर कहीं जाना चाहती हो तब ही मैंने निश्चय किया था कि मैं तुम्हें इस घर के बाहर न जाने दूंगी और उसकी निशानी के रूप ही मैंने तुम्हें यह हार दिया है।"

तुमने गलत सोचा है जीजी! मैं इस घर के साथ बन्धकर नहीं रह सकती। यह काम ठीक नहीं।"

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझी?"

'मेरी बात तो स्पष्ट है जीजी। मेरी बात को सच समझो। मैं तुम सबके सामने फिर एक बार स्पष्ट कह रही हूँ कि विधाता ने मुझे जिस वस्तु से वंचित रखा है मैं वह वस्तु सहज ही किसी से दान के रूप में हरगिज न ले सकूंगी। मैं तुम्हारे चरणों में प्रणाम करती हूँ। मैं अब तुम्हारे गृह से जा रही हूँ। तुम सोच न करना यह सब मेरे भाग्य का ही दोष है या मेरे उन आराध्य का है जिनकी मैंने आज तक पूजा की है।"

सरला ने उत्तेजित हो सारी बातें आत्म विश्वास के साथ कह डाली और तेजी से कमरे से बाहर चली गयी। आदित्य स्थिर न रह सका अतः वह भी सरला के पीछे २ ही कमरे से बाहर चला गया। तब नीरू ने रमेन से कहा—"लालाजी ! यह सब क्या होगया ?"

"तुमने उतावली कर डाली भाभी ! इसी वास्ते मैं कह रहा था कि आज रात को यह सब मत कहो"

लालाजी ! मैंने अपने सच्चे हृदय से अपना सर्वस्व उसके हाथों सौंप दिया। क्या इतना भी वह न समझ सकी। मुझे तो यही आशा थी कि वह मेरी बातों से तुष्ट हो जायेगी।"

"वह तुम्हारे अभिप्राय को तो ठीक तौर से समझ गयी मगर उसे इस बात की शंका है कि तुमने जो कुछ भी किया वह सब स्वच्छ मन से किया है। तुम्हारे मन की स्वच्छता पर उसे सन्देह ही रहा।"

"हाय री मेरी किस्मत ! इतना स्वच्छ मन रखने पर भी उसे भ्रान्ति ही रही ! मैं भी कितनी कर्महीन हूँ जो उसके हृदय पर अपनी स्वच्छ हृदयता की छाप न लगा सकी। कौन है जो मुझे अब सहारा दे !"

"घबराती क्यों हो भाभी ! मैं तो हूँ और मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि तुम्हारा सारा संकट अपने ऊपर लेलूंगा। तुम चैन से सो जाओ।"

"नींद की बात कह रहे हो लालजी ? अगर वह इस मकान से फिर चले गये तो केवल मृत्यु ही मुझे सुला सकेगी। अब नींद कैसी !"

रमेन ने कहा—"तो क्या तुम समझती हो कि भैय्या मकान छोड़कर कहीं जा सकते हैं ? हरगिज नहीं इतनी उनकी शक्ति नहीं तुम्हें छोड़कर जा सकें। यह लो नींद की गोलियां और खालो। तुम्हें नींद आते ही मैं जाकर उन्हें लिवाये लाता हूँ। विश्वास रखो।"

नीरू तुनक उठी और बोली—"नहीं लालाजी ! पहले तुम जाकर उन

दोनों को देख आओ वरना मैं खुद उठकर जाऊंगी और चाहे मर ही क्यों न जाऊं ! मरना तो है ही कल नहीं तो आज ही सही ।"

"ऐसा गजब मत करो । मैं जारहा हूँ" यह कहकर रमेन कमरे के बाहर चला गया ।

७

जब सरला ने आदित्य को अपने पीछे आते देखा तो वह ठिठकी और रुककर रुखाई से बोली—"तुम मेरे पीछे क्यों चले आये ? तुम्हें यह सब शोभा नहीं देता और मैं नहीं चाहती कि तुम मेरे साथ इस तरह बंधे रहो । तुम लौट जाओ ! यही मेरी इच्छा है ।"

तुम मुझे अपने साथ बांधने को तयार हो या नहीं सो तो मैं नहीं जानता ? मैं तुम्हारे साथ बँध चुका हूँ और इस तरह बँधने में न तो मेरा ही कोई दोष है और न मैं समझता हूँ तुम्हारा ही ?"

सरला ने तनिक शान्त होकर समझाया—"यह समय तर्क का नहीं । तुम्हें यही उचित है कि रोगी को शान्त करने की चेष्टा करो । तुम्हारी इस हरकत से उसकी दशा बिगड़ने की सम्भावना है ।"

"फिर मेरे प्रश्न का उत्तर ?" आदित्य ने प्रश्न किया ।

"मैं इस समय परेशान हूँ । अभी उत्तर मत मांगो । कुछ दिन सोच विचार करने का समय तो दो"

इसी समय रमेन आ पहुंचा । उसने आदित्य से कहा—"भैय्या ! राज

बहुत हो चुकी है और भाभी बहुत व्यथित है अतः जाकर उन्हें सोने की दवा दे दो तो ठीक है। बातें मत करने देना वरना हालत बिगड़ सकती है।"

आदित्य रमेन की बात सुनकर नीरू के कमरे में चला गया। तब सरला ने रमेन से पूछा—"सुना है कि कल श्रद्धानन्द पार्क में तुम लोगों की कोई सभा होने वाली है ?"

"हां ! सभा हो रही है"

"क्या कल तुम सभा में नहीं जाओगे ?" सरला ने पुनः प्रश्न किया।

"जाने का तो इरादा था मगर अब शायद न जा सकूं"

क्यों ? क्या बात है ?"

"तुम सब सुन कर क्या करोगी ?" रमेन ने कहा।

"अगर कल सभा में नहीं गये तो लोग तुम्हें कायर कहेंगे ?"

"जो मुझसे नाराज है वह अवश्य कायर कह सकते हैं अन्यथा नहीं ?"

"मैं चाहती हूँ कि कल तुम सभा में अवश्य जाओ"

"मैं तुम्हारी इस बात का मतलब नहीं समझा ? जरा स्पष्ट कहो तो ठीक होगा"

सरला ने दृढ़ विश्वास के साथ कहा "मैं हाथ में झंडा लेकर जाना चाहती हूँ"

"तुम्हारा अभिप्राय अब समझ गया"

सरला ने पुनः कहा—"एक बात पहले ही समझाये देती हूँ कि मेरे इस कार्यक्रम में बाधा नहीं डालना"

"नहीं मैं तुम्हें नहीं रोकूंगा"

"तो फिर सलाह निश्चित न ?"

"हां निश्चित ही रही"

"तो हम दोनों कल शाम को एक साथ ही चलेंगे। ऐसी मेरी इच्छा है।"

"एक साथ चल तो सकते हैं पर वहां हम दोनों एक साथ रह न सकेंगे। पुलिस हमें साथ नहीं रखेगी।"

इसी समय आदित्य आता दिखाई दिया। पास आने पर सरला ने उससे पूछा—"इतनी जल्दी क्यों लौट आये? अभी तो गये ही थे।"

आदित्य ने कहा—"नीरू अधिक देर स्वयम् न जाग सकी। बातें करते २ वह तुरंत सोगई।"

रमेन ने कहा—"अब मैं चलता हूँ। रात बहुत हो चुकी है।"

सरला ने मुस्करा कर कहा—"जाना चाहते हो तो जाओ। मगर कल के लिये घर ठीक कर रखना। भूल जाना तुम्हारा स्वभाव है इसी कारण फिर बतलाये दे रही हूँ।"

"मैं सब कुछ भूल सकता हूँ मगर इस बात को कैसे भूल सकता हूँ। वैसे कोई चिन्ता भी नहीं है क्योंकि जगह अच्छी तरह कई बार देखी भाली है।

रमेन चला गया।

८

आदित्य के पास ही सरला खड़ी होगई और तब बोली—"मैं तुम्हें और कुछ नहीं कह सकती केवल यह विनती करती हूँ कि जो बातें तुम मुझसे आज करना चाहते हो वह अगर कहलो तो ठीक है। मैं कल सब सुनूंगी।"

"अगर तुम इतनी भयभीत हो मेरी बातों से तो मैं तुमसे कुछ नहीं कहता।"

अगर तुम कुछ नहीं कहते तो मेरी एक बात केवल सुनलो मगर मैं चाहती हूँ कि जो कुछ कहूँ उसे तुम मानो तो कहूँ अन्यथा नहीं ?" सरला ने प्रश्न किया।

आदित्य ने कहा—"मैं तुम्हारी कौनसी बात नहीं मानता ? अवश्य मानूंगा कहो तो क्या कहना चाहती हो !"

सरला ने संयम धारण करके कहा—"मैं यह चाहती हूँ कि तुम अब जीजी के हृदय को सांत्वना देने के लिये उनके कहे मुताबिक काम करते रहो। यह तुम जानते ही हो कि डाक्टरों की राय है जीजी अब अधिक दिन जीवित नहीं रह सकेंगी अतः मुझे उनसे दूर ही रहने दो और तुम उनके हृदय को शान्त बनाये रखो। मेरे विषय को लेकर उनके हृदय में जो भ्रम पैदा होगया है उसे तुम्हें दूर कर देना चाहिये ताकि वह शान्ति प्राप्त कर सकें। मैं उनकी निगाहों से दूर इसीलिये रहना चाहती हूँ।"

"मैं अपने हृदय से लाचार हूँ। तुम तो मेरे रोम २ बस रही हो" आदित्य ने उत्तर दिया।

'नहीं ! मैं जानती हूँ कि साधारण मनुष्यों की भांति तुम कायर नहीं हो ! फिर इतनी कमजोरी भरी बातें क्यों कर रहे हो ! मैं तुम्हें कायर नहीं बनने दूंगी। और अगर तुम मुझसे जरा भी प्रेम करते हो तो मैं तुम्हें उसी प्रेम की शपथ देती हूँ कि जीजी के जीवन काल तक तुम मुझे भुला दो और उनकी रत होकर सेवा करके उन्हें बता दो कि मैं उनका सुहाग छीनने उनके जीवन में नहीं आई थी ! मैं नहीं चाहती कि वह इस धारणा को लेकर ही जीवन समाप्त कर दें। इस कार्य को तुम्हीं कर सकते हो दूसरा कोई नहीं !"

आदित्य शान्त रहा। तब सरला ने फिर कहा "मैं तुमसे वचन मांगती हूँ कि तुम ऐसा ही करोगे ?"

"मैं ऐसा करने का वचन एक शर्त पर दे सकता हूँ ?"

"मैं तुम्हारी शर्त मानने को वैसे तयार हूँ मगर एक बात खटकती है। वह यह कि मैं तुमसे जो भी मागूंगी वह तुम आसानी दे सकते मगर हो सकता है कि तुम जो मुझ से शर्त कर रहे हो वह इतनी कड़ी हो सकती है जो आसानी से पूरी न हो सके। मैं उसे पूरा करने में असमर्थ सिद्ध हो सकूं।"

"नहीं मेरी शर्त तुम्हारे लिये असम्भव कदापि नहीं होगी।"

"अगर ऐसा है तो मैं तुम्हारी शर्त मानने को तयार हूँ" सरला ने विश्वास से कहा।

जिन बातों को हृदय में धारण करके उलझनों में फँसा रहता हूँ उन्हें आज तुमसे अवश्य कहूँगा। जो तुम कहना चाहती हो उसे भी अवश्य सुनूंगा और अगर तुम्हारी बात मेरे पालन करने योग्य हुई तो उसे अवश्य पालन करूँगा उसकी शर्त केवल यही है कि तुम मेरी मानसिक उलझनों को दूर कर दो मेरे जीवन में नवीन ज्योति फूंक दो।"

तुम मुझसे प्रतिज्ञा करा रहे हो मगर यह भूल जाते हो कि प्रतिज्ञा करना सहल है मगर पालन करना कठिन है।"

"जहां चाह होती है वहां राह निकल आती है। पहले तुम यह तो बताओ कि तुम्हें मेरी चाह है या नहीं ?

तुम इस प्रकार की बातें करके मुझे क्यों दुःख देना चाहते हो ? तुम यह समझने की चेष्टा क्यों नहीं करते कि अब मेरे जीवन में सिवाय तुम्हारे अब रहा ही क्या है ? अगर मुझे तुम्हारी चाह न होती तो कब का समाप्त हो जाता।"

"ठीक है तुम्हारी बात मेरी समझ में अच्छी तरह आगई। अब मैं काम से जाना चाहता हूँ।"

"क्या अब थोड़ी भी देर रुक नहीं सकते ?"

"नहीं। अब रुककर मैं तुम्हारे इशारों को बदलना नहीं चाहता। मैं नहीं चाहता कि मेरे कारण तुम्हारे विचारों में अब और अधिक परिवर्त्तन हो। जो कुछ तुमने सोचा है भगवान करे तुम्हें सफलता मिले।"

"आपका बड़प्पन है जो इस तरह आपने मुझे मेरी तकदीर और तदबीर के सहारे छोड़ दिया है। मैंने क्या सोचा है और क्या करूंगी वह आप से अधिक छिपा न रह सकेगा। शीघ्र ही आप सब कुछ जान सकेंगे।"

"अच्छा ! क्या तुम मुझे अपने आगामी कार्यक्रम के विषय में कुछ भी बताना नहीं चाहतीं ?"

"मेरे आगामी जीवन का कार्यक्रम निर्धारित करने का भार लिया है रमेन ने।"

"रमेन तुम्हें सहारा कैसे दे सकता है क्या रक्खा है उस बेचारे के पास ? न घर है न द्वार है ?"

"आश्रय तो सुन्दर है। पुख्ता संगीन घर है। माना कि उसका अपना निजी नहीं तब भी रहने का अधिकार तो प्राप्त है। खैर, यह सब वस्तुयें हमारे मार्ग को रोक न सकेंगी ऐसा मेरा विश्वास है।" सरला ने प्रसन्न होकर कहा।

"तुम सब कुछ पहेलियों की तरह क्यों बुझा रही हो साफ २ कहो ताकि मैं उसे समझ सकूं।"

"मैं तुम्हें सब कुछ भलो प्रकार बतलाऊँगी मगर भय यही है कि तुम नाराज होकर मुझे मेरे लक्ष्य से हटा न दो अगर तुम मुझे वचन दो कि तुम मेरे मार्ग में रोड़ा न अटकाओगे तो तुम्हें सारा हाल बता सकती हूँ।"

"क्या तुम अपना मन स्थिर रख सकती हो मुझसे दूर रह कर ?"

"भगवान जानता है ?"

"जैसा भी है सो तो ठीक ही है और जो होगा सो भगवान ठीक ही करेंगे। मगर यह तो बताओ कि विदाई के समय भी क्या तुम मुझे इसी तरह छोड़ जाने को तत्पर हो ?" आदित्य ने कहा।

कहते आदित्य का दिल भर आया और हृदय का तूफान नेत्रों में होकर छलछला आया।

सरला भी शान्त न रह सकी। चिरकाल से हृदय में छिपा प्रेम उमड़ पड़ा और उसने पास आकर आदित्य के काँपते हुये होठों पर अपना गाल रख दिया।

६

"प्रातः हुआ। नीरू जागी और उसने आया को पुकारा "रोशनी"

"आई बिटिया रानी" कहती हुई आया कमरे में प्रविष्ट हुई।

"सरला घर में दिखलाई नहीं दी ?" नीरू ने उत्सुकता से प्रश्न किया।

आया ने सांस भरी और उत्तर दिया—"क्या तुम्हें नहीं मालूम ! सरकार ने उसे गिरफ्तार करके जेल भेज दिया है।"

"उसने क्या कसूर किया था जो उसे जेल भेज दिया है सरकार ने ?"

अरे ! बिटिया रानी वह तो बड़ी कलेजे की निकली। उसने बड़े लाट

साहब के चौकीदारों की आंखों में धूल झौंक दी और मेम साहब के कमरे में घुस गई थी" आया ने व्याख्या करते हुये नीरू को समझाया।

"क्यों ? क्या करने गई थी वहां ?"

"महारानी की मुहर चुराने गई थी। जिस बक्स में मुहर रहती है उसे चुराने का इरादा था। हिम्मत तो देखो उस तनिक सी छोकरी की। कितनी मर्दुमी का काम करने की कोशिश की ?"

"मुहर को चुराकर क्या करती ?"

"तुम भी कैसी बातें करती हो ? मुहर ही तो अंग्रेजों की राज की ताली है। जहां महारानी की मुहर हाथ आयी फिर रह ही क्या गया ? मुहर के जोर से तो वह बड़े लाट को भी सूली लगवा देती। क्या तुम नहीं जानती कि उसी मुहर के जोर से फिरंगियों का सारा राज चलता है ?" आया ने अच्छी तरह समझाना चाहा।

"रमेन लालाजी कहां हैं ?" नीरजा ने पुनः प्रश्न किया।

"वह भी सरला के ही साथ पकड़े गये हैं। उनके कपड़ों में सेंध लगाने के लिये औजार छिपे हुये मिले हैं उन्हें भी सरकार ने पकड़ लिया। दोनों को बहुत दिन तक जेल में रहकर मेहनत करनी होगी। तुम एक बात तो बताओ बिटिया रानी, कि मैं सरला बिटिया की दी हुयी साड़ी अपने पास रहने दूं या कहीं हटा दूं ?"

"कैसी साड़ी ? तेरे पास कहां से आयी ?"

"घर से जाते समय सरला बिटिया ने आंखों में आंसू भरकर केसरिया रंग की कीमती साड़ी मुझे बुलाकर दी और कहा था कि इसे अपने बेटे की बहू को देना। वैसे तो मैं हमेशा उन्हें परेशान करती रहती थी मगर उन्होंने दया ही दिखायी। तुम बताओ कि सरकार उस साड़ी को रखने के कारण मुझे पकड़ तो न लेगी ?"

"तू बेकार क्यों मरी जाती है ? तुझे कोई डर नहीं। जा बाहर के कमरे से आज का अखबार तो ले आ ?"

रोशनी अखबार उठा लायी। उसने पढ़ा। सोचने लगी कि उसके पति आदित्य ने इतना सब कुछ होने पर भी उसे यह समाचार उसे नहीं बताया। मन में विचार आया कि हो सकता है कि जेल जाने के कारण उनकी निगाह में उस लड़की का महत्त्व अधिक होगया है। वह उसे अधिक महान समझने लगे हैं। मगर जेल जाकर उसने कोई ऐसा काम नहीं किया जो मैं नहीं कर सकती थी ? अगर मैं बीमार न होती तो क्या मैं नहीं जा सकती थी ? जेल तो क्या मैं फांसी के तख्ते पर भी चढ़ सकती थी। यह सोच कर नीरू की छाती गर्व से फूल उठी सरला के प्रति उसके हृदय में उपेक्षा के भाव भर गये।

नीरू ने रोशनी से कहा—"देखे तूने सरला के हाल ? शरीफ घर की बेटी होकर पराये मर्दों के सामने उनकी कैसी हालत हुयी होगी। हाय रे ! लाज शर्म तो मानो उसे छु भी नहीं गया था।"

"बाप रे बाप ! मेरा तो जी कांपता है ख्याल करके। उन्होंने चोर उच्चकों को भी मात कर दिया"

"देख न इस छोकरी की ढिठाई हर बात में टांग अड़ाती है और सब दुनिया को जाहिर करना चाहती है कि वह बड़ी भारी अक्लमन्द है। बगीचे के काम में किसी को बराबरी का नहीं समझती और अब तो जेल जाने में भी अपनी बहादुरी समझा होगी। वाह रे घमंड ?" नीरजा ने जी भरकर सरला की उपेक्षा की।

आया को साड़ी मिल चुकी थी अतः वह सरला की बुराई करने में ठिठकी और बोली—"बिटिया रानी चाहे कुछ कहो मगर यह तो मानना पड़ेगा कि उनका दिल था बहुत खुला अगर किसी को कुछ देना चाहती थीं तो खूब दिल खोल कर देती थीं।"

आया की यह बात सुनकर नीरजा तड़प उठी। उसके इन शब्दों ने नीरू के मर्म स्थल पर आघात किया तब उसने कहा—"रोशनी! मुझसे भूल होगयी। तेरी बात सच है। यह बात तेरी इस कारण ठीक है कि जब शरीर साथ नहीं देता तो मन कैसे साथ दे सकता है। मैं बीमार हूँ इस कारण मेरा मन भी बुरा हो गया है, ओछा हो गया है। मैं कसूरवार जो हूँ। मैं चाहती हूँ कि स्वयम् अपने आप को सजा दूं। यह तो तेरी बात ठीक है कि सरला सीधी, सरल स्वभाव की लड़की थी। वह झूठ नहीं जानती थी। अच्छा एक काम कर कि गणेश गुमाश्ते को तो बुलाकर ले आ।"

आज्ञा पाकर आया चली गई। तब स्याही कागज लेकर नीरजा ने सरला के नाम एक पत्र लिखा। इतनी देर में गणेश को लिवाकर सरला लौट आयी।

नीरू ने गणेश के हाथ में पत्र देकर कहा—"गणेश मेरा यह पत्र जेल में सरला के पास तक पहुंचा सकते हो?"

गर्व से गणेश का सीना तन गया। अपना रौब जमाने की गरज से कहा—"क्यों नहीं पहुंचा सकता? मगर एक बात है कि चिट्ठी भेजने के लिये कुछ रुपये भी खर्च करने पड़ेंगे!"

"रुपयों की कोई बात नहीं"

"हां एक बात और है। यह भी बताओ कि इस पत्र में क्या लिखा है? तुम तो जानती हो कि जेल में पत्र पुलिस वालों की मार्फत जाते हैं और इस कारण कोई ऐसी वैसी बात लिखकर नहीं भेजी जा सकती है। अच्छा तो यही होगा कि तुम इस पत्र को पढ़कर मुझे सुना दो" गणेश ने कहा।

नीरू ने पत्र सुनाया।

उसमें लिखा था—"मैं तुम्हारा बड़प्पन स्वीकार करती हूँ। तुम महान

हो। तुम्हें यह जानकर खुशी होगी मैं तुम्हारे विचारों की समर्थक बन गयी हूँ और तुम्हारे जेल से लौटने पर मैं तुम्हारे मार्ग का ही अनुसरण करूंगी।"

गणेश ने मुँह बिचका कर कहा—"यह जो मार्ग अनुसरण की बात लिखी है सो जमी नहीं। हो सकता है कि पुलिस के अधिकारी इस पर ऐतराज करें और इस पत्र को उसके पास तक जाने से रोक भी दें। खैर जो कुछ भी लिखा है सो तुम्हारे अपने समझने की बात है। मैं अपने वकील साहब को इसे दिखलाकर सब ठीक कर लूंगा।"

नीरजा ने पत्र गणेश को दे दिया।

गणेश पत्र लेकर चला गया।

रोशनी भी जा चुकी थी।

नीरजा ने अतीत घटनाओं को मन ही मन एक बार पुनः दोहराया। चल चित्र की भांति एक बार फिर समस्त दृश्य उसकी आंखों के साम फिरते प्रतीत हुये।

रमेन की बातों का महत्व अब नीरू की समझ में आया।

क्षणभर तक सोचने के बाद उसने मन ही मन रमेन को नमस्कार किया।

वह सोचने लगी 'रमेन! उसका गुरु है"

१०

नीरू की दवा प्याले में लिये हुये आदित्य ने कमरे में प्रवेश किया।

नीरजा ने पूछा—"यह क्या लाये हो?"

"डाक्टर ने कहा है कि यह दवा हर घंटे बाद दी जानी चाहिये।"

"दवा पिलाने की तुम्हें इतनी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। यह काम तो किसी और को भी सौंपा जा सकता है और अगर तुम और किसी को योग्य नहीं समझते तो इस काम के लिये एक नर्स को नौकर रख लो।" नीरू ने व्यंग किया।

"दवा पिलाने के बहाने ही तो तुम्हारे पास आ सकता हूँ। और मैं नहीं चाहता कि इस मौके को छोड़ूं।"

"सो तो मैं जानती हूँ कि तुम आजकल बहुत व्यस्त रहते हो और इस प्रकार के बहाने केवल इस वास्ते तलाश करते रहते हो कि तुम्हारा जी बहलता रहे मगर मैं तो यह चाहती हूँ कि तुम जितना समय तुम मेरी तीमारदारी में व्यतीत करते हो उतना अगर समय बगीचे में खर्च करो तो मुझे अधिक प्रसन्नता हो। मैं खाट पर बीमार पड़ी हूँ उठने बैठने योग्य नहीं और तुमने मेरी तीमारदारी में फँसकर बगीचे की देख रेख से मुंह मोड़ लिया है। बरबाद हो चली है फुलवारी।"

"फुलवारी के बर्बाद होने की मुझे चिन्ता नहीं। मैं तो यह चाहता हूँ कि पहले तुम अच्छी हो जाओ अब फुलवारी के लहलहाने में देर न

लगेगी। हम दोनों पहले की भाँति मेहनत करके फिर उसे हरी भरी कर लेंगे।"

"मैं जानती हूँ कि तुम्हारा मन काम में नहीं लगता। सरला चली गई और तुम बिलकुल अकेले रह गये हो। जो कुछ होना था सो हो चुका अब इसमें हमारा कोई चारा नहीं। नुकसान को तो रोकना ही चाहिये।"

"तुमने मेरी आत्मा के साथ बगीचे की आत्मा को जोड़ रखा था। अब मैं समझ चुका हूँ कि बगीचे की देख रेख करना तो मेरा रोजगार है। रोजगार बनते बिगड़ते रहते हैं। अब मेरा मन उधर नहीं लगता क्या करूं मजबूर हूँ।"

"मर्द होकर इतनी सी बात के लिये व्यथित होते हो? सरला के सामने तक कितनी तन्मयता से फुलवारी की देख रेख करते थे। मैं जानती हूँ कि इन दिनों तुम्हें व्यथाओं ने घेर रखा है मगर व्याकुल होने से तो कोई काम नहीं निकलता। धीरज रखो और काम में मन लगाने की चेष्टा करो" नीरजा ने समझाया।

आदित्य ने प्रसंग बदलने की गरज से कहा—"शायद गर्मी अधिक है अगर कहो तो पंखा खोल दूं?"

"तुम अपने को इन पचड़ों में मत फंसाओ। यह सब काम तुम्हें शोभा नहीं देते। तुम्हें इस तरह इन सब पचड़ों में फंसा देख कर मुझे दुःख होता है। अगर तुम्हें और कहीं आना जाना अच्छा नहीं लगता तो तुम बागवानी के क्लब ही चले जाया करो ताकि तुम्हारा मन तो लगा रहेगा।" नीरू ने आदित्य को समझाने की चेष्टा की।

आदित्य नहीं चाहता था कि इस विषय को लेकर अधिक वाद विवाद किया जाये। अतः उसने बातचीत की गति फेरने की गरज से

नीरू को उत्तर देना उचित समझा। उसने प्रसंग बदलने के लिये कहा—"मैंने बहुत तलाश की कि लिल्ली के फूल तुम्हारे लिये लाऊँ मगर मालूम होता है कि फुलवारी में लिल्ली इस बार बहुत कम हुई है। वर्षा इस बार बहुत कम हुई है इस कारण पौधे अच्छी तरह पनपे नहीं।"

"क्यों हताश होते हो? माना कि मैं बीमार हूँ और इस कारण चलने फिरने लायक नहीं रह गई हूँ मगर इसका यह मतलब तो हरगिज नहीं कि मैं पड़ी २ फुलवारी की देख रेख न कर सकूं। तुम तनिक हरिया माली को बुला दो। मैं उसे सारा काम समझा दूंगी। जो पेड़ सूखकर बेकार हो चुके हैं उन्हें उखड़वा कर बाहर फिकवा दो। नई क्यारियां तयार कराओ और नई २ कलमें लगवाओ। सीढ़ियों के नीचे वाली कोठरी में खली का बोरा रखा है। हरिया के पास उस कोठरी की चाभी है। उसे कहो कि वह खली का खाद क्यारियों में दे डाले।"

"हरिया ने तो मुझे कभी नहीं बताया था कि खली का बोरा घर में रखा है?"

"यह मैं जानती हूँ कि उसने यह सब तुम्हें क्यों नहीं बताया? तुमने उसकी कदर ही नहीं की वरन् उसके साथ उपेक्षा बर्ताव किया था। इसी कारण उसने यह सब तुमसे छिपा रखा।"

"हरिया! उसके विषय में कुछ भी कहूँगा तो वह सत्य होते हुये भी तुम्हें भला प्रतीत न होगा।"

"बेकर बहस करने को मेरा जी नहीं चाहता। अगर यही बात है तो तुम मुझे बाग का नकशा, मेरी नोटबुक दे दो। फिर देखो कि मैं बिस्तर पर पड़ी २ उससे कैसा काम लेती हूँ। निशान लगा २ कर ही उससे काम ले लूंगी।"

"मगर एक बात है कि मुझे इन कामों में मत घसीटना?"

"नहीं! हरगिज नहीं! मरने से पहले मैं फुलवारी को एक नई

चेतना दे जाना चाहती हूँ ताकि मेरी अनुपस्थिति में फुलवारी का हर कोना तुम्हें मेरी याद दिलाता रहे। मैं पहले ही बतलाये देती हूँ कि सड़क के किनारे के 'बाटेल ग्राम' उखड़वा डालूंगी और उनके स्थान पर झाड़ियों की कतारें लगवाऊंगी। घास के मैदान के स्थान पर सफेद संगमरमर की वेदी बनाने का इरादा है। इस तरह सिर मत हिलाओ? देखना कैसा नकशा बदले देती हूँ इस फुलवारी का? तुम हैरान हो जाओगे और हारकर तुम्हें मेरी प्रशंसा करनी ही पड़ेगी।"

"तुम क्या समझती हो वहां वेदी अच्छी प्रतीत होगी?"

"तुम अभी इसके बारे में कुछ समझ ही नहीं सकते। अब कुछ दिन तक इस बगीचे पर केवल मेरा ही अधिकार होगा। देखना मैं कैसा प्रबंध करती हूँ? इतना सब कुछ अपनी मर्जी के मुताबिक फुलवारी की देख रेख करने के बाद मैं अपनी महनत से तयार की हुई फुलवारी तुम्हें सौंप जाऊँगी। शायद तुम लोगों ने सोचा होगा कि मैं बीमार हो गई हूँ मेरी सारी शक्ति समाप्त हो चुकी है मगर मैं तुम लोगों को यह दिखाना चाहती हूँ कि मैं अभी बहुत कुछ कर सकने की क्षमता रखती हूँ। तुम मेरे लिये तीन माली, पांच छः मजदूरों का प्रबन्ध कर सकते हो? अगर करदो तो मैं तुम्हारे सम्मुख अपनी प्रतिमा का नमूना रखकर यह सिद्ध कर दूं कि तुम्हारी यह धारणा कि 'मुझे फुलवारी की सजावट करना नहीं आता' निमू'ल है। वैसे तो तुम्हें सदैव यह ध्यान रखना ही चाहिये कि यह बगीचा मेरा है और सदा मेरा ही रहेगा।"

"मैं तुम्हारी बातों से पूर्णतया सहमत हूँ। जो कुछ भी तुम करने को कहो मैं सहर्ष करने को तत्पर हूँ।"

"तुम तो अपने दफ्तर की देख भाल ही करते रहना। वह काम ही बहुत काफी है।"

"दफ्तर के काम के साथ क्या तुम्हारी तीमारदारी का काम करना उचित नहीं ?"

"बात कुछ ऐसी ही है। सो तुम जानते हो कि समय के परिवर्तन और रोग के कारण मैं अब तुम्हारी नजरों में वह नहीं रह गई हूँ जो एक समय थी अब तो केवल अतीत की याद दिला सकती हूँ।"

"तुम्हारी इन सब बातों से यह तो स्पष्ट है कि आजकल तुम्हें मेरा संसर्ग बिलकुल ही नहीं सुहाता। खैर मैं अब चला और जब तुम उचित समझो तब बुला लेना।" हाथ में उसके गंधराज के पुष्पों का गुच्छा था उसे उसने नीरजा के बिस्तरे पर रख दिया और कमरे से बाहर जाने का उपक्रम करने लगा।

सहज स्नेह के वशीभूत हो नीरू ने आदित्य का हाथ पकड़ लिया और बोली—"जाने की जल्दी क्या है ? जरा देखो तो और ठहरो।"

आदित्य ठहर गया। तब नीरजा ने पूछा—"सामने वाली फूलदानी में बताओ कौनसा फूल है ?"

इन दिनों नीरू की जो मनोदशा चल रही थी सो आदित्य अच्छी तरह जानता था। इस कारण उसने कोई उत्तर नहीं दिया केवल सिर हिलाकर बता दिया कि वह इस फूल का नाम नहीं जानता।

दम्भ के साथ नीरू ने कहा—"तो मैं ही बताती हूँ कि उस फूल का नाम 'पेटूयूनिया' है। तुम तो मुझे मूर्ख ही समझते हो। मगर वास्तव में क्या हूँ यह तुमने कभी समझने की चेष्टा ही नहीं की।

मुस्कराहट फूट पड़ी आदित्य के होठों पर। उसने धीमे स्वर में कहा—"यह तुम क्यों भूल जाती हो कि तुम मेरी अर्धांगिनी हो। अगर तुम मूर्ख ही हो तो कमसे कम मेरे समान तो मूर्ख हो ही। इसमें भी तो कोई बुराई नहीं। हमारी तुम्हारी जिन्दगी बराबर की पंक्ति में मूर्खता पूर्ण ही सही।"

"अतीत की कल्पना अब दुःख देने भर को है। मधुर दिन अब कहां रहे ? जीवन के वह रंगीन दिन अब केवल नाम मात्र को रह गये हैं। उनकी याद ही बाकी है। भविष्य की क्यों नहीं सोचते ? वह दिन दूर नहीं जब इस घर के जीवन की गति सदा की भांति यों ही चलती रहेगी मगर मैं न होऊंगी। समय के चक्र के साथ संसार का चक्र यों का त्यों चलता रहेगा मगर मैं इस असार संसार से विदा ले चुकी होऊगी। मेरा अस्तित्व इस संसार में कहीं भी दिखाई न देगा। तुम्हीं बताओ मरने के बाद भी कभी कोई दिखाई देता है ?"

"यह तो एक कठोर सत्य है। जब बोलने वाली शक्ति शरीर से अलग हो जाती है तो शेष रह ही क्या जाता है? किसी भी विद्या में इसका कोई उत्तर नहीं है" आदित्य ने कहा।

"कितनी भयंकर मीमासा है कि आज शरीर है, ज्ञानेन्द्रियां है मगर जब बोलने वाला नहीं तो कुछ नहीं। ऐसा क्यों होता है ? इसका क्या कारण है ? क्या तुम इस विषय में कुछ भी नहीं जानते ?" नीरू ने प्रश्न किया।

"मैं और कुछ नहीं जानता मैं तो केवल इतना ही जानता हूँ कि तुम हो तब भी तुम मेरी हो और अगर चली भी जाओगी तो भी मेरी ही रहोगी। तुम्हारी याद ही मेरी जीवन किरण बनी रहेगी" आदित्य ने ढाढस बधांना चाहा।

"ठीक है। यह बगीचा हर समय तुम्हें मेरी याद दिलाया करेगा। झूमते हुये वृक्ष, चहचहाते हुये पक्षियों के स्वरों को तुम मेरा ही स्वर समझना। तुम हमेशा मेरी आत्मा को इस उपवन की हर कली में पाओगे। हवा बनकर मैं तुम्हारे बालों को इधर उड़ाऊंगी, तुम्हारे हर अंग का स्पर्श करूंगी। कोयल बनकर मैं तुम्हें अपनी वाणी सुनाऊंगी। बताओ क्या इस तरह इस रूप में तुम मुझे याद रख सकोगे ?"

आदित्य का मन कहीं और उलझा हुआ था। नीरजा के इस प्रश्न का

उत्तर वह पूर्ण विश्वास के साथ न दे सका। अनमने भाव से वह बोला—
"हां याद क्यों न रखूंगा।"

नीरजा ने उसकी बेरुखी पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह अपने आप पहले की तरह बड़बड़ाती रही—"दुनिया वालों को क्या मालुम कि आत्मा का आत्मा से कितना सम्बन्ध होता है? वह लोग इस बात के विषय में कुछ नहीं जानते। मैं जानती हूँ कि मैं तुमसे कभी विलग न रह सकूंगी। हो सकता है कि मैं इस अस्थिपजंर के कारागार से मुक्त हो जांऊ मगर मैं तुम्हारे सम्मुख तब भी हमेशा रहूंगी। मैं तुम्हें बताये देती हूँ कि मैं सदा की भांति तुम्हारी इस फुलवारी में हमेशा रहूंगी। तुम्हारे बगीचे की देख-भाल करती रहूंगी। हमेशा की भांति मैं पोधों की देखरेख करूंगी बल्कि पहले से भी अच्छी तरह। तुम्हें और किसी की कभी आवश्यकता ही न होगी कि जो मेरे काम को सम्भाले।"

आदित्य मौन रहा। वह नीरजा के शब्दों क सुन रहा था और उसका मतलब समझ रहा था।

आवेश में भरकर नीरजा तकिये का सहारा लेकर बैठ गयी और फिर बोली—"मैंने तुम्हें जो कुछ भी कहा है वह केवल इसलिये कि मैं तुम्हें प्यार जो करती हूँ। प्यार भी कितना करतो हूँ सो मैं स्वयम् नहीं जानती। तुम मेरी बातों को बुरा मत मानना। जो कुछ भी मैंने कहा है केवल प्यार के ही आवेश में। अब तक तुमने मुझे अपना प्रेम सौंपा था सो अब मेरी मौत के बाद उसे छीनकर किसी और को मत दे देना। मैं कहे देती हूँ कि अगर तुमने मेरा प्रेम किसी और को देने की चेष्टा की तो मैं बरबाद हो जाऊंगी। मुझे कभी चैन न मिल सकेगा। मेरी आत्मा भटकती फिरेगी और उस सब के जिम्मेदार होगे अकेले तुम!"

नीरजा कहते विह्वल होगयी। कंठ भर आया और नेत्र जल बरसाने लगे।

प्रेम ने जोर मारा। आदित्य की तन्द्रा टूटी वह नीरू को रोता देख शान्त न रह सका। उसके पास ही बिस्तरे पर बैठ गया और प्रेम पूर्वक उसे अपने आलिंगन में लेकर सिर पर हाथ फेरने लगा और समझाने लगा—"नीरू! दुःखी होने से लाभ ही क्या है? मैं तो तुम्हारा हूँ और रहूँगा भी बेकार क्यों व्यथित होती हो?"

नीरू की हिलकी भर आई। वह बोली—व्यथा ही तो मेरे जीवन में शेष है। मगर मैं अब और कुछ नहीं चाहती हूँ। मैं जानती हूँ तुम मुझ पर क्रोधित हो। क्यों न हो? गलती जो मुझसे हुई है। मैं तुमसे उसकी माफी मांगती हूँ और यही चाहती हूँ कि तुम गुस्सा थूक दो और पुनः प्रसन्न हो जाओ। यह तो मैं मानती हूँ कि मैंने सरला के प्रति अच्छा नहीं किया। वह अन्याय जो मैंने किया है मेरे दिल में कांटे की भांति चुभ रहा है मगर जो भी होना था सो होगया अब क्षमा करो। तुम केवल एक बार क्षमा करदो और जो भी कहो मैं तुम्हारी आज्ञा पूरी करने को तयार हूँ। तुम्हारा प्यार चाहती हूँ। केवल तुम्हारा प्यार। यही मेरी व्यथा है और यही मेरी अभिलाषा भी।"

"मैं जानता हूँ कि तुम्हारे रोग के कारण तुम्हारा मन निरोग न रह सका। जो कुछ भी तुमने किया वह तुमने अपनी चेतना में नहीं किया। यही तुम्हारी व्यथा है और उसकी ही परेशानी है।"

कुछ सम्भल कर चैतन्यता धारण करके नीरू ने कहा—"मैं स्पष्ट बतलाना चाहती हूँ कि मैंने कल ही रात अपने मन में दृढ़ संकल्प किया है कि इस बार जब भी सरला से साक्षात् होगा मैं उसे पवित्र हृदय से बहन की भांति गले लगाऊँगी। मन का सारा मैल धो डालूंगी। मैं केवल यह चाहती हूँ कि तुम मेरी इस प्रतिज्ञा को सफल करने में मेरी सहायता करो ताकि मैं अपने प्यार का खजाना प्रेम पूर्वक तुम्हें, सरला, तथा इस घर के सब प्राणियों पर लुटा सकूं।"

आदित्य ने नीरजा की व्यथा को समझा और उसे शान्त करने के लिये वह उसका मुंह और मांथा चूमने लगा। पति का प्रेम पाकर नीरू ने नेत्र बन्द कर लिये। उसे शान्ति मिली।

कुछ देर बाद उसने पुन: आखें खोली और पति से प्रश्न किया—"क्यों सरला कितने दिन बाद जेल से मुक्त होगी ? मुझे हमेशा यही भय रहता है कि कहीं ऐसा न हो कि मैं उसके जेल से छूटने के पहले मर जाऊँ ? मैं बड़ी बेसब्री से यही इन्तजार कर रही हूँ कि वह मेरे सम्मुख हो और मैं उसे अपने ही मुंह से बता सकूं कि मेरा मन अब उसकी ओर से बिलकुल साफ होगया। जरा रोशनी करलो और मुझे पुस्तक पढ़कर तो सुनाओ ताकि जी बहले।"

इतना कहकर नीरू ने अपने तकिये के नीचे से 'एपा' पुस्तक निकाल कर आदित्य के हाथ में दी और आदित्य उसे पढ़कर सुनाने लगा। इतने ही में आया कमरे में आई और बोली—"यह चिट्ठी आई है।"

किताब सुनते २ नीरू उनींदी हो चली थी मगर चिट्ठी का नाम सुनते ही वह चौंक पड़ी और उसकी सांस वेग से चलने लगी। आदित्य के एक मित्र ने इस चिट्ठी द्वारा उसे बताया था कि कैदियों की बहुतायत के कारण अधिकारियों ने कुछ कैदियों को अवधि से पहले ही छोड़ देना तय किया है और इन रिहा होने वालों में सरला का भी नाम था। इस सुसंवाद को पाकर आदित्य फूला न समाया और वह अपनी प्रसन्नता को लाख चेष्टा करने पर भी न दबा सका।

नीरू ने उत्सुकता से आदित्य से पूछा—"किसकी चिट्ठी है ? क्या लिखा है ?"

हृदय की प्रसन्नता कहीं शब्दों द्वारा व्यक्त न हो जाये इस डर से

आदित्य ने वह चिट्ठी नीरू को दे दी। एक बार उसने पति के चेहरे की ओर ताका और पुनः एक क्षण शान्त हो मन ही मन किसी बात के बारे में निश्चय कर उसने आदित्य से कहा—"चलो अच्छा हुआ जो सरला भी छूटी! अब चिन्ता की कोई बात नहीं? तुम स्वयम् ही जाकर उसे आज ही घर लौटा लाना।"

इतना कहते २ नीरू की आखें स्वतः बन्द होगईं दांती भिच गईं और वह शीघ्र ही मूर्छित होगई।

"डाक्टर को बुलाओ! जल्दी करो" आदित्य कमरे में से चीखा।

आया पास वाले कमरे में से डाक्टर और नर्स को बुला लाई। डाक्टर ने नीरू की नाड़ी पर हाथ रखकर परीक्षा करनी चाही कि नीरजा ने पुनः आखें खोली और कहा —"डाक्टर जैसे भी हो सके मुझे कुछ देर और जीवित रहने दो। मैं सरला से एक बार अवश्य मिलना चाहती हूँ। जब तक उसे नहीं देख लेती तब तक मुझे चैन कहां?"

आवेश में नीरजा की आखों में एक चमक सी आई और पुनः वह शिथिल होती गई। उसकी आखें मुंदने लगी और अस्फुट शब्दों में वह बड़बड़ाती रही—"मैं कंजूस की मौत नहीं मरूंगी लालाजी! अपना वचन अवश्य निबाहऊँगी। तुम्हारी सलाह अवश्य मानूंगी।"

इतना कहते २ वह पुनः बेहोश होगई।

इसके बाद नीरजा की बेहोशी बढ़ती ही गई। वह बार २ होश में आती और अस्फुट स्वर में कुछ न कुछ बड़बड़ाती और पुनः शान्त हो जाती। कई बार उसने यही प्रश्न किया सरला आ गयी?"

कभी २ वह मूर्छितावस्था ही में पुकार उठती—"रोशनी"

"क्या है बिटिया रानी" रोती हुयी आशा उत्तर देती।

बिना आया के उत्तर का ध्यान किये बन्द आखें किये ही वह बड़बड़ाती रहती—"अरी रमेन लालाजी को बुला दे ? फिर स्वयम् ही पुनः कहती—'क्या होगा बुलाकर रहने दे। मैं तो उनके कथनानुसार सब कुछ दे डालूंगी। अवश्य सब कुछ दे डालूंगी।"

धीरे २ रात्रि हुयी। नीरजा को चेत न हुआ। रोगी की अवस्था सोचनीय थी। कमरे में मद्धिम रोशनी हो रही थी और बगीचे की ओर वाली खिड़की खुली होने के कारण फुलवारी की मन्द सुगन्धित समीर से पुष्पों की खुशबू कमरे को महका रही थी।

इसी समय आदित्य सरला को साथ लिवाकर लौटा। नीरू के कमरे के द्वार से उसने झांका और उसे शान्त पड़ा देख वह सरला को दरवाजे के पास ही छोड़ दबे पावों से नीरू के पलंग के पास आया ताकि पदचाप से उसकी नींद न उचट जाये।

नीरजा के होंठ कांप रहे थे। उसकी आखें बन्द थीं। ऐसा ज्ञात होता था कि वह मन ही मन अपने अस्फुट शब्दों में कुछ जाप सा कर रही थी। बेहोशी के कारण उसकी ज्ञानेंद्रियां सजग नहीं थीं और उसकी आखें अब भी पहले की भांति थीं।

आदित्य कुछ देर तक सोचता रहा अन्त में उसने नीरू के कान के पास मुंह लेजाकर कहा—"सरला को मैं ले आया हूँ।"

नीरू ने कुछ चेत किया मानों वह इसे सुनने के लिये ही बेचैन हो। उसने आखें खोलीं और अपने पति की ओर देखकर कहा—"तुम लौट आओ।"

आदित्य थोड़ा हट गया और उसने सरला को अन्दर आने का इशारा किया। तब सरला कमरे में आई और नीरू के पलंग के पास पहुंची और उसके पावों को छूकर एक ओर खड़ी होगयी।

जैसे ही सरला का हाथ उसके पाँवों से लगा वैसे ही नीरू बिजली की भाँति तड़की और उसने अपने पैर सरका लिए। उसकी आवाज तेज हो गई मगर स्पष्ट न रह सकी।

उसने अस्फुट तेज शब्दों में कहा—"मैं नहीं दे सकती। मैं हरगिज नहीं दे सकती।"

यकायक आवेश में वह बिस्तर से उठकर खड़ी हो गई। न जाने उसके शरीर में इतनी ताकत कहाँ से आगई थी कि उसने कसकर सरला का हाथ पकड़ा और चीखकर बोली—"पिशाचनी! तेरे लिये यहां जगह नहीं है। यहाँ तो मैं ही रहूँगी। केवल मैं! भाग यहाँ से भाग।"

उसकी आकृति भयंकर हो उठी और तब वह धड़ाम से पृथ्वी पर गिर पड़ी। दौड़कर आदित्य ने उसे साधना चाहा मगर उसके प्राण पखेरू उड़ चुके थे।

इति

आखिरी रात
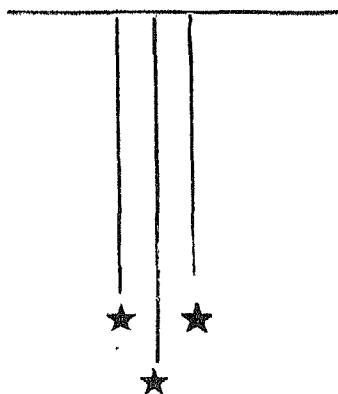
यतीन बेकली से करवटें बदलता रहा। तब उसने पुकारा—"मौसी"

"रात बहुत हो चुकी है अब तो तुम्हें सो जाना चाहिये" मौसी ने सस्नेह सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

"मौसी मेरे जीवन की रात भी तो हो चुकी है। अधिक दिन नहीं चल सकूंगा। आजकल मणि के माँ बाप कहाँ हैं?" यतीन ने मौसे से उत्सुकतावश पूछा।

"वह लोग सीतापुर हैं आजकल" मौसे ने उत्तर दिया।

"तो मौसी मणि को अब उनके पास सीतारामपुर ही भेज दो। कितने दिन तक वह मेरी सेवा करती रहेगी। और फिर उसकी भी तो तबियत ठीक नहीं रहती।"

"कैसी नासमझी की सी बातें करते हो यतीन ? क्या तुम समझते हो कि बहू तुम्हें इस दशा में छोड़कर मैके चली जायगी ? वह तुम्हें छोड़कर कहीं भी जाने को तयार नहीं" मौसी ने समझाया।

"मगर मौसी मेरे जीवन की अब आस कहाँ ? डाक्टरों ने जो कुछ कहा है क्या उसे अभी तक.......... ।"

"मैंने वह सब कुछ उसे नहीं बताया । तुम्हारी गिरती हुई दशा तो वह देख ही रही है इस कारण वह सब कुछ बताकर मैं उसे और अधिक दु:खी करना नहीं चाहती थी। एक दिन ऐसे ही बातों बातो में मैंने उसे माय के चले जाने का इशारा किया तो वह रो पड़ी और जब तक मैंने उसे मनाया नहीं वह शान्त ही न हो सकी।" मौसी ने यतीन को समझाया ।

— × ×—

जो कुछ मौसी ने कहा था उसमें तनिक भी सत्य न था। वास्तव में बात यह थी कि प्रात: मणिमाला का चचेरा भाई अनाथ आया था। मौसी यतीन की सेवा में लगी हुई थी इस कारण वह अपनी बहन से ही बातचीत करके लौट गया था । उसके चले जाने के बाद रात को मौसी ने बहू से पूछा—"बहू ! अनाथ तुम्हारे माय के से क्या समाचार लेकर आया था।"

मणिमाला ने उत्तर दिया—"माँ ने कहलवाया था कि शुक्रवार को छोटी बहन का अन्न प्राशन है। इस वास्ते मैंने भी सोचा कि चली जाऊँ वरना माँ बुरा मानेंगी।"

"सो तो ठीक है। मगर मैं यह चाहती हूँ कि तुम एक सोने की चेन बहन के लिये भेज दो। इस तरह तुम्हारी माँ भी प्रसन्न हो जायेंगी और तुम यहाँ रहकर यतीन की देखरेख कर सकोगी।"

"मैं तो खुद ही जाना चाहती हूँ क्योंकि मैंने बहन को अब तक देखा भी नहीं है और अब यहाँ मेरी तबियत भी तो नहीं लगती। कुछ दिन घूम आने से मेरी तबियत बहल जायेगी।"

यतीन को ऐसी दशा में छोड़कर तुम जा सकती हो बहू ? क्या तुमने डाक्टरों की राय नहीं सुनी ?"

मणिमाला ने बेरुखी से उत्तर दिया—"डाक्टरों की राय में तो अभी कोई खास बात नहीं है ."

यतीन की हालत तो तुम देख सकती हो। क्या ऐसी दशा में उसे छोड़कर जा सकती हो ?"

"यह तो ठीक है। मगर मेरी यह छोटी बहन भी तो तीन भाइयों के बाद हुई है। सुना है कि बड़ी धूम धाम से उसका अन्न प्राशन होगा और सब नातेदार कुटुम्बी जमा होंगे। अगर ऐसे समय में नहीं गयी तो मां को बहुत दुःख होगा।"

"तुम्हारी मां के विषय में तो मैं कुछ नहीं जानती हूँ कि इस हालत में यतीन को छोड़ कर जाओगी तो तुम्हारे पिताजी अवश्य ही नाराज होंगे। वह तुम्हारे जाने से कभी प्रसन्न नहीं हो सकेंगे।"

"मौसी आपका कहना सच है कि पिताजी नाराज होंगे। उसके लिये मैंने सोचा है कि अगर आप यह पत्र लिख दें कि चिन्ता की कोई बात नहीं तो वह नाराज नहीं होंगे। अगर आप इतना कर सकें तो—।"

तुम्हारे पिता को पत्र में क्या लिखना है सो मैं अच्छी तरह जानती हूँ। तुम पत्र लिखने की कहती हो सो मैं पत्र अवश्य लिखूंगी और यहां की सारी बातें साफ २ अवश्य लिखूंगी। ताकि वह भी वास्तविक स्थिति जान सकें।" मौसी ने उत्तर दिया।

मणिमाला ने तमक कर कहा—"मौसीजी मैं बाज आयी आपके पत्र से। मैं उनसे ही जाकर कहती हूँ और देखना कि वह मेरे कहने से तुरन्त पत्र लिखते हैं या नहीं ?"

मौसी को क्रोध आगया और उन्होंने कहा—"बहू ! अब तक मैंने बहुत कुछ सहा है। मैं यह हरगिज नहीं सह सकती कि तुम यह बात यतीन से कहो। ऐसा मैं हरगिज नहीं होने दूंगी। फिर तुम्हारे पिता क्या तुम्हारी आदत नहीं जानते और मैं समझती हूँ कि तुम्हारी यह चाल इस बार न चल सकेगी। तुम उन्हें धोखा न दे सकोगी।"

मौसी को क्रोध था और वह नहीं चाहती थी कि मणिमाला इस बात को लेकर अधिक उपद्रव करे इसलिये इस किस्से को यहीं समाप्त करने की गरज से वह यतीन के कमरे में लौट आयीं। नाराज होकर बहू अपने बिस्तरे पर जा लेटी और मन ही मन मौसी पर क्रोध करने लगी।

थोड़ी ही देर में पड़ोस के घर से मणिमाला की एक सहेली आगई। मणिमाला को उदास देखकर उसने पूछा—"आज तो बहुत दुःखी दिखाई देती हो ? क्या बात है ?"

मणि ने सहेली से कहा—"देखो तो बहन इन लोगों की ज्यादती ? ले देकर मेरे एक ही बहन हुई है और उसके अन्न प्राशन तक में यह लोग मुझे जाने देना नहीं चाहते ? कहाँ तक सहूँ और कैसे सहूँ ?"

"कैसी बातें करती हो मणि ? तुम उन्हें इतना बीमार छोड़कर जाने की बात कहती हो ?"

"तुमने भी खूब कहा ! मैं यहाँ करती ही क्या हूँ जो मेरे चले जाने से कोई काम रुक जायेगा। मैं न तो यहाँ कुछ करती ही हूँ और न मुझसे कोई बोलता ही है। सब एक दम मौन हैं इस प्रकार के जीवन से तो मेरा दम घुटने लगता है और इस तरह अधिक दिन रहने को मेरा जी नहीं चाहता।"

"तुम बहुत विचित्र स्त्री हो !" सहेली ने कहा।

"चाहे कुछ भी कहो बहन मैं तो एक बात जानती हूँ कि लोग दिखावा मुझ से नहीं आता। लोग दिखावे के डर से मैं चुपचाप घर के कोने में पड़ी रही हूँ सो भी मुझसे होने का नहीं।"

"तुमने निश्चय क्या किया है ?"

"मैं तो जाऊँगी अवश्य ! किसी की सामर्थ नहीं जो मुझे रोक सके ?"

"बड़े जोश में हो आज तो" कह कर वह उठ खड़ी हुई।

"कहाँ चली ?" मणि ने पूछा।

"घर जाती हूँ जरा कुछ काम है" कहकर वह चली गयी।

मणि फिर अकेली रह गयी।

मौसी की जबानी यह सुनकर कि मणि माथ के जाने की बात को सुनकर रोयी यतीन को बहुत चैन मिला और उसके मन ही मन मणि के प्रति एक प्रेम की लहर दौड़ने लगी। आवेश को वह सहन नहीं कर सका अतः गाव तकिये का सहारा लेकर वह बैठ गया और मौसी से कमरे की खिड़की खोलने के लिये कहा। यतीन ही के कहने पर मौसी ने कमरे की जलती हुयी रोशनी को अलग हटा दिया।

खिड़की खुल जाने से यतीन को कुछ चैन मिला। वह सोचने लगा और शीघ्र ही विचारों की दुनियाँ में मस्त हो गया। रात्री की नीरवता धीरे २ बढ़ने लगी और शून्य की ओर ताकता हुआ यतीन अपनी

कल्पनाओं में उलझा बैठा रहा। उसकी कल्पनायें मणिमाला के चारों ओर उलझी हुयी थीं। वह यही कल्पना किये बैठा था कि अपनी कटोरी जैसी दो गोल बड़ी २ आखों में प्रम और व्यथा के आंसू भरी मणि उसके विषय में कितनी चिन्तायें करती रहती है ? उसे मणि पर तरस आया और उसके हृदय में उसके प्रति प्रेम जाग उठा।

बहुत देर तक यतीन को शान्त देख मौसी ने सोचा कि वह सो गया अतः वह कुछ चैन महसूस करने लगीं कि इतने ही में यतीन ने कहा--"मौसी"

"क्या है बेटा" मौसी ने उत्तर दिया।

"मौसी तुम्हारा यह विचार कि मणि का हृदय बहुत चंचल है और वह हमारे घर में प्रसन्न नहीं सो अब मुझे तुम्हारे उस विचार पर शंका होने लगी है। अब देखो न......।"

मौसी ने बात को वहीं खतम करने की गरज से बात काटते हुये कहा—"मेरी धारणा गलत साबित हुई बेटा। असल बात तो यह है कि समय आने पर ही सत्य स्पष्ट होता है।"

"लेकिन मौसी" यतीन ने कुछ कहना चाहा।

'बेटा देर बहुत हो रही है अब तुम्हें सो जाना चाहिये" मौसी ने बात चीत का क्रम बदलना चाहा।

"मैं आज तुमसे कुछ बातें करना चाहता हूँ मौसी। मेरी बातों को जरा ध्यान से सुनो"

"कहो न बेटा मैं पूरे ध्यान से तेरी बातें सुनूंगी"

यतीन ने गम्भीरता से कहा—"मैं यही सोच रहा था कि आदमी को स्वयम् अपना मन समझने में ही कितना समय लगता है ? यह मैं आज जान पाया हूँ। पहले मैं भी तुम लोगों की तरह मणि के स्वभाव को देखकर

विचलित हो जाता था मगर सोच समझ कर सब सह लेता था। तुम लोग तब उद्विग्न हो जाती थीं।"

"बेटा मैंने भी बहुत सहा है बेटा।"

"मौसी आदमी का मन कब कैसा रहता है? यह तो वह स्वयम् भी नहीं जानता। मन कोई ऐसी ठोस चीज तो है नहीं जिसे सहज ही किसी के दिल से निकाल कर अपने काबू में कर लिया जाये। अब देखो न मणि के मन की दशा को? जैसा कि मैं कहता था कि एक न एक दिन आघात से उनका मन स्वयम् पलट जायेगा सो वही दशा हुयी कि नहीं? उसका मन स्वतः ही पलट आया है।"

"तुम्हारा सोचना ही ठीक था बेटा" मौसी ने उत्तर दिया।

"इसी कारण त मौसी मैंने कभी मणि की चपल बुद्धि और उसके किशोर पन का कभी ख्याल नहीं किया"

मौसी चाहती थी कि यह सब बातें यहीं समाप्त हो जायें क्योंकि उसे डर था कि बात आगे बढ़ने से वह जिस बात को छिपाये रखना चाहती है शायद छिपी न रह सके। इसी कारण वह शान्त रही और उसने यतीन की बात का कुछ जवाब नहीं दिया। उन्होंने एक गहरी सांस ली और सोचने लगी कि मणि के चंचल व्यवहारों से दुःखी होकर उसने कितनी ही रातें बरामदे ही में बैठकर काट दीं और मणि के व्यवहारों से दुःखी होकर उसने मणि के कमरे में जाना ठीक नहीं समझा। शीत और वर्षा की बिना परवाह किये ही वह कमरे के बाहर ही रहा और मणि के पास कमरे में जाने का साहस न कर सका।

कई बार, यतीन सिर के दर्द से बेचैन अपने बिस्तर पर पड़ा रहता था और चाहता था कि उसकी पत्नि मणि आकर प्रेम पूर्वक उसके सिर को दबा देती और उसके पास बैठती ताकि कुछ जी बहलता मगर मणि इतनी फुर्सत कहाँ? जो वह पति के विषय में यह सब सोचती। वह

अपनी सखी सहेलियों के साथ घूमने की तयारी करती रहती या थियेटर में जाती। मौसी जानती थी कि ऐसे अनेकों मौकों पर जब मणि यतीन की अवहेलना करके बाहर घूमने फिरने चली गयीं तो वह स्वयम् यतीन का सिर दबाने तथा हवा करने गयीं तो टूटे हुये दिल की भावनाओं से दुःखी होकर यतीन ने योंही लौटा दिया था। इन तमाम घटनाओं से यतीन का दिल कितना टूटता था सो मौसी भली प्रकार जानती थी।

अनेकों बार मणि की बेरुखी और यतीन की विरक्ति से दुःखी होकर मौसी ने उसे समझाना चाहा—"बेटा जब चंचल स्त्री से साथ हो जाये तो पुरुष का धर्म है कि उसे सही रास्ते पर लाने की प्राण-पण से चेष्टा करे। मानिनी स्त्री को बस में लाने के लिये पुरुष को चाहिये कि उसकी अवहेलना करे। उसकी बिलकुल चिन्ता न करे ताकि स्त्री के हृदय को ठेस लगे और वह विह्वल होकर रो पड़े। तब ही वह बस में आ सकती है।"

यतीन मौसी की इस नीति से सहमत न हो सका। उसने अपने हृदय के सर्वोच्च स्थान पर प्रेम सहित मणि को बिठाया था और नित्य प्रति अपने प्रेम के बल पर उस चंचल हृदया स्त्री के मन को जीतने का सुनहरा स्वप्न देखा करता था। पति मन ही मन पत्नि की पूजा करता रहा मगर पत्नि ने कभी भूलकर भी पति के प्रेम को समझने और उसके हृदय की पीड़ा और लालसा को समझने की चेष्टा नहीं की।

अपनी इन उलझनों में मौसी डूबी हुई थी कि अचानक यतीन ने मौसी को पुनःपुकारा और कहने लगा-मौसी ! यह मैं भली प्रकार जानता हूँ कि तुमने कभी यह कल्पना तक भी नहीं की थी कि मैं मणि के साथ कभी सुखी रह भी सकूंगा। पिछले दिनों तुम इन्हीं विचारों में उलझ कर दुःखी रहा करती थीं। इसका यह परिणाम भी था कि अक्सर तुम मणि पर नाराज रहती थीं। मगर आजकल के उसके व्यवहारों को देख कर मौसी मैं स्वयम् हैरान हूँ और इसी नतीजे पर पहुंचा हूँ कि सुख की अपनी एक

जगह है। उसको अच्छी तरह समझना मनुष्य की बुद्धि के परे की वस्तु है। आज मणि के विचार और उसके व्यवहार की बातें सुनकर मेरा हृदय आनन्द से भर उठा है और मैं अपने भाग्य पर फूल उठा हूँ।"

मौसी ने कुछ उत्तर नहीं दिया वह शान्त रही और अपनी आंखों के आँसुओं को चुपचाप पोंछ डाला ताकि यतीन उसके हृदय के उठने वाले तूफानों का आभास न पा सके।

"मौसी! मैं कभी २ यही विचारा करता हूँ कि मणि की अवस्था ही क्या है? वह कैसे जीवन काटेगी?"

"उमर तो विशेष कम नहीं! ठीक ही है उसकी आयु। बेटा मुझे ही देख कि मैंने कितनी सी उमर में संसार के सब सुखों को त्यागा और अपने देवता को हृदय में बिठाकर अपना यह शेष जीवन किस तरह काटा है! अपने अनुभवों के द्वारा ही मैं यह कह सकती हूँ कि सुख! उसकी कोई न तो परिभाषा है और न उसकी कोई सीमा ही।"

"मौसी विधि की विडिम्बना तो देखो जब मणि के हृदय में प्रेमांकुर फूटा है तब मैं संसार से..... ।"

मौसी ने कहा—"इस बात को लेकर अधिक दुःखी होने की आवश्यकता ही क्या है! मैं तो केवल इतनी सी बात ही सोचकर सुखी हूँ कि चलो मणि का हृदय तुम्हारे प्रति जागा तो सही।"

यतीन शान्त हो गया। उसके विचार पुराने सुने हुये एक गीत पर उलझने लगे। गीत था—

"मेरे मन जाग जरा, मेरे मन जाग जरा।
वरना पड़े पछताना, पड़े पछताना ॥
मेरे मन का आया मीत, आज है मेरी पहली जीत।
देखकर मन को गाफिल हाय, लौट कर कहीं चला न जाय॥
वरना पड़े पछताना, पड़े पछताना।

यकायक यतीन ने मौसी से प्रश्न किया—"कितने बजे का समय होगा मौसी ?"

घड़ी में समय देखकर मौसी ने कहा—"केवल नौ बजे होंगे बेटा। अधिक समय तो नहीं।"

"अरे अभी तो नौ ही बजे हैं ? मैं तो सोच रहा था कि शायद रात के दो या तीन बज गये हैं। तुम तो मौसी शाम के बाद ही से मेरी आधी रात प्रारम्भ कर देती हो। इतनी जल्दी तुम मुझे सुलाने का क्यों प्रयत्न कर रही थी मौसी ?" यतीन ने मौसी से प्रश्न किया।

"कल तुमने बातें करने की जो झड़ी लगायी तो रात के दो ही बजा दिये। मैंने सोचा कि कल कि तरह आज भी तुम बातों में न लग जाओ इसी कारण मैं जल्दी ही तुमसे सोने को कह रही थी।"

यतीन ने पूछा—"मौसी मणि सो गयी क्या ?"

"नहीं तो।"

"तो फिर अब तक क्या कर रही है ?" यतीन ने फिर पूछा।

"वह तुम्हारे लिये कुछ न कुछ करती ही रहती है। इस समय वह तुम्हारे पीने के लिये मसूर की दाल का पानी बना रही होगी और तब कहीं वह सोने जायेगी।"

"मौसी मणि से तो यह आशा कभी नहीं थी ? पहले तो वह ऐसी नहीं थी ?"

"समय सब कुछ सिखा देता है। मणि भी तो एक नारी है और नारी पति के लिये क्या नहीं कर सकती ?"

"अच्छा मौसी तो मणि आज कल मेरी परिचर्या का काम कर रही है ?" कुछ चैन की साँस लेकर यतीन ने कहा। मौसी ने उत्तर देना ठीक नहीं समझा।

यतीन ने पुनः कहा —"मौसी ! दोपहर को जो फलों का अर्क तुमने मुझे दिया था उसमें विशेष सौंधापन था और इसी कारण मैंने समझा कि वह तुमने ही बनाया होगा। मणि को तो ऐसा जूस बनाना आता नहीं ?"

मौसी ने गहरी सांस लेकर कहा—"भैय्या ! बहू ने सारा काम इस तरह सम्भाल लिया है कि मैं लाख चाहने पर भी कुछ नहीं कर पाती। समय से पहले ही वह सारे काम तयार रखती है अतः मैं करूं तो क्या करूं। खाने के समय पर जब खाना बनाने की सोचती हूँ तो उससे पहले ही खाना तयार मिलता है। कपड़े धोने का इरादा करती हूँ तो मैला कपड़ा ढूढ़े नही मिलता। वह किसी काम को छोड़ती ही नहीं। न जाने कैसी चुस्ती से काम करती है कि मैं दंग रह जाती हूँ। तुम्हारे कमरे को उसने ऐसा सजाकर रखा है कि तुम देखोगे तो दंग रह जाओगे। वह तो यह कहो कि मैं उसे तुम्हारे कमरे में नहीं आने देती वरना वह यहां की भी हर चीज इसी तरह कर दे। सब कुछ करना से ही तो बेचारी......।"

"क्यों मणि को क्या हुआ मौसी ?"

"कुछ तो नहीं ?"

"फिर तुम कमरे में यहां क्यों नहीं आने देती ?"

"भय्या ! उसका दिल बहुत कच्चा है। तुम्हारी बीमारी के कारण वह परेशान भी बहुत रहती है इस कारण डाक्टरों का कहना है कि जहां तक हो उसे तुम्हारे कमरे में आने न दिया जाये वरना वह भी बीमार हो जायेगी और उसके दिल को सदमा होगा। इसी कारण मैं उसे यहां नहीं आने देती।"

"मगर वह रुक किस तरह पाती है ?"

"देखते नहीं बार २ मुझे अन्दर जाना पड़ता है और मैं उसे तुम्हारी

करके उसके द्वारा इतना वैभव इकट्ठा कर लिया। यह सब तुम्हारी मेहनत का फल है।"

"लेकिन यह मकान......।"

"मकान में अब मेरा रहा ही क्या है? वह मकान जो मैंने तुम्हें सौंपा था वह कहां रहा? उस टूटे फूटे पुराने खण्डहर का कोई भी निशान अब इस मकान में शेष नहीं दीखता। यह तुम्हारा ही है।"

"मौसी! चाहे कुछ भी कहो मणि तुम्हें बहुत मानती है।"

"मानेगी क्यों नहीं? क्या वह मेरी बहू नहीं है? अच्छा बेटा अब सो जाओ।"

"वैसे तो मैंने मौसी सब मणि के नाम लिख दिया है मगर असल में इस सबकी मालिक तो तुम ही हो। मौसी यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मणि कभी तुम्हें दगा नहीं देगी।"

"यह मैं जानती हूँ बेटा। तुम इसकी कुछ चिन्ता मत करो।"

"सो तो मैं जानता हूँ मौसी मगर इस वास्ते ही मैंने तुम्हें यह सब बताना ठीक समझा ताकि मन में तुम कोई ख्याल न कर सको। यह सब तुम्हारे आशीर्वाद ही की तो देन है इस कारण तुम्हारे बिना पूछे मुझे कुछ भी करने का हक ही क्या है? तुम महान हो मौसी।"

"कैसी बातें करते हो बेटा! मैं सम्पत्ति की भूखी कहां हूँ? बड़े पुण्य थे पिछले जन्म के जो मैंने तुम्हें पाया और फिर तुम्हें पाकर मैं सब कुछ भूल ही गई थी। तुम्हारी अपनी चीज है यह सब! तुम जिसे चाहो दे सकते हो। रही मेरी सो अब मैं तुम्हें खोकर कुछ पाना नहीं चाहती। तुम्हारे सुख ही में मेरा सुख है।"

"तुम्हारे लिये भी मैंने मौसी काफी रुपया...।"

बात काटते हुये मौसी ने कहा—"यतीन! तुझे खोकर मैं रुपये का क्या करूंगी?"

"रुपया सबसे बड़ी चीज है। दुनिया तो ऐसा ही समझती है। रुपये से बड़ी अगर और कोई चीज होती वह भी सहर्ष ही मैं तुम्हें—"

"हां बेटा तूने मुझे रुपये से अधिक कीमती चीज दी है वह है तेरी याद। मेरे जन्म जन्मान्तरों का ही पुण्य फल था जो तूने मेरी सूनी गोद भर दी। अपनी बाल क्रीड़ाओं से इस सुनसान घर को भर दिया। मैं तेरी किलकारियां सुनती तो गर्व और आनन्द से मेरी छाती फूल उठती। मेरी किस्मत की ही बदनसीबी है कि मेरी आंखों के सामने ही तू जो कुछ भी अब जाने की तय्यारि में है तू मुझे दे चुका है वह सब मेरे लिये इतना अधिक है कि उसकी याद में कई जन्म काट सकती हूँ। मकान, जादाद, धन, सम्पति, जमीदारी सब कुछ से मुझे अब कोई मोह नहीं। तुझे खोकर इनका अब क्या करूंगी ?"

"यह सोच कर ही तो मौसी कि तुम्हें धन सम्पति से अब तुम्हें कोई लगाव नहीं मगर मणि की उमर तो कम है इसी कारण मैंने उसके नाम यह धन दौलत लिख दी है।"

"चाहे जो तुम उसके नाम लिख दो मगर वह इन सब का उप-भोग कैसे करगी ?"

"क्यों क्या उलझन है ?"

"औरत का शृंगार है पति। पति कैसा भी क्यों न हो औरत उसकी छत्र छाया में सदा प्रसन्न रहती है और पति विहिना होकर वह कुण्ठित हो जाती है और उसका जीवन ही उसके लिये दूभर हो जाता है। इसी लिये तो कहती हूँ बेटा कि मणि को तेरे बिना यह सब कुछ न भायेगा।"

मौसी के इस उत्तर ने यतीन को उलझन में डाल दिया। वह सोचेने लगा कि क्या सच ही उसके मर जाने के बाद मणि का जीवन उसके अपने लिये भार स्वरूप हो जायेगा ? उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि

सदा से उपेक्षा पूर्ण बर्ताव करने वाली मणि क्या सहज ही पति की याद में दुःखी होगी। आकाश के तारों की ओर देख कर उसके हृदय में यही भाव उठे कि जगत छलना है अतः यहां किसी का विश्वास करना स्वयम अपने आपको धोखे में रखना है।

ससांर छलना है यह सोचकर यतीन ने एक गहरी सांस ली और मौसी से कहा – "मौसी! देने लायक चीज तो मौसी हम किसी को दे ही नहीं सकते!"

"सब कुछ तो उसे दिया है बेटा! अपना सब कुछ उसे देते रहे हो और अब जो कुछ शेष है सो दिये जारहे हो। इसकी वह कीमत अगर समझ सके तब तो वह स्वयम् ही यह देखेगी कि जो कुछ भी तुमने उसे दिया है उसे ही वह सहज ही सहेज कर रखने में असमर्थ है। मैं तो यही कामना करती हूँ कि भगवान उसे शक्ति दे कि वह तुम्हारे दिये हुये को सहेज कर रखने में समर्थ हो सके।"

"गला सुख रहा है मौसी! थोड़ा सारम और दो। क्यों मौसी क्या कल मणि मेरे पास आयी थी।"

"तुम सो गये थे जब वह तुम्हारे सिर हाने बैठी २ हवा करती रही। काफी देर बैठी रही और धोबी जब कपड़े लेने आया तब ही तो उठ कर गयी थी।"

"मौसी। उसी समय शायद मैं यह स्वपन भी देख रहा था कि मणि मेरे पास कमरे में आने के लिये दरवाजा खोलना चाहती है पर वह दरवाजा नहीं खोल पा रही है। लाख चेष्टायें करने पर भी वह अन्दर न आ सकी। मौसी मैं यह चाहता हूँ कि तुम अब उसे मेरे पास आने दो ताकि वह मेरे पास रह कर मेरी मौत देख सके क्योंकि अगर मैं उसकी गैर हाजिरी में ही मर गया तो उसे गहरा धक्का लगेगा और हो सकता है कि वह उस धक्के को भी बर्दाश्त न कर सके।"

मौसी ने दुशाला हाथ में लेकर कहा—"बेटा तुम्हारे पैर ठंडे हो चले हैं ! कहो तो दुशाला डाल दूं ?"

"मौसी ! ओढ़ने को जी नहीं करता।"

"तुम शायद यह नहीं जानते कि यह दुशाला रातों रात जागकर बहू ने तुम्हारे लिये काढ़ा है। कैसा अच्छा कसीदा किया है देखो न !"

यतीन ने दुशाला हाथ में ले लिया और अच्छी तरह से उलट पुलट कर देखा। कसीदा को देख कर यतीन के हृदय में मणि के प्रति सहानुभूति पैदा हुई और मौसी द्वारा यह जानकर कि इसे काढ़ने के लिये मणि ने रातें जागकर काटी हैं। यतीन अपने मन में एक अनोखी गुदगुदी सी महसूस करने लगा। मणि के प्रति उमड़ती हुयी प्रेम भावनाओं में वह खो गया और सोचने लगा। इसी समय मौसी ने वह दुशाला यतीन के पैरों पर डाल दिया।

मौसी ! मैं तो सोचता था कि मणि कसीदा कारी जानती ही न थी और यह सब करना उसे अच्छा भी नहीं लगता था।'

"जब किसी काम की लगन होती है तो सीखते देर भी नहीं लगती और काम करते रहने से काम समाप्त भी जल्दी हो जाता है। यह उसकी पहली ही चेष्टा है इस कारण कई गलतियाँ भी होगयी हैं।"

घर गृहस्थो में जिस वस्तु का उपयोग होता है उसकी गलतियाँ नहीं देखी जाती। इसे कौन इसे नुमायश में भेजना है जो बैठकर कसीदाकारी के दोषों की जांच पड़ताल करें।"

कसीदा करने में मणि ने बहुत सी गलतियां करदी हैं यह जानकर यतीन को चैन मिला। उसने सोचा कि मणि ने उसके लिये कितना धीरज और साहस किया है यह सही है कि जब किसी की काम में गलतियाँ स्पष्ट दीख रही हों तो करने वाले का उसमें जी नहीं लगता। अतः एकाग्र चित्त होकर मणी ने किस खूबी से धैर्य धारण करके लगन के साथ दुशाला

काढ़ा है ? यतीन सोचता रहा और मन ही मन मणि की प्रशंसा करता रहा। अनेकों बार उसने शाल को उलट पुलट कर भी देखा ताकि वह मणि के प्रेमोपहार को अनेकों बार स्पर्श करके उसका उचित सत्कार कर सके।

"डाक्टर क्या अभी हैं ?"

"आज रात वह यहीं रहेंगे बेटा।"

"मौसी ! मैं नींद आने की दवा लेना नहीं चाहता। नींद तो आती नहीं तकलीफ और बढ़ जाती है। मैं तो जागते ही रहना चाहता हूँ। तुम्हें याद होगा मौसी कि वैशाख को शुक्ल-द्वादशी को ही तो हमारी शादी हुयी थी। कल ही तो द्वादशी है न जाने मणि को अपनी शादी का यह दिन याद है या नहीं। मैं चाहता हूँ कि उसे मैं यह याद दिलादूं इसलिये अगर तुम उसे मेरे पास केवल दो मिनट को ही भेज दो तो तुम्हारा बहुत अहसान होगा। मौसी ! मेरी अच्छी मौसी क्या तुम उसे भेज न सकोगी ? डरो मत मैं उसके आने से हरगिज भी उत्तेजित नहीं होऊँगा। डाक्टरों ने शायद उसको मेरे पास आने के लिये मना कर दिया है। मगर असल बात तो यह है कि अगर वह मेरे पास आकर कुछ देर बातें कर लेगी तो मेरा मन बिलकुल हलका हो जायेगा और मैं चैन से सो भी सकूंगा। मेरा मन उससे बोलने को कई दिनों से विकल है और शायद इसी कारण पिछले तीन चार दिन से मैं सो भी नहीं सका हूँ।"

मौसी खड़ी २ रोती रही। उसने कुछ उत्तर नहीं दिया।

तब यतीन ने फिर कहा—"मौसी ! रोओ मत। आज मेरा हृदय आनन्द से भर उठा है और इसी कारण मैं यह चाहता हूँ कि मणि भी आ जाये तो मैं उसे अपना हृदय सौंप सकूं। बहुत दिनों से मैं उससे बातें करना चाहता हूँ किन्तु न कर सका। मगर आज करके ही रहूँगा ताकि मन का मैल धुल जाये और हो सकता है कि मौसी इससे सुन्दर

अवसर फिर आ न सके ! तुम चुप क्यों हो ? तुम उसे जाकर बुलाती क्यों नहीं ? तुम इतनी व्यथित क्यों हो ? तुम्हारी वेदना मुझसे नहीं सही जाती ? आज तुम इतनी व्यथित क्यों हो हमेशा तो तुम शान्त रहतीं थीं ? आज क्या बात है ?"

"तुम्हें पाकर मैंने सोचा था कि मेरी जिन्दगी का रोना धोना समाप्त हो गया मगर अब देखती हूँ कि यह सोचना भ्रम था। जीवन में रोना अभी शेष है।"

"मौसी ! जरा मणि को तो बुला दो ताकि मैं उससे कह सकूं कि कल रात वह......"

"अभी बुलाती हूँ बेटा ! नौकर दरवाजे पर ही है अगर जरूरत हो तो पुकार लेना।"

दिलपर अनन्त भार लिये मौसी यतीन के कमरे से निकली और मणि के कमरे में जाकर पृथ्वी पर पछाड़ खाने लगी और टूटे हुये दिल से बिलख २ कर कहने लगी "अभागिन ! अब तो आजाती। पिशाचनी एक बार तो आकर उससे बातें करके उसके मन को धीरज दे जाती। अरी ओ चुड़ैल जिसने अपने जीवन का सार तुझे दे डाला, सर्वस्व दे डाला वह तुझसे केवल दो बातें करने के लिये बैठा है। जो मौत के द्वार पर खड़ा है उससे आकर दो बातें करके उसे चैन से तो मर जाने दे ?"

अनेकों अनर्गल बातें मौसी बकती रही। मगर वहां मणि थी कहां ! जो उसकी बातों का उत्तर देती।

—*— —*— —*—

पदचाप सुनकर यतीन चौंका और उसने पुकारा—"मणि"

"नहीं साहब ! मैं हूँ शम्भू। आपने मुझे बुलाया था ?"

"जा अपनी बहूजी को तो बुला ला ?"

साला बुरी तरह भड़ हुआ

"किसको साहब ?"

"अपनी बहूजी को"

"वह तो अभी लौटकर नहीं आयीं हैं !"

"कहां गयीं हैं ? शम्भू"

"सीतारामपुर गयी थी मालिक"

"क्या आज ही गयीं हैं ?"

"जी नहीं ! उन्हें तो वहां गये आज तीन दिन हो गये।"

यतीन धक् रह गया। उसकी आंखों के आगे अंधेरा छागया। वह तकिये के सहारे बैठा २ लुढक गया और बिस्तर पर आ गिरा और उसने पैरों पर जो दुशाला पड़ा था सो उसने हटाकर उसे नीचे डाल दिया। देर बाद जब यतीन ने मौसी को आते देखा तो वह शान्त ही रहा और जान बूझकर ही उसने मणि का जिक्र न छेड़ा तब मौसी ने सोचा कि वह शायद मणि वाली बात भूल गया है।

मौसी ने चैन की सांस ली।

यतीन ने देर बाद मौसी से कहा—"मौसी ! याद नहीं पड़ता कि मैंने तुम्हें उस दिन वाला सपना सुनाया है या नहीं ?"

"कौन सा सपना बेटा ?"

"वही मौसी ! मैंने देखा था कि मणि कमरे के बाहर खड़ी दरवाजा खोलने की कोशिश कर रही है मगर लाख चेष्टा करने पर भी वह अन्दर न आ सकी। वह हमेशा की भांति मुझसे दूर ही रही और मैंने उसे लाख बुलाया मगर वह आ न सकी। उसके लिये जगह ही न थी या वह आना ही नही चाहती थी।"

मौसी जवाब दे तो क्या दे !

वह सोचने लगी कि इतने दिनों से यतीन के लिये उसने जिस झूठे

स्वर्ग की रचना की थी सो वह टिक न सका उसने लाख चेष्टा की कि यतीन को पीड़ा न पहुंचे सो ही अच्छा है मगर किस्मत को यह मंजूर न था और वह छल एकदम स्पष्ट हो गया।

यतीन के हृदय में मौसी के प्रति स्नेह छलछला आया और वह जब उसे रोक न सका तब उसने मौसी से कहा—"तुमसे जितना स्नेह और वात्सल्य पाया है मौसी उसे मैं कई जन्म तक न भुला सकूंगा। मैं यही चाहता हूँ कि अगले जन्म में मैं तुम्हारे घर में सुन्दर कन्या के रूप में जन्म लो ताकि मैं स्नेह से तुम्हें पाल सकूं और सुख उठा सकूं।"

"भगवान के लिये यतीन यह प्रार्थना मतकर। मैं अब लड़की हो कर जन्म लेना नहीं चाहती हां तू यह वरदान मांग कि मैं लड़का होकर तेरे घर में जन्म लूं।"

"नहीं मौसी? मैं तुम्हें पुत्री रूप में ही पाना चाहता हूँ ताकि मैं तुम जैसी सुन्दर पुत्री को पाकर अपने को धन्य समझ सकूं। तुम्हें किस प्रकार पाला पोसा जाना चाहिये ? सो मैं अच्छी तरह जानता हूँ।"

"बेटा थोड़ी देर सोलो तो ठीक है"

यतीन अपनी ही धुन में मस्त रहा। उसने मौसी की बात सुनी अन-सुनी कर दी। बोला—"तुम्हारा नाम तो मैं रखूंगा लक्ष्मीरानी"

"यह पुराने जमाने का नाम है। आधुनिक नाम से तो मेल नहीं खाता?"

"मुझे तो पुराना जमाना ही भाता है। मौसी तुम तो पुराने जमाने की सम्पत्ति और संस्कार लेकर ही मेरे घर जन्म लेना। आधुनिक शब्द ही से मुझे चिढ़ है।"

"तेरे घर कन्या रूप में मैं जन्म लूं ऐसी इच्छा तो मैं कभी नहीं कर सकती।"

"क्यों ? क्या तुम मुझे दुर्बल समझती हो। मुझे दुःख से बचाना चाहती हो।"

"मैं तो औरत हूँ और इसी कारण मेरा मन दुर्बल है और हमेशा मैंने तुझे दुःखों से बचाने की ही कोशिश की है और अब भी वही करूँगी।"

"तुम्हारी शिक्षा का मौसी मैं इस जीवन में तो कोई लाभ न ले सका मगर विश्वास के साथ मैं तुम से कहता हूँ कि अगले जीवन में अवश्य मैं तुम्हारी शिक्षा पर अमल करूँगा। इस जन्म में तुम्हारी शिक्षा का उपभोग कर सकने का अवसर ही न मिल सका मगर विश्वास के साथ कहता हूँ कि अगले जीवन में मैं अवसर हाथ से हरगिज न जाने दूँगा। मैं इस बात को सिद्ध कर दूँगा कि आदमी क्या नहीं कर सकता। आज मैं समझ सका हूँ कि सदैव अपने में खोया रहना कितना बड़ा धोखा है। मगर समय हाथ से निकल चुका है अतः मैं इस तथ्य का कोई लाभ नहीं उठा सकता।"

"तुमने क्या किया और क्या नहीं किया। सो तुम भली प्रकार जानते हो मैं तो इतना ही जानती हूँ कि तुमने त्याग किया और तुम्हारा त्याग उत्तम रहा। तुमने कभी कुछ पाने की इच्छा नहीं की और जो कुछ हो सका दूसरों को बांटा ही।"

"तुम्हारा कहना ठीक ही है मौसी। मगर मुझे जिस बात पर गर्व है सो यह है कि मैंने कभी किसी के साथ अपने दबाव से कोई काम नहीं लिया। मैंने अपना हक भी जबर्दस्ती से नहीं लिया। अगर मेरी अपनी चीज भी मुझे नहीं मिली तो मैंने उसके लिये भी छीना झपटी करना उपयुक्त नहीं समझा। मैं शान्त होकर देखता रहा और सदा यही अवसर देखता रहा कि मेरी इच्छित वस्तु मेरे हाथों बिना जोर आजमाये ही आजाये। यही कारण है कि मौसी मैं अपनी ही पत्नि द्वारा ठगा गया। मगर ऐसा मैं नहीं करता तो शायद मणि मेरा इतना तिरस्कार हरगिज न कर पाती। मौसी ज्ञात होता है कि द्वार पर कोई अवश्य है।"

"वहां तो कोई नहीं बेटा" मौसी ने द्वार की ओर देखकर कहा।

"मौसी! तुम उस कमरे में जाकरएक बार देख आओ। मुझे लगता है कि वहाँ......।"

"नहीं बेटा वहां कुछ तो नहीं?"

"नहीं मौसी मैं साफ देख रहा हूँ—"

"कुछ नहीं है यतीन। देख डाक्टर साहब आ रहे हैं।"

डाक्टर ने यतीन की नाड़ी की परीक्षा करके मौसी से कहा—"आपको यहाँ इनके पास रहने से यह बहुत बातें करते हैं और सोते तक नहीं। मैं यह चाहता हूँ कि अब आप इनके पास न रहें ताकि इनका दिमाग आराम पाकर शान्त हो और इन्हें नींद आ सके। मेरा यह आदमी इनकी देख रेख करेगा और आप जा सकती हैं।"

यतीन ने तड़पकर कहा—"नहीं मौसी तुम मत जाना।"

"नहीं बेटा मैं नहीं जाऊँगी और सामने वाले कोने में जाकर बैठी रहूँगी। क्यों ठीक है न?"

"नहीं मौसी तुम कहीं मत जाओ और मैं तुम्हें कहीं जाने ही न दूंगा। मैं चाहता हूँ कि जिन हाथों ने मुझे पाला है और जीवन दिया है उन्हीं हाथों में मेरे प्राण निकलें। मैं तुम्हारा ही हूँ मौसी और अन्त तक तुम्हारा ही रहना चाहता हूँ।"

डाक्टर ने कहा—"यतीन बाबू। ठीक है आप मौसी को पास ही बिठा रखें मगर बातें ज्यादा न करें। अब दवा पीलें क्योंकि दवा पीने का समय हो चुका है।"

यतीन ने विकृत भाव से कहा—"डाक्टर दवा का समय तो पार हो गया है और आप कहते हैं कि पीने का समय हो गया है। आपके यह शब्द केवल झूठी तसल्ली दिलाते हैं और अब मैं इस धोखे में आने

वाला नहीं। मौत से मुझे अब कोई डर नहीं इस वजह से दवा मेरे लिये अब उपयोगी सिद्ध नहीं होगी। दवा का लाभ ही क्या हो सकता है? यमराज का इलाज जो चल रहा है उसके सामने आपका यह डाक्टरी इलाज कभी कारगर नहीं हो सकता। मौसी तुम इन डाक्टरों को विदा करदो मुझे अब इन लोगों की कोई आवश्यकता नहीं मुझे केवल तुम्हारी आवश्यकता है और तुम मेरे पास हो। विदा करदो इन सब को। विदा करदो।"

"आपको इस प्रकार उत्तेजित नहीं होना चाहिये यतीन बाबू" डाक्टर ने कहा।

"तुम लोग जाओ मुझे तुम्हारी कोई आवश्यकता नहीं" यतीन क्रुद्ध हो उठा।

डाक्टर एक ओर हट गये।

यतीन ने आखें बन्द करलीं और मौसी से बोला—"मौसी! मेरे बिस्तरे पर आकर बैठ जाओ और अपनी गोदी में मेरे सिर को रखलो ताकि मुझे आराम मिल सके।"

मौसी ने यतीन का सिर अपनी गोदी में रख लिया और सहलाने लगी।

"अब तो सो जाओ मेरे राजा बेटा"

"नहीं मौसी! अब सोने का समय शेष नहीं है। अब तो चिर निन्द्रा का समय समीप आता जारहा है। मुझे ससांर में थोड़ा ही जागना और है और वह समय मैं सोकर नहीं गंवा सकता। क्यों मौसी तुम आवाज नहीं सुनती कि कोई आ रहा है। मैं पदचाप स्पष्ट सुन रहा हूँ। देखना आने वाला अभी आया जाता है।

मौसी शान्त रही।

यतीन अनर्गल वार्तालाप करता रहा।

५

मणि अपने पिता के साथ कमरे में प्रविष्ट हुयी।

यतीन बकते २ अभी चुप हुआ था।

मौसी ने उसे चेत कराते हुये कहा - "यतीन! आंखें खोलो और देखो मणि आगयी।"

"कौन आया? सब सपना है?"

"नहीं बेटा मणि आयी है और तुम्हारे ससुर भी आये हैं"

"कौन हो तुम!"

"पहचाना नहीं! यही तो है तुम्हारा मणि"

"मणि! क्या वह दरवाजा पूरा खुलगया और तुम मेरे पास तक आ पहुंचीं?"

कोई कुछ नहीं बोला।

यतीन फिर बड़बड़ाया—"मौसी! मेरे पैरों पर अब यह दुशाला मत डालो। हटालो इसे। यह धोखा है।"

"दुशाला नहीं है बेटा। यह तो बहू तुम्हारे पैरों पर पड़ी है। उसे धीरज बधाओ। उसे अपना आशीर्वाद तो दो बेटा।"

मौसी ने तब मणि से कहा—"इस प्रकार विह्वल होकर रोने का समय यह नहीं है बेटी! अभी तो थोड़ी देर चुप रहो। तुम्हें रोने का समय आना ही चाहता है।"

दीपक लौ टिमटिमा कर शान्त हो गई।

रात्रि स्तब्ध रही।

—×—×—